गुरुजी

गुड़गाँव वाले

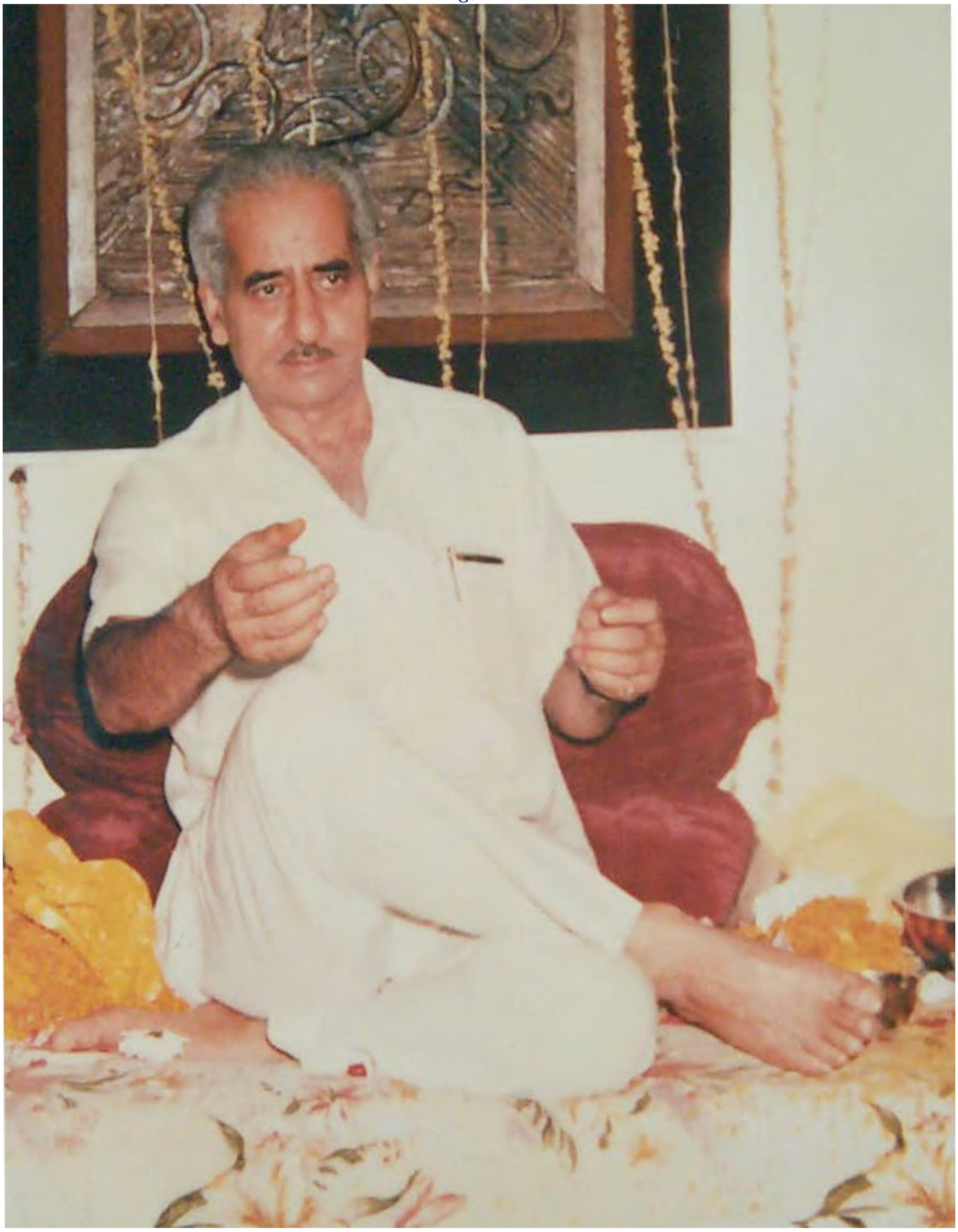

अविश्वसनीय झलकियाँ

भाग-2

गुरुजी---

भगवान..., एक मनुष्य के रुप में।

इतने साहसी, इतने मन मोहक,
इतने दयालु, इतना प्यार करने वाले,
इतना ध्यान रखने वाले,
इतने क्षमावान, इतने सहनशील,
इतने सन्तुष्ट,
जिन्हें न तो भूख़ लगती है
और न ही प्यास,
हमेशा एक जैसे, हमेशा भयमुक्त,
चेहरे पर अनगिनत तरह की
मुस्कानें लिये हुए,
आँखों से बातें करने वाले, तथा
एक सम्पूर्ण चरित्र निर्माता......

वे हैं गुरुजी...

हमेशा मेरे...

और तुम्हारे भी ।।

मेरे विचार से, असंख्य लोगों में एक
व्यक्ति हूँ मैं, जिसे मेरे आराध्य देव ने
स्वयं चुना है और अपने साथ रखा है,
हमेशा के लिए....

*****

अविश्वस्नीय झलकियाँ

*****

'राज्जे' -गुरुशिष्य

(राजपॉल सेख़री)

श्री राजपॉल सेख़री के पास
कॉपीराईट © 2010 सुरक्षित

इस पुस्तक के मुद्रण का, लेख़क के पास पूर्ण नैतिक अधिकार है। इस पुस्तक या इसके किसी भाग को, किसी हालात में प्रकाशक की लिख़ित अनुमति के बिना छापना, वर्जित है।

इस पुस्तक में लिखी घटनाओं का, सुन्दर रीति से वर्णन करने के लिये, किसी बनावटी या झूठे चरित्र का निर्माण नहीं किया गया है। इसमें उल्लिखित नाम व घटनाऐं, सिर्फ लेख़क के नज़रिये से लिखी गयी है।

प्रथम संस्करण 2010
भाग-2

प्रकाशक
श्री राजपॉल सेख़री,
19/77, पंजाबी बाग (पश्चिम)
नई दिल्ली-110026,
भारत
mahaguru9@hotmail.com
www.gurujiofgurgaon.com

हिन्दी रूपान्तरण :
----**गुलशन अरोड़ा**

मेरे गुरुजी

हिन्दी

रूपान्तरण

भाग-2

:: अनुक्रमणिका ::

52.	जब कार में बिना पैट्रोल के, वे लोग, दिल्ली वापिस पहुँच गये।	12-13
53.	जब बेलीराम तक्खी की बेटी की 16 तारीख़ को शादी हो गई।	14-15
54.	जब एक महिला, जो जोड़ो के दर्द से परेशान थी, उसे उसके चार बेटे अपने कंधों पर उठाकर, गुरूजी के पास लाये।	16-16
55.	जब गुरूजी ने बिगड़े हुए इंजन वाली, जोंगा जीप चलाई।	17-18
56.	गुरूजी, मेरी पत्नी गुलशन के लिये वास्तव में त्रिकालदर्शी भगवान थे।	19-20
57.	जब अमेरिका की एक सिंक फैक्ट्री वालों ने, मुझे अपनी फैक्ट्री देखने की, इजाज़त नहीं दी।	21-24
58.	जब गुरूजी अपने शिष्यों के साथ, हरिद्वार गये और चन्द चपातियों से वहाँ उपस्थित सभी लोगों को,रात्रि का भोजन कराया।	25-25
59.	जब कैशियर ने, गुरूजी के टूअर बिल का भुगतान करने से मना कर दिया।	26-27
60.	जब गुरूजी ने पंडित रामकुमार की भाँजी, कृष्णा को ठीक किया।	28-29
61.	जब गुरूजी के दर्शन करने की जिद्द, श्रीमति गायत्री श्रीवास्तव ने की।	30-30
62.	जब समुद्र ने, गुरूजी के चरण छू कर, उनको प्रणाम किया।	31-31
63.	जब गुरूजी ने अपने स्कूटर का इंजन, फुटपाथ पर खोला।	32-32
64.	जब मैंने और गुरूजी ने एक साथ, अमेरिका जाने का प्रोग्राम बनाया।	33-36
65.	जब गुरूजी एक ही समय में, चार जगह उपस्थित थे।	37-40
66.	जब दूबे जी की बिल्डिंग, गुरूजी के आशीर्वाद से खाली हो गई।	41-42
67.	जब गुरूजी, अपने शरीर से निकल कर, दुबारा उसी में वापिस लौट आये।	43-46

68. जब चन्दरभान की पत्नी को, **47-47**
अगले दिन पुत्र प्राप्ति हुई।

69. जब मैंने गुरूजी का चेहरा, दुगने आकार में देखा। **48-49**

70. जब गुरूजी ने, मेरी सिंगापुर की व्यवसायिक **50-51**
विदेश-यात्रा, (Tour) रद्द कर दी।

71. जब गुरूजी ने महाराज-किशन को, उनके **52-53**
स्नान करने तक रुकने के लिए कहा।

72. जब मैंने गुरूजी की हथेली में, एक **54-55**
दीप्तिमान ठोस **'चक्र',** पहली बार देखा।

73. जब गुरूजी ने मेरे माथे पर, स्ट्रोक्स (Strokes) लगाये। **56-56**

74. जब मेरी फैक्ट्री का जनरल मैनेजर, **57-58**
बड़े वीरवार को, गुरूजी के पास गया।

75. जब मानसिक रोगी राज अरोड़ा, **59-60**
जो प्रेत-ग्रसित था, हिंसात्मक हो गया।

76. जब गुरूजी ने कहा ''बेटा, मैं तुम्हें कभी भी, **61-61**
कहीं भी, जब चाहूँ देख सकता हूँ।''

77. गुरूजी ने अपने शिष्य को, परॉंठा खिला दिया। **62-65**

78. जब एक 18 वर्षीय लड़का, पागल हो गया और **66-67**
उसकी आँखें, ऊपर की तरफ हो गयी।

79. संसार का राज्य मिलने के बजाय, गुरूजी **68-68**
का दास बन कर रहना ज़्यादा अच्छा है।

80. गुरूजी अधिक्तर लम्बी सेवा के बीच, हम **69-69**
शिष्यों को मध्यान्तर (Interval) देते थे।

81. गुरूजी की अर्धांगिनी, माता जी अन्नपूर्णा हैं।

82. जब एक जर्मन फोटोग्राफर, गुरूजी की फोटो
ख़ींचना चाहता था, परन्तु गुरूजी ....!!

83. जब गुरूजी के पास, एक प्रेत-ग्रसित
जवान लड़का आया।

84. जब गुरूजी ने अली असग़र को, मिरगी के
रोग से, मुक्त किया।

85. जब गुरूजी ने एक महिला का गला हुआ
ख़राब चेहरा, कुछ ही दिनों में,ठीक कर दिया।

86. जब गुरूजी ने, 1984 के दंगों से एक रात पहले,
बड़े वीरवार की सेवा स्थगित कर दीं।

87. जब फोटो के भरे बैग में से, गुरूजी ने,
उसकी बेटी की फोटो निकाली।

88. जब मैंने अपने आप को, भूख़ से
व्याकुल महसूस किया।

89. जब संतलाल जी ने, गुरूजी से गुड़गाँव वाले
फार्म में, आलू की पैदावार के बारे में बात की।

90. जब गुरूजी श्रीनगर, कश्मीर गये।

91. जब गुरूजी ने, सुरेन्द्र तनेजा को, अपने पुत्र
का मुंडन कराने की इजाज़त नहीं दीं।

92. गुरूजी की टाँग में बाल-तोड़ था,
मुझे इसका ज्ञान नहीं था तथा संयोगवश,
मैं वही टाँग दबा रहा था।

93. जब गुरूजी ने करवॉचौथ के दिन,
माताजी के लिए मिठ्ठाईयाँ ख़रीदीं।

94. भघों के माँगने पर गुरूजी ने, अपने पर्स से
पैसे निकाल कर उन्हें दिये।

95. जब गुरूजी का, एक हाथ पेट और दूसरा
कमर पर रखते ही, पेट दर्द गायब हो गया।

96. जब गुरूजी ने मुझे सिंक की डाई बनाने का,
डिज़ाईन दिया।

97. जब गुरूजी ने गुड़गाँव स्थान के लिए,
प्लॉट नम्बर 702, अलॉट कराया।

98. जब गुरूजी के पास एक व्यक्ति आया,
डॉक्टरों के अनुसार जिसकी जिन्दगी,
सिर्फ 15 दिन शेष बची थी।

99. जब गुरूजी, अपने परम शिष्य के साथ,
स्कूटर चला कर अलीगढ़ गये।

100. जब आधी रात को, गुरूजी ने मेरा पेट
स्पर्श किया और पेट दर्द तुरन्त गायब हो गया।

101. गुरूजी समय के अधीन नहीं,
अपितु समय उनके अधीन है।

102. गुरूजी के पास, लोग विभिन्न कारणों से
और विभिन्न इच्छाऐं लेकर आते थे।

लेखक की कलम से --------

अविश्वस्नीय झलकियाँ - भाग-1, आकांक्षी गुरुभघों के लिए, आध्यात्म और गुरुभक्ति का एक सम्पूर्ण भोजन है। गुरुजी की असीम कृपा और समय-समय पर महत्वपूर्ण मार्गदर्शन से, गुरु ज्ञान के इच्छुक भक्तों के लिए, यह पुस्तक लिखी तथा वितरित की गई।

लेकिन यह काफी नहीं थी शायद...। पुस्तक भाग-1 लिखने के बाद, मुझे ऐसी कई अन्य झलकियाँ स्मरण हो आईं, जिन्हें और आगे लिखने का आदेश मिला। अतः उन्हें मैं एक अगली पुस्तक भाग-2 के नाम से, प्रस्तुत कर रहा हूँ। मेरी यह नम्र प्रस्तुति, आपके समक्ष है।

मैं चाहता हूँ कि पाठकों और भक्तों पर
गुरुजी अपनी कृपा बनाये रखें।

इस समय मैं यह नहीं कह सकता, कि इन झलकियों की श्रंखला यहीं समाप्त हो जायेगी या फिर कुछ और अविश्वस्नीय झलकियाँ मुझे दुबारा प्रलोभन देंगी और मैं अपने गुरुजी के साथ बिताये गये, उन अनमोल पलों का अनुभव आपके साथ, आगे भी बाँट सकूं। मैं नहीं जानता कि भाग-2 के उपरान्त क्या होगा? क्योंकि यहाँ मुझे एक बड़े विश्व-विख्यात फ़कीर द्वारा कही गई निम्न पंक्तियाँ याद आ रहीं हैं --

धरती को कागज़ करुं, कलम करुं बनराय ।
सात समुद की मसि करुं, गुरु गुण लिखा न जाय ।।

अर्थातः यदि मैं पूरी धरती को कागज़ बना लूं, और सभी पेड़ों को कलम तथा सातों समुद्रों की स्याही (Ink) बना लूं, तो भी, गुरु के सम्पूर्ण गुणों का गुणगान, लिखना सम्भव नहीं है।

करीब 30 वर्षों से ज़्यादा, गुरुजी के पवित्र चरणों में रहते हुए, जो आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त हुआ, जिसे मैं स्वप्न में भी नहीं सोच सकता था, उसके बाद मुझे ऐसा लगता है कि यह मेरा धर्म है कि आने वाले नये लोगों को, मैं गुरुजी के उस सांसारिक तथा आध्यात्मिक ज्ञान से लाभांवित कराऊँ।

आदि से अन्त तक मेरी यात्रा, एक बच्चे की भाँति, उनकी गोद में चल रही है। आज जब वो मुझसे झलकियाँ लिखवाते हैं, तो मेरा हाथ पकड़कर, मेरी उंगलियों को कम्पूयटर के की-पैड के, एक-एक अक्षर पर चलाते हैं।

हाँ, मैं उन्हें अपने अन्दर महसूस करता हूँ--
वो मेरे हैं, हमेशा-हमेशा......।।

कोई भी झलकी, जो एक चमत्कार सी लगती है, वास्तव में चमत्कार है नहीं...। क्योंकि चमत्कार वो होता है जिसे कुछ लोग, अन्य लोगों की आँखों को भाने के लिए करते हैं। परन्तु उससे किसी को बीमारियों अथवा दुःखों से मुक्ति नहीं मिलती। जबकि गुरूजी जो भी करते हैं, उससे लोगों के दुःख व रोग मिट जाते हैं और वो भी बिना किसी दवाई के। साथ ही लोगों में ईश्वर के प्रति, विश्वास उत्पन्न होता है। वही विश्वास, लोग जिसे भूलकर, डॉक्टर व दवाईयों में व्यक्त कर चुके थे।

उन्होंने अनगिनत चमत्कार किये और उनमें से जो-जो उन्होंने चाहा, मैंने भाग-1 में लिख दिया। कुछ और जो अब याद आ रहे हैं, उन्हें भी लिख रहा हूँ, अपनी अगली पुस्तक भाग-2 में और शायद भविष्य में भी लिखता रहूँगा, अगर उन्होंने चाहा और मुझे, लिखने की सामर्थ्य दी।

राज्जे, राजपॉल सेख़री
18 *अगस्त,* **2010**

भाग-2 का आनन्द लीजिए.......

इससे पूर्व भाग-1 में, 1 से 51 तक झलकियाँ लिखी तथा प्रकाशित की जा चुकी है उसी श्रंखला को आगे बढ़ाते हुए अब आगे प्रस्तुत हैं झलकियाँ, संख्या 52 से 102 तक---

52. जब कार में, बिना पैट्रोल के, वे लोग दिल्ली वापिस पहुँच गये।

कुछ लोग, जिनमें श्री आर. पी. शर्मा तथा श्री मारवाह भी थे। वे कार से गुरुजी के दर्शन करने के लिए, शिमला आये थे। आशीर्वाद देने के बाद, गुरुजी ने उन्हें दिल्ली वापिस जाने का आदेश दिया। उन्होंने वहाँ एक रात रुकने के लिए प्रार्थना की, लेकिन गुरुजी नहीं मानें। कार का मालिक 'मारवाह', गुरुजी से बोला, ''गुरुजी, गाड़ी में पैट्रोल बहुत कम है, यह कार मुश्किल से आधे रास्ते तक ही पहुँचेगी।'' (*उन दिनों रात्रि में पैट्रोल पम्प बन्द रहते थे और उन्हें आधे रास्ते में ही रुकना पड़ेगा।*) *इसलिए उन्होंने गुरुजी से रात रुकने की पुनः प्रार्थना की।*

तभी एक आश्चर्यपूर्ण घटना घटी।

गुरुजी ने कार की चाबी उठाई और कार स्टार्ट करके बाहर आ गये और पैट्रोल टैंक की तरफ गये। उन्होंने पैट्रोल टैंक का ढक्कन खोला और उसमें कुछ डाल दिया और कहा :

''अब तुम लोग इस कार में बैठो और इसे चलाते जाओ। इसे तब तक नहीं रोकना, जब तक तुम दिल्ली अपने निवास स्थान तक न पहुँच जाओ।''

उन्होंने आगे आदेश दिया :

''तुम रास्ते में भी इसे मत रोकना और जब तक दिल्ली न पहुँच जाओ, यह देखने की कोशिश भी मत करना, कि इसमें पैट्रोल है या नहीं।''

ये क्या हुआ.....?

वे पूरी रात की पूर्णतयाः सुरक्षित यात्रा करके, दिल्ली के पटेल नगर पहुँच गये।

फिर क्या था... यह ख़बर, जंगल की आग की तरह, सभी शिष्यों व सेवादारों के बीच फैल गई। बहुत से लोग, इस घटना को, विस्तार से जानने के लिये, श्री आर. पी. शर्मा जी के पास आये।

गुरुजी के, वे शिष्य भगवान तुल्य थे और सभी उनको सम्मान की दृष्टि से देखते थे और उनकी बात पर विश्वास करते थे। शर्मा जी अपने साथ हुई, इस पूरी घटना के सम्बन्ध में, हमें विस्तार से बता रहे थे, लेकिन यह स्पष्ट नहीं कर सके, कि उनकी कार बिना पैट्रोल के दिल्ली तक पहुँची ***कैसे...!!*** *वह स्वयं् भी असमंजस में थे। उन्होंने हमें भी यही सलाह दी, कि यह तो आपको, सीधे गुरुजी से ही पूछना पड़ेगा।*

मैंने साहस बटौरा और उस उचित अवसर का इन्तज़ार करने लगा, कि जब मैं सीधे गुरूजी से, इस तथ्य के बारे में जान सकूं।

सौभाग्यवश, वह अवसर भी आ गया और मैंने गुरूजी से पूछ ही लिया, ''गुरूजी, उस दिन क्या हुआ था और आपने पैट्रोल टैंक में क्या डाला था, कि एक अविश्वस्नीय चमत्कार हो गया? गाड़ी बिना पैट्रोल के दिल्ली पहुँची ***कैसे....****?''*

मैंने, जो कुछ गुरूजी से पूछा था, वह मेरे लिये एक बहुत बड़ा सवाल था, लेकिन गुरूजी ने उसे इतनी सहजता से लिया, जैसे मैं आलू, भिण्डी का भाव पूछ रहा था। उन्होंने मुझे उस चीज़ का नाम और उसकी शक्ति के बारे में बताया, जिसने इंजन को पूर्ण रुप से अपने नियंत्रण में कर लिया और निश्चित स्थान तक पहुँचने के लिए बाध्य कर दिया।

हे भगवान...........!!

मैं गुरूजी के दिव्य प्रकाश से चमकते हुए चेहरे की तरफ़, देखता ही रह गया...।।

इतनी बड़ी बात, गुरूजी के लिये इतनी सरल थी...!! जिसका अभी तक विश्वास नहीं होता।

गुरूजी आपको दंडवत प्रणाम है।

गुरूजी, मैं, और मेरे अलावा जो लोग भी मुझसे जुड़े हुए हैं, उन सबके लिये भी, आपसे कृपा माँगता हूँ।

53. जब बेलीराम तक्खी की बेटी की शादी, 16 तारीख़ को हो गई।

बेलीराम तक्खी, गुरूजी के एक शिष्य थे। वे अपनी बड़ी लड़की की शादी के लिए बहुत परेशान थे तथा अब उन्होंने अपना धैर्य भी, खो दिया था।

उनकी लड़की अपने चाचा, सीताराम जी के पास आयी और उनसे बोली, ''उसके बाऊजी रोज़ाना उसे बुरा-भला कहते हैं और उसकी शादी में देरी होने के लिए, उसे ही दोषी मानते हैं। उसके सुन्दर न होने का दोष भी, उसे ही देते हैं और कहते हैं कि उससे, कोई भी शादी नहीं करेगा।''

बेलीराम का व्यवहार बहुत रुखा हो गया था। अतः लड़की ने, अपने पिता के घर जाने के बजाय सीताराम जी के घर में ही, रहना उचित समझा।''

सीताराम जी, जो गुरूजी के मुख्य शिष्यों में से एक थे, गुरूजी के पास गये और बेलीराम के इस व्यवहार की शिकायत की। गुरूजी, सीताराम जी को साथ लेकर, बेलीराम के घर चले गये। बेलीराम बहुत परेशान थे और गुरूजी से बार-बार यही कहने लगे, कि उम्र बढ़ने के कारण, कोई उससे शादी नहीं करेगा। इस पर गुरूजी ने कहा :

''सोलह तारीख को ये लड़की डोली में होगी।''

यह सुनकर बेलीराम बोले, ''यह कैसे सम्भव हो सकता है? सोलह तारीख़ तक तो सिर्फ, बीस दिन ही बचे हैं।'' लेकिन गुरूजी ने उन्हें चुप करा दिया।

कुछ दिन ही बीते कि, अमेरिकन एक्सप्रेस बैंक के ऑफिस में, जहाँ सीताराम जी काम करते थे, एक नवयुवक आया और उनसे बोला, कि वह अमेरिका से आया है और सीताराम जी के गाँव, जो हिमाचल प्रदेश में है, वहीं का रहने वाला है। वह आगे बोला, ''मैं जानता हूँ, कि जो कुछ मैं आपसे कहने जा रहा हूँ, वह मुझे नहीं, अपितु मेरे बड़ों को कहना चाहिए था, लेकिन मैं अपने माता-पिता को पहले ही खो चुका हूँ और मेरे एक बड़े भाई और भाभी हैं, जिन्हें मेरी इस बात से कोई सरोकार नहीं है।''

सीताराम जी बोले, ''जो कुछ कहना चाहते हो, खुलकर बताओ।'' वह बोला, ''अमेरिका में बसने के बाद, जब मैं अपने गाँव हिमाचल प्रदेश में वापिस आया, तो वहाँ के कुछ बड़े लोगों ने मेरे विवाह के लिए, एक योग्य लड़की के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि आपके उच्च-परिवार में, आपके बड़े भाई के घर, एक विवाह योग्य लड़की है। मैं आपके सामने हूँ, आप जो कुछ भी, मेरे बारे में जानना चाहते हैं, जान सकते हैं।''

जिसकी कोई उम्मीद ही नहीं थी और इस तरह अचानक हुई बातचीत से तथा वह भी अपने आप, लड़के के मुँह से सुनकर, सीताराम जी अचम्भित रह गये। उन्होंने बेलीराम से पूछे बिना ही, उस लड़के को, अपने किसी बड़े को, इस विषय पर बात करने के लिए, बुलाने को कहा।

कुछ दिनों बाद वह लड़का, अपने साथ अपने बड़ों को लेकर आया। इस विषय पर सारी बातचीत हो जाने के बाद, विवाह की तारीख़ पक्की कर दी गई।

गुरूजी, अपने अन्य शिष्यों के साथ, इस शादी के समारोह में, स्वयं् भी मौजूद थे शादी का समारोह हुआ---------

.........और बेलीराम की लड़की
ठीक उसी दिन अर्थातः
सोलह तारीख़ को 'डोली' में थी।

***बड़े आश्चर्य की बात है*-----**

उसकी शादी के बीस दिन पहले गुरूजी उसकी शादी की तारीख़ जानते थे

ये भविष्य तो सिर्फ
भगवान ही जान सकते हैं।

अब वह लड़की अमेरिका में है, उसके खूबसूरत बच्चे भी हैं और वह खुः शी-खुः शी, अपने पति रमेश के साथ, रह रही है।

54. जब एक महिला, जो जोड़ो के दर्द से परेशान थी, उसे उसके चार बेटे, कंधों पर उठाकर, गुरूजी के पास लाये।

एक बार गुड़गाँव स्थान पर, एक महिला को, उसके चार बेटे, अपने कंधों पर उठा कर लाये। वह बहुत बीमार थी। अगर उसको, एक भी झटका लग जाता था, तो वह अपने बेटों को गालियाँ देने लगती।

जब गुरूजी ने उसे आशीर्वाद दिया, तो उसका पेशाब निकल गया, जिसका रंग चूने के पानी जैसा, सफेद था।

लौंग, इलायची और जल लेने के उपरान्त, जब वह चली गई, तो मैंने प्रार्थना की----

''गुरूजी, वह बहुत अधिक बीमार है और मेरी यह इच्छा है कि आप उसे जल्दी ठीक कर दो।''

उसकी समस्या, बहुत गम्भीर थी। अगर उसे मामूली सा भी झटका, उसे उठाने या नीचे लिटाने में लग जाये, तो वह ज़ोर से चिल्लाने लगती थी। मैंने गुरूजी से कहा कि गुरूजी मुझे उस पर दया आ रही है और मैं चाहता हूँ कि आप उसे, अभी ठीक कर दो।

इस पर गुरूजी बोले----

''राज्जे, क्या तू जानता है कि इस महिला ने कितने घर बरबाद किये हैं?''

वे आगे बोले-----

''इस महिला ने, कितने ही लोगों के ऊपर, गलत शक्तियों का प्रयोग करके, उनका जीवन नरक बना दिया है।''

गुरूजी ने कहा कि वे उसे ठीक तो कर देंगे लेकिन धीरे-धीरे...।

उन्होंने आगे कहा----

''जब मैं उसे आशीर्वाद दे रहा था तो अनेक लोगों की चीखों को मैंने सुना, जो, इस महिला के शिकार हुए थे और इंसाफ की दुहाई दे रहे थे''

गुरूजी,
हर किसी के बीते हुए कल के बारे में भी जानते हैं और उस बीते हुए कल की आवाजें भी सुन सकते हैं। उनके साथ न्याय भी करते हैं, जिन्हें, किसी ने नुकसान पहुँचाया हो।

55. *जब गुरूजी ने बिगड़े हुए इंजन वाली, जोंगा जीप चलाई।*

<u>सुरेन्द्र तनेजा</u>, गुरूजी के मुख्य शिष्यों में से एक हैं, जो कर्मयोगी है और अपने स्टोन क्रशर उद्योग में कार्यरत थे जब कभी उनके स्टोन क्रशर में कोई बाधा आती, तो वह स्वयं बाज़ार जाकर, अपनी ज़रुरत के हिसाब से, मशीन के पुर्ज़े तक भी लेकर आते हैं।

वह गुरूजी से बहुत अधिक प्यार करते हैं। वे गुरूजी से कभी साथ चलने के लिये कहते, तो गुरूजी भी उसके साथ चलने के लिए अक़्सर राज़ी हो जाते थे। गुरूजी भी उसके साथ, बड़े प्यार और कोमलता का व्यवहार करते थे।

एक बार सुरेन्द्र अपनी जोंगा जीप चला रहे थे और गुरूजी उनकी बाँयी तरफ की सीट पर बैठे थे, कि अचानक, इंजन में कोई खराबी आने के कारण, जीप बीच सड़क में ही रुक गई।

सुरेन्द्र ने उसे दुबारा स्टार्ट करने की भरपूर कोशिश की, परन्तु काफी समय निकल जाने के बाद भी, इंजन को दुबारा स्टार्ट नहीं कर पाये।

गुरूजी यह सब देखते रहे। जब बात सुरेन्द्र के बस से बाहर हो गयी, तो गुरूजी बोले :

''तुम बाहर आ जाओ, अब जीप, मैं चलाऊंगा...''

गुरूजी ड्राईवर की सीट पर बैठ गये और सुरेन्द्र से पूछने लगे-----

''उस इन्जीनियर भगवान का क्या नाम है, जिसने रावण की लंका बनाई थी?''

सुरेन्द्र ने, कुछ सोचकर जवाब दिया, ''गुरूजी, उनका नाम 'बाबा विश्वकर्मा' *है।*

गुरूजी कुछ देर तक चुप रहे और उसके बाद उन्होंने इंजन को स्टार्ट करने का बटन दबाया, इंजन स्टार्ट हो गया और गुरूजी जीप को चलाते हुए, गुड़गाँव स्थान पर ले आये ।

गुरूजी, सुरेन्द्र को लेकर अपने कमरे में गये और उसे चाय का प्रसाद दिया। जब वह अपनी चाय का प्रसाद पी चुके तो गुरूजी से, वापिस दिल्ली जाने की आज्ञा माँगी।

गुरूजी ने उनसे पूछा--- ***''बेटा, तुम अब कैसे जाओगे...?''***

सुरेन्द्र ने जवाब दिया, ''जीप से ही जाऊँगा, गुरूजी... ''

गुरूजी मुस्कुराये और बोले---

‘‘अब जीप को तो दिल्ली, क्रेन ही लेकर जायेगी। तुम अपने दिल्ली जाने का, और ही कोई इन्तज़ाम करो।’’

*इसके बावजूद भी सुरेन्द्र ने बाहर जाकर जीप को स्टार्ट करने की कोशिश की, लेकिन वह कामयाब़ नहीं हो सके अन्ततः जीप को ‘**टोह’** करके ही दिल्ली ले जाना पड़ा।*

*दिल्ली में जीप का मैकेनिक, इंजन की हालत देख कर, हैरान रह गया और वह विश्वास ही नहीं कर सका, कि इस धरती पर कौन है ऐसा, जो जीप को **इस हालत में**, हॉईवे से मीलों दूर, घर तक ले गया?*

ये तो गुरुजी ही जानें, कि उन्होंने भगवान के इन्जीनियर ‘बाबा विश्वकर्मा’ से क्या बात की और कैसे उन्होंने गुड़गाँव स्थान तक पहुँचने के लिए उनसे इन्जन ठीक कराया...?

ताकि वह सारी रात सड़क पर ही न बैठे रहें, क्योंकि स्थान पर दर्शन के लिए, सैंकड़ों भघ उनका इन्तजार कर रहे थे।

इस तरह गुरुजी ने ‘बाबा विश्वकर्मा’ की उपस्थिति को भी कायम कर दिया, जिनकी तस्वीरें भारतीय कारीगर अपने कर्म स्थल पर लगाते हैं और उनकी पूजा करते हैं।

56. *गुरूजी, मेरी पत्नी गुलशन के लिये, वास्तव में त्रिकालदर्शी भगवान थे।*

मेरी पत्नी गुलशन, चाँदनी चौक बाज़ार, घर के लिये कुछ ख़रीदारी करने गई। ख़रीदारी करते समय उसने, वहाँ कुछ लुंगियाँ देखीं और उसमें से दो लुंगियाँ गुरूजी के लिये ख़रीद लीं और वहाँ से सीधी गुड़गाँव चली गईं।

गुड़गाँव पहुँचकर जब, गुलशन गुरूजी के कमरे में गईं, तो उस समय गुरूजी अपने कमरे में विश्राम कर रहे थे उसने उन्हें प्रणाम किया, आशीर्वाद लिया और बैठ गईं। तभी उसके मन में यह विचार आया, कि वह, जो कुछ गुरूजी के लिये लेकर आई है, वास्तव में, यह उपहार गुरूजी को देने के लिये बहुत छोटा है। उसने वह लिफाफा छुपा लिया और सोचा कि यह गुरूजी को देना उचित नहीं होगा, अतः मुझे यह उन्हें नहीं देना चाहिए।

गुरूजी जानते थे कि वह उनके लिये कुछ लेकर आई है और वह उन्हें देने में झिझक महसूस कर रही है। वह यह भी जानते थे, कि गुलशन यह सोच रही है कि उस महान व्यक्तित्व को भेंट करने के लिये, उसका यह उपहार बहुत छोटा है, इसलिये उसे शर्म आ रही है और वह चुपचाप बैठी है।

*गुरूजी कभी किसी से कोई उपहार नहीं लेते थे। उन्होंने गुलशन की तरफ देखा और बोले--- **''गुलशन, तू मेरे लिये क्या लेकर आई है..?''***

गुलशन ने जवाब दिया, ''कुछ नहीं गुरूजी..'' और लुंगी का लिफ़ाफा, उसने अपने पीछे छुपा लिया।

गुरूजी दुबारा बोले----
''मैं जानता हूँ कि तू मेरे लिये कुछ लाई है। तुम वह दे दो मुझे''

उसने फिर दो बार 'ना' बोला और अन्त में झिझक्ते हुए वह लिफ़ाफा, गुरूजी को दे दिया।

गुरूजी ने लिफ़ाफे में से लुंगी निकाली तथा उनकी आँखों व चेहरे के हाव-भाव बदल गये। उसी समय उन्होंने अपने बिस्तर पर ही, वह लुंगी पहन ली। जबकि उस समय गुरूजी ने पहले से, एक लुंगी पहनी हुई थी, उसी के ऊपर उन्होंने दूसरी लुंगी पहन ली।

यह देखकर गुलशन का चेहरा आनन्द से लाल हो गया और वह सोचने लगी, उस लुंगी के बारे में, कि वह कितनी मामूली सी कीमत की लुंगी और गुरूजी ने उसे किस प्यार से स्वीकार करते हुए पहन भी लिया.....!! गुलशन ने, आज से पहले कभी नहीं सोचा था, कि गुरूजी का हृदय, इतना विशाल है और वे हमारी भावनाओं की इतनी कद्र करते है।

गुलशन, गुरूजी का यह रुप देख कर गद्‌गद हो गई। अपने आँसू रोककर, गुरूजी के विशाल हृदय को समझने की कोशिश करने लगी, कि गुरूजी ने उसके द्वारा लाई गयी, उपहार स्वरुप लुंगी, जो कीमत में नगण्य थी, स्वीकार करके, उसकी भावनाओं की कितनी कद्र की तथा उन्हीं के द्वारा दिया गया वह आदेश, कि ''मैं किसी से कोई उपहार नहीं लेता'', दुबारा एक अलग सच्चाई के साथ स्थापित किया कि उन्हें न तो कोई जान सकता है और न ही पूरी तरह से समझ ही सकता है।

गुरूजी जानते थे कि, गुलशन ने उनके लिये लुंगी ख़रीदी है और वह अपने साथ लेकर आई है। वैसे तो गुरूजी को कोई भी उपहार नहीं दे सकता था, लेकिन फिर भी, गुरूजी उसका इन्तज़ार कर रहे थे और उसके द्वारा लाई गई लुंगी, उन्होंने स्वीकार की और पहन भी ली।

57. जब अमेरिका की एक सिंक फैक्ट्री वालों ने मुझे, अपनी फैक्ट्री देखने की इजाज़त नहीं दी।

<u>एक बार</u> मुझे व्यापार प्रदर्शनी (Trade Exhibition) *में भाग लेने के लिए, शिकागो* **(***अमेरिका***)** *जाना पड़ा। मैंने सोचा कि कितना अच्छा हो यदि गुरूजी भी अमेरिका चलें और मेरी व्यवसायिक यात्रा, एक आध्यात्मिक यात्रा बन जाये...। मेरी प्रार्थना पर गुरूजी मान गये और उनके आदेशानुसार मैंने, हवाई जहाज के दो टिकट बुक करा लिये।*

कार्यक्रम के अनुसार, तय समय पर, मैं गुड़गाँव पहुँचा और उनसे बोला, ''गुरूजी, अब हमें एअरपोर्ट के लिए निकलना चाहिए।''

लेकिन मैंने देखा, कि उस समय गुरूजी के पास, कई लोग उनके दर्शनों के लिए आये हुए थे। देर होने की सम्भावना से गुरूजी बोले---

''राज्जे, तुम एअरपोर्ट पहुँचो, मैं इन लोगों से मिलकर, सीधा एअरपोर्ट पहुँच जाऊँगा, तब तक तुम बोर्डिंग पास और चेक-इन की लाईन में लगो।''

आदेशानुसार, मैं एअरपोर्ट पहुँचकर तथा बोर्डिंग पास लेकर, व्याकुलता से गुरूजी की प्रतीक्षा करने लगा। इतने में मैंने विमान उड़ने की घोषणा सुनी और विमान में बैठकर, फिर गुरूजी की प्रतीक्षा करने लगा। विमान उड़ा और लंदन एअरपोर्ट पर उतर गया। वहाँ पर कुछ देर रुकने के बाद, मैंने दूसरी फ़्लाईट पकड़ी और शिकागो पहुँच गया।

शिकागो में व्यापार प्रदर्शनी से निर्मुघ होने के पश्चात्, मैंने गुरूजी से, उनके आने का प्रोग्राम पूछा। उन्होंने कहा--- ***''मैं आ रहा हूँ, तुम मेरा वहीं इन्तज़ार करो।''***

इस बीच मैंने सोचा, कि क्यों न मैं 'ऐलके' (सिंक की एक विश्व विख्यात फैक्ट्री) जाकर देख आऊँ...? मैंने गुरूजी से इसकी इजाज़त माँगी और उन्होंने हाँ कर दी। सुरेन्द्र और बिल (एक अमेरिकी युवक) ने फोन पर 'ऐलके' कम्पनी के अधिकारियों से इजाज़त लेने की कोशिश की, परन्तु कम्पनी के अधिकारियों ने यह कह कर मना कर दिया, कि कम्पनी में किसी आगुन्तक के, फैक्ट्री देखने पर प्रतिबन्ध है।

मैंने रात को ही, गुरूजी को फोन करके, सारी घटना और कम्पनी वालों द्वारा मना करने का कारण भी बताया। गुरूजी बोले----

''किसी से कुछ भी कहने की जरुरत नहीं है, तुम सुबह सवा आठ बजे फैक्ट्री देखने के लिए निकल जाओ और ध्यान रहे, तुम्हारे कार्यक्रम के बारे में, न कोई कुछ कहे और न ही कोई सलाह दे।''

अतः मैंने सुरेन्द्र को गुरूजी के आदेश के बारे में बताया और उसे सुबह चलने के लिए कह दिया।

मैंने कार स्टार्ट की, सुरेन्द्र तथा बिल के साथ, करीब एक घन्टे के बाद, हम फैक्ट्री पहुँच गये। थोड़ा इधर-उधर देखने के बाद, हमें वहाँ 'स्वागत-कक्ष' (Reception Counter) *नज़र आया और मैंने सुरेन्द्र को कार, पार्किंग में लगाने को कहा।*

स्वागत कक्ष में पहुँच कर, मेरी नज़र दीवार पर लगे नोटिस बोर्ड पर पड़ी, जिस पर एक नोटिस लगा हुआ था, नोटिस के नीचे पर्सनल मैनेजर तथा उसका नाम डेनी समर्स लिखा हुआ था।

तभी मैं स्वागतकक्ष में बैठी एक महिला की तरफ मुड़ा, और उसने मेरे आने का कारण पूछा।

<u>अचानक एक अजीब घटना घटी।</u>

मैं भूल गया कि मैं कौन हूँ और मैंने उस महिला से कहा ''मैं मिस्टर डेनी से मिलना चाहता हूँ।'' उसने मिलने का कारण पूछा तो मैंने उससे कहा कि-----

''व्यक्तिगत** (Personal) **काम से, मिलना चाहता हूँ ।''

उस महिला ने फोन पर कुछ बात की और कुछ ही मिनटों में, वहाँ एक गोरा, सुन्दर आदमी आया। उस महिला ने, उसे मेरी तरफ इशारा करते हुए, कुछ कहा। मैंने अंदाजा लगा लिया, कि यह आदमी डेनी समर्स ही है। वह मेरे करीब आया, इससे पहले कि वह कुछ कहे, एक अजीबो-गरीब व्यवहार, मेरे अन्दर आ गया। यह व्यवहार बिलकुल अलग तरह का था। मैं अत्याधिक, उत्साहित व्यक्ति लग रहा था। मैं भी उसकी तरफ बढ़ा और उसके हाथ से, हाथ मिलाते हुए बोला---

''हाय डेनी, तुम कैसे हो......?''

उसके उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना, मैंने उसकी आँखों में आँखें डालकर कहा---

''डेनी, भारत में, बहुत पहले से मैं आपकी यह 'ऐलके' फैक्ट्री देखना चाहता था, अब मेरा अमेरिका में आना हुआ है और क्या संयोग है, कि आज मुझे इसे देखने का मौका भी मिल गया। देखो आज मैं तुम्हारे सामने खड़ा हूँ'',

कहकर, मैंने दुबारा उससे हाथ मिलाया और कहा---

''चलो फैक्ट्री के अन्दर चलें।''

मेरी आवाज़ में एक आदेश सा था।

मुझे इस लहज़े में बात करते देख, वह स्तब्ध हो गया और कुछ कहे बिना शिष्टतापूर्वक बोला ''मैं आपके लिए हैलमेट और चश्में का इन्तज़ाम करता हूँ, क्योंकि चलती हुई फैक्ट्री में, बिना इस सुरक्षा के, खतरा बना रहता है।'' अतः हम तीनों डेनी के साथ, हैलमेट और चश्में पहन कर, शुरु से आख़िर तक, फैक्ट्री देखते रहे।

वह, फैक्ट्री में चलते हुए, हमें प्रत्येक मशीन के बारे में विस्तार से बताता जा रहा था, कि किस-किस मशीन की, कितनी-कितनी क्षमता है और वह कितनी-कितनी मात्रा में प्रतिदिन उत्पादन कर सकती है, इत्यादि-इत्यादि। वह एक बहुत बड़ी फैक्ट्री थी और उसे पूरा देखने के लिए हमें बहुत समय लग गया।

जब मैं फैक्ट्री में चल रहा था तो, सभी मुझे अति-विशिष्ट व्यक्ति की तरह से देख रहे थे और डेनी भी हमारे साथ चलते हुए अपने आप को, बहुत गौरवान्वित महसूस कर रहा था।

जब डेनी हमें लेकर, वापिस स्वागतकक्ष में पहुँचा तो वह बहुत खुः श था और स्वागतकक्ष में बैठी रिस्पेशनिस्ट महिला भी, बहुत प्रसन्न प्रतीत हो रही थी। सुरेन्द्र अपने साथ एक कैमरा लेकर आया था, जिससे उसने बहुत से फोटो खींचें।

डेनी फिर बोला, ''राजपॉल, अगली बार जब तुम्हारा अमेरिका आने का प्लान हो, तो कृप्या मुझे फोन जरुर करना।''

*अतः हमने **'ऐलके'** कम्पनी अति-विशिष्ट व्यक्ति की तरह देखी और बाहर आकर अपनी कार में बैठ गये।*

अपने इस अद्‌भुत व्यवहार पर, मेरे लिए यह अनुमान लगाना बहुत कठिन था कि---

- *कैसे मैंने उनके ऑफिस के ऑफिशियल नोटिस बोर्ड को देखा...?*
- *कैसे उस पर मैंने डेनी समर्स का नाम पढ़ा...?*
- *क्यों उस रिस्पैशनिस्ट महिला को, डेनी समर्स से, व्यधिगत मीटिंग के लिए कहा.?*
- *कैसे मैंने डेनी समर्स को, उसके पहले नाम, 'डेनी' से पुकारा जैसा कि, अक़्सर अमेरिकन पुकारते हैं...।*
- *कैसे उसे, उसके सीनियर की भांति आधिकारिक तौर पर आदेश दे रहा था, न कि प्रार्थना की...।*

ओह नहीं...........!!

यह कोई आम बात नहीं थी। मैं अपने आप को अच्छी तरह से जानता हूँ कि मैं ऐसा नहीं हूँ। यह भी मानता हूँ कि मेरे अन्दर ऐसी योग्यता नहीं है, कि ऐसे समय में, मैं ऐसा उपयुक्त व्यवहार कर सकूं और अमेरिकन स्टाईल की इतनी अच्छी अंग्रेजी बोल सकूं।

मैं यह दावे के साथ कह सकता हूँ कि, उस समय या तो गुरूजी स्वयं् मेरे अन्दर विराजमान थे या फिर, उन्होंने किसी दिव्य शक्ति, को अदृश्य रुप में, मेरे साथ भेजा, जो मुझसे इस तरह कार्य करवा रही थी। जैसा कि पिछली रात फोन पर गुरूजी ने कहा था, कि उनके शिष्य को कोई मना नहीं कर सकता, ठीक उसी तरह, मुझे किसी ने मना नहीं किया, बल्कि एक अति-विशिष्ट व्यक्ति की तरह बर्ताव भी किया। मैं अच्छी तरह से जानता हूँ, कि जिस तरह से मैं बर्ताव कर रहा था, ऐसी योग्यता वाला पुरूष, मैं नहीं हूँ। यह सब सिर्फ गुरूजी के आदेश पर ही, हो रहा था।

जैसा कि रात को उन्होंने मुझे फोन पर कहा था--

- *कि कोई मेरे शिष्य को फैक्ट्री देखने से नहीं रोक सकता...।*
- *मुझे सुबह सवा आठ बजे निकलने का आदेश दिया.... और*

- *किसी के भी विचार या उनसे सलाह लेने को भी मना कर दिया था...।*

स्पष्ट है, कि सुबह से लेकर फैक्टरी देखने तक का सारा प्रोग्राम, गुरूजी ने स्वयं ही निर्धारित किया था।

वाह!------हे गुरूदेव ! -----वाह------!!

साष्टाँग प्रणाम है गुरूदेव....!!

आप हम पर लगातार, अपनी अपार कृपा बनाये रखना और अटूट विश्वास के साथ, अपने पवित्र चरणों में स्थान देना।

58. जब गुरूजी अपने शिष्यों के साथ हरिद्वार गये और थोड़ी सी चपातियों से, वहाँ उपस्थित सभी लोगों को रात्रि का भोजन कराया।

एक बार गुरूजी, अपने शिष्यों के साथ, हरिद्वार गये और उनके साथ, उनके अन्य शिष्यों के अलावा, जालन्धर वाले मामाजी और नदौन के संतोष भी थे।

एक रात, वहाँ पर उपस्थित, पाँच लोगों के लिए ही चपातियाँ बनाई गईं और राशन समाप्त हो गया। काफी रात हो गई थी, अतः उन्होंने सोचा, कि अब और आटा सुबह ही ले आयेंगे।

गुरूजी कहीं बाहर गये थे और सब लोग खाने पर, उनका इन्तज़ार कर रहे थे। जैसे ही गुरूजी आये, तो उनके दर्शन के लिये, चार लोग और आ गये। अतः संतोष तथा मामा जी, यह इन्तजार करने लगे कि, कब ये लोग जायें और खाना शुरु किया जाये।

इसी बीच गुरूजी ने, मामा को खाना परोसनें का आदेश दिया, लेकिन मामा जी और संतोष, एक दूसरे की तरफ देखने लगे। क्योंकि वह खाना तो सिर्फ, पाँच लोगों के लिये पर्याप्त था, उन नौ लोगों के लिये कैसे पूरा हो सकता था?

गुरूजी ने हालात को समझते हुए, संतोष को आदेश दिया, कि वह सभी की थालियों में सब्ज़ी परोसे। गुरूजी ने चपातियों का कैसरोल अपने हाथों में ले लिया। उसके बाद गुरूजी ने, सभी नौ व्यधियों को दो-दो चपातियाँ दी और दुबारा फिर, सभी को दो-दो चपातियाँ और दीं।

यह देखकर, संतोष व मामा, अचम्भित रह गये क्योंकि उन्होंने तो केवल बीस चपातियाँ ही बनाई थी, लेकिन उस कैसरोल से छत्तीस चपातियाँ, गुरूजी बाँट चुके थे और अब भी कैसरोल में कुछ चपातियाँ शेष बची हुई थी।

ये कैसे सम्भव हुआ.....??

यह देखकर, वे गुरूजी के समीप आये और कहने लगे, ''गुरूजी, यह क्या है...? हमने तो, इतनी चपातियाँ बनाई ही नहीं थीं? आपने नौ व्यक्तियों को पूरा खाना खिला दिया और इसके बावजूद भी चपातियाँ शेष बची हुईं हैं....? कृप्या बतायें कि आपने इस कैसरोल के साथ क्या किया है..., कि इसमें से चपातियाँ निकलती ही जा रही हैं...?''

गुरूजी बोले--- ***''मुझे नहीं मालूम....''*** *और वे मुस्कुरा दिये बस...।*

उन चारों लोगों के जाने के बाद, गुरूजी ने बताया कि चिन्ता करने की कोई बात नहीं होती, मैं बर्तन में खाना उस समय तक समाप्त नहीं होने देता, जब तक सब लोग भरपेट खा न लें।

लेकिन इस बात का ध्यान रहे, कि बर्तन में झाँककर कभी मत देखो, कि बर्तन में कितना खाना शेष बचा है...।

आप विधाता की तरह ही सम्पूर्ण हो, गुरूदेव......

प्रणाम साहेब जी.........!!

59. जब कैशियर ने, गुरूजी के दूअर बिल के भुगतान करने से, मना कर दिया।

अभी नहीं ----- ज़रा रुको-----

शुरु-शुरु के दिनों में लोग इन्हें, गुरूजी की तरह नहीं जानते थे, वे भारत सरकार की मिनिस्ट्री ऑफ एग्रीकल्चर में, एक भू-वैज्ञानिक के पद पर कार्यरत थे। गुरूजी अपने दफ़्तर जाते थे तथा अक़्सर उन्हें हिमाचल प्रदेश, अपने ऑफिशियल टूअर्स पर, भूमि सर्वेक्षण के लिये, जाना होता था।

उनके सहयोगी दल (Team) *में, ड्राईवर के साथ एक सरकारी जीप के अलावा, एक ओवर सीयर, एक रसोईयॉ और एक खुदाई करने वाला (सॉयल डिगर) होता था। वे सभी, कुछ दिनों तक, किसी एक जगह कैम्प लगाते और वहाँ की मिट्टी के सैम्पल की जाँचकर, उसकी रिपोर्ट, अपने विभाग को देते थे तथा वहाँ पर हुए खर्चे का ब्यौरा भी ऑफिस में देकर, उसका नकद भुगतान अपने ऑफिस के खजान्ची, आर. पी. शर्मा जी से ले लेते थे।*

एक बार गुरूजी को, उनके द्वारा प्रेषित दुअर बिल के एवज में पैसे लेने थे, लेकिन कैशियर ने उन्हें, उस दिन भुगतान के लिए मना करते हुए, अगले दिन पैसे लेने के लिए कहा। गुरूजी उससे, उसी दिन पैसे देने के लिए आग्रह कर रहे थे, क्योंकि उन्हें भी उस दिन पैसों की आवश्यकता थी।

इस पर कैशियर झुंझलाते हुए बोला, ''तुझे अपने पैसों की पड़ी है और इधर मैं अपनी बाजू की दर्द से परेशान हूँ। आज मेरे पास दवाई भी नहीं है।''

गुरूजी ने उसके दर्द के बारे में पूछा, तब उसने बताया कि वह अपनी बाजू के दर्द से पिछले कई सालों से परेशान है और रात को वह इस दर्द के लिये, बिना दवाई की गोलियाँ खाये, सो भी नहीं सकता। इस समय भी उसे बहुत अधिक दर्द हो रहा है और उसके पास, दवाई भी नहीं है।

विषय थोड़ा गम्भीर हो गया।--------

तब गुरूजी बोले, ***''अगर मैं तेरा ये दर्द दूर कर दूं, तो क्या तुम मेरे बिलों का भुगतान कर दोगे...?''***

कैशियर बोला, ''अगर तू मेरे दर्द को ठीक कर देगा, तो मैं तेरा चेला बन जाऊँगा।'' इस पर गुरूजी बोले----

''यदि आज रात को तुम्हारा दर्द वापिस आता भी है तो भी तुम, दवाई मत खाना..।''

यह एक प्रकार से जुबानी समझौता हो गया और गुरूजी ने उसे खड़ा होने के लिए कहा। अपने दाँये हाथ की उल्टी तरफ से, उसकी दर्द वाली बाँह को, पाँच बार मारा। वह कैशियर उसी समय बिलकुल ठीक हो गया।

अगले दिन, सुबह जब वह गुरूजी से मिला, तो उसने बताया कि उसकी बाजू में अब बिलकुल भी दर्द नहीं है और उसने कोई दवाई भी नहीं ली। उसने गुरूजी को ये भी बताया कि, पिछले कई सालों में, वह आज पहली बार, अच्छी तरह सो सका है।

आगे चल कर वही कैशियर, गुरूजी का परम शिष्य बना। उनका नाम श्री आर. पी. शर्मा है और लोग उन्हें शर्मा गुरूजी के नाम से सम्बोधित करते हैं। गुरूजी भी उन्हें बहुत प्यार करते थे और प्यार से उन्हें, 'मोटे' कहकर बुलाते और खु: श होते थे।

मुझे याद है कि, जब एक बार मैं, गुरूभक्ति के मार्ग पर थकान व परेशानी महसूस कर रहा था, तो उन्होंने मेरी मदद, बहुत सरल शब्दों में, ज्ञान देकर की थी।

जब कुछ लोग, गुरूजी के पास अपनी पुरानी व असाध्य बीमारियों की समस्याऐं लेकर आते थे, तो गुरूजी उन्हें, शर्माजी के पास भेज देते थे और वे उन्हें ठीक करने में कुछ ही मिनट लगाते थे।

*मुझे आज भी अच्छी तरह से याद है, जैसाकि गुरूजी ने, उन्हें सिखाया और आदेश दिया था, वे लोगों की पीड़ा के स्थान पर हाथ रखकर '**ॐ**' शब्द का उच्चारण करते तथा लोग पीड़ामुक्त हो जाते थे। आज भी मैं उन्हें याद करता हूँ, तो प्रणाम करता हूँ।*

गुरूजी जब एक बीमार खजान्ची को, गुरू बना सकता हैं, तो मैं किस बुद्धि और विवेक का इस्तेमाल करूँ कि, मैं गुरूजी को पहचान सकूं?

60. जब गुरूजी ने पंडित रामकुमार की भाँजी, कृष्णा को ठीक किया।

<u>कृष्णा नामक नवयुवती</u>, पंडित रामकुमार की भांजी को, बार-बार द़ौरे पड़ते थे द़ौरों के द़ौरान, वह अक्रामक (Violent Behaviour) हो जाती थी। उसका परिवार, उसके इस व्यवहार से, बहुत परेशान था। उन्होंने कुछ लोगों से इस समस्या के समाधान की बात की, तो किसी ने पंडित रामकुमार को उसे, गुड़गाँव वाले गुरूजी के पास ले जाने की सलाह दी और आश्वासन दिया कि गुरूजी उसे बिलकुल ठीक कर देंगे।

अतः वह कृष्णा को लेकर, गुरूजी के पास चले गये और थोड़े ही समय में, वह लगभग 70% ठीक हो गई। उन्हें कभी ऐसी उम्मीद नहीं थी। इसके बाद वह परिवार, गुरूजी के पास लगातार आने लगा।

कुछ महीने ही बीते, कि कृष्णा की सेहत दिन-ब-दिन अच्छी होने लगी। एक दिन गुरूजी ने उसके परिवार वालों से कहा कि उस पर एक जबरदस्त आक्रमण (Severe Attack) होने वाला है, अतः उन्हें आदेश दिया कि ऐसा होने पर, तुरन्त उन्हें इसकी सूचना दें ताकि वे वहाँ आ जायें।

आख़िर वो समय आ ही गया, जब कृष्णा ने अपना नियन्त्रण खो दिया। लड़की की, यह दशा देख, रामकुमार की पत्नी निराश हो गई और उसकी इस बुरी दशा को देखकर, चिल्ला-चिल्ला कर गुरूजी को, इसके लिए दोषी ठहराने लगी। वह बोली, पहले भी ये अपना नियन्त्रण खो देती थी, लेकिन इतना अधिक कभी भी नहीं। वह चिल्लाई, ''गुरु को बुलाओ, हमें हमारी लड़की जैसे पहले थी, वैसी ही कर दे, हमें इसे ठीक नहीं कराना है'' और वह चिल्लाते-चिल्लाते मूर्छित हो गई।

कृष्णा बिलकुल पागलों की तरह व्यवहार कर रही थी। वह अपना पूरा नियन्त्रण खो चुकी थी। उस पतली और नाजुक सी लड़की में, इतनी ताकत आ गई थी, कि यदि दस व्यक्ति भी उसके नज़दीक आ जायें तो भी, वह उन्हें मारने में सक्षम थी। उसकी मार इतनी ताकतवर थी, जो किसी से बरदाश्त नहीं हो पा रही थी। इसलिये कोई भी, उसके नज़दीक नहीं आ रहा था। हर कोई उससे डरा हुआ था और उससे दूर भाग रहा था। वह अकेली ही, पूरे परिवार पर भारी पड़ रही थी। अतः गुरूजी को इसकी सूचना दे दी गई।

जैसे ही गुरूजी ने, उनके घर में प्रवेश किया और कृष्णा को देखा तथा उसके सिर पर अपना हाथ रखा, वह बिलकुल अपनी साधारण अवस्था में आ गई जैसा कि एक आम व्यक्ति होता है। गुरूजी ने ऐसा चमत्कार किया, जिसकी कोई उम्मीद नहीं थी। रामकुमार की पत्नी, अपने आप को बहुत शर्मिन्दा महसूस कर रही थी और अपने उन शब्दों के लिये, जो उसने थोड़ी देर पहले कहे थे, मॉफी मॉंगने लगी।

आने वाले समय में वे दोनों पति-पत्नी, गुरूजी के अच्छे भक्त बनें और आज भी हैं।

कृष्णा के साथ गुरूजी ने ऐसा क्या किया...? सिर्फ उसके सामने खड़े ही तो थे... उन्होंने उसके सिर पर हाथ रखा ही था, कि उसका अक्रामक व्यवहार एक मिनट में शॉंत हो गया। हॉंलाकि उसके परिवार के सभी स्त्री-पुरूष

मिलकर भी, उसे 1% भी काबू में नहीं कर सके थे, उसे गुरुजी ने बिना समय लगाये, देखने भर से ही काबू में कर लिया।

मैं गुरुजी से प्रार्थना करता हूँ कि, वे मुझे वह दृष्टि दें, जिससे मैं उनके द्वारा किये गये कार्यो को, समझ सकूं।

हे गुरुदेव...........,
मुझे ऐसा वरदान दो कि मैं आपका और आपके, ईश्वर भक्ति के पथ का, मनन कर सकूं।

आप तो कृपा निदान हैं, ...साहेब।

61. जब गुरूजी के दर्शन करने की, गायत्री श्रीवास्तव ने जिद्द की।

श्रीवास्तव जी, गुरूजी के शिष्य हैं और 'लखनऊ' में सेवा करते हैं। निजी जीवन में उनका, प्रकाशन का कारोबार है और वह वहाँ से 'उत्थान की दिशा' नामक एक आध्यात्मिक पत्रिका भी निकालते हैं, जिसका मुख्य उद्देश्य गुड़गाँव तथा अन्य गुरूस्थानों के प्रति जानकारी देना है।

गुरूशिष्य श्रीवास्तव जी की पत्नी, गायत्री श्रीवास्तव, एक धार्मिक विचारों की महिला हैं और गुरूजी की परम भक्त हैं। जब एक बार उनको पता चला कि, गुरूजी उनकी प्रिन्टिंग प्रैस में आये हुए हैं, तो वह अपने आप को रोक न सकी और उसने गुरूजी के दर्शनों के लिए जाने का प्रोग्राम बनाया। परन्तु उसके परिवार-जनों ने, उसे मना कर दिया। शायद गुरूजी का ऐसा ही आदेश था, कि उनसे मिलने वहाँ कोई न आये। इस पर वह जिद्द करते हुए बोली, ''यह कैसे हो सकता है, कि गुरूजी यहाँ आयें और मैं यहीं बैठी रहूँ......?'' लेकिन फिर भी परिवार-जनों ने उसे, गुरूजी के पास जाने के लिए, रोक ही दिया। इस पर वह आपे से बाहर हो गई और मन में आया, कि क्यों न मैं छत से कूद कर आत्महत्या कर लूँ।

जब बाद में... उसे, गुरूजी के दर्शन करने का मौका मिला, तो गुरूजी ने उसे देखा तो कहा---

''तुम क्या सोचती हो कि तुम छत से कूदोगी, तो मर जाओगी..?'' ''नहीं बेटा, तुम तब तक नहीं मर सक्ती, जब तक मैं न चाहूँ।'' ''यदि तुम्हारी मुझसे मिलने की इच्छा है, तो यह तुम मुझपर छोड़ दो। लेकिन जिद्द मत करो तथा खुःशी-खुःशी मेरे आदेशों का पालन और इंतज़ार करो।''

खुःशी से गायत्री का चेहरा लाल हो गया और वह सोचने लगी, कि मेरे मन में आये विचार गुरूजी तक कैसे पहुँच गये?

श्रीवास्तव और गायत्री, एक अद्वितीय जोड़ी है, गृहस्थी में भी और गुरू भक्ति में भी। माताजी ने इन्द्रा की शादी, उनके छोटे बेटे के साथ कर दी और वे अपनी बच्ची सिया के साथ, सुन्दर जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

गुरूजी ने 'लखनऊ' में उनके घर स्थान बनाया है और वे गुरूजी के आदेशानुसार वहाँ सेवा करते हैं। उनके पास बहुत से लोग आते हैं, प्रार्थना करते हैं और गुरू कृपा पाते हैं तथा ठीक होकर जाते हैं। यहाँ महीने के कुछ विशेष दिनों में सेवाकार्य होता है। उनका पूरा परिवार, गुरूजी तथा माताजी को पूर्ण समर्पण के साथ, महाशिवरात्रि, गुरू पूर्णिमा और अन्य दिनों में गुड़गाँव स्थान पर आता है।

62. जब समुद्र ने, गुरूजी के चरण छूकर, उनको प्रणाम किया।

बहुत से बच्चे, जिनमें इन्द्रा, बिन्दु, परवानु की इला गुप्ता, रेनु, बब्बा, छुटकी, पप्पू, इन्दु, रूबी, राहुल तथा और भी बहुत से बच्चों को अपने साथ लेकर, गुरूजी मद्रास गये।

सभी लोग, मौज-मस्ती के लिए, समुद्र के किनारे (Beach) पर गये। सभी बच्चों ने समुद्र में नहाना शुरु कर दिया। तभी इन्द्रा के दिमाग में, एक विचार आया कि ''सभी लोग कहते हैं, कि गुरूजी भगवान हैं। तो क्या यह समुद्र भी, गुरूजी के चरण छूने आयेगा?''

उस समय गुरूजी समुद्र से, करीब़ पचास फुट की दूरी पर खड़े थे, उसके दिमाग में विचार आते ही, समुद्र में एक ऊंची लहर उठी और लगभग पचास फुट से अधिक की दूरी तय कर, गुरूजी के चरण छूकर आगे निकल गयी और गुरूजी के टखनों को भिगोती हुई वापिस चली गई। फिर कोई दूसरी लहर वहाँ तक नहीं पहुँची, जबकि सभी लोग वहाँ पर करीब एक घण्टा और रुके थे।

मुझे पूर्ण विश्वास है, कि ऐसा अचानक नहीं हुआ था। मैं और पाठक, उनके कृपापात्र हैं। विचार भगवान की इच्छा से ही दिमाग में आते हैं और समुद्र भगवान का ही एक अंश है। गुरूजी और भगवान एक ही हैं। भगवान ने ही इन्द्रा के दिमाग में विचार डाला होगा और गुरूजी का असली रुप दिखाकर, सभी बच्चों को, विशेषकर इन्द्रा को गुरूभक्ति में सुदृढ़ कर दिया।

समुद्र ने, गुरूजी के चरण छूकर, निम्न-लिखित बातों को साबित कर दिया कि-----

- समुद्र ने, इन्द्रा के दिल की बात सुन ली थी।
- गुरूजी की सत्यता, साबित की।
- गुरूजी और भगवान में विश्वास के प्रति, जिज्ञासु लोगों के मन को, मज़बूती प्रदान की।

गुरूजी कौन हैं............?

पाठक इसका निर्णय स्वयं ले सकता है।

आध्यात्म मार्ग में, कोई पूछताछ, अगर वह गुरूजी व गुरु भक्ति से सम्बन्धित है, तो उसका स्वागत है।

लेखक कोई ज्ञानी नहीं है, किन्तु वह गुरूजी का शिष्य है और उसने सिर्फ वही लिखा है, जो उसने देखा अथवा गुरूजी के चन्द सच्चे बच्चों के मुख से सुना। लेखक उस सच्चाई और ज्ञान से परिपूर्ण है, जो उसे गुरूजी से प्राप्त हुआ।

यह न तो कोई कहानी ही है और
न ही कोई मिथ्या कथा।
मन में इस दृश्य की कल्पना करो...
...और आनन्द लो।

63. जब गुरुजी ने, रात का अपने स्कूटर का इंजन, फुटपाथ पर खोला।

गुरुजी के पास, एक स्कूटर था, जिसे वे अक्सर अपने ऑफिस जाने के लिए प्रयोग करते थे।

एक बार गुरुजी वही स्कूटर चला रहे थे और उनके पीछे उनके शिष्य एस. के. जैन साहब बैठे थे। अचानक स्कूटर खराब हो गया और गुरुजी ने उसे, फुटपाथ पर ही खड़ा कर दिया।

गुरुजी गुस्से की मुद्रा में बोले---

*''**गंजे**, (गुरुजी प्यार से एस0 के0 जैन साहब को इसी नाम से बुलाते थे) **ये मुझे कई बार तंग कर चुका है, आज मैं इसे देखता हूँ।''***

जैन साहब ने मुझे बताया कि गुरुजी, इस तरह से बात कर रहे थे कि जैसे स्कूटर, कोई मशीन ना होकर, वह एक जीता-जागता इंसान हो। यह सब देख कर, मैं हैरान था।

गुरुजी बोले--- ***''मुझे औज़ार दो, मैं इसे अभी खोलता हूँ।''***

जैन साहब बोले, ''गुरुजी, आप स्कूटर के इंजीनियर तो हैं नहीं, आप इसके साथ क्या करने जा रहे हो?'' बिना कोई जवाब दिये गुरुजी ने, औज़ार अपने हाथ में लिए और इंजन के पुर्ज़ों को खोलना शुरु कर दिया। सारे पुर्ज़े फुटपाथ पर ही रखते चले गये। कुछ फुस्फुसाते हुए, उन्होंने 'बाबा विश्वकर्मा' का नाम लिया और इंजन के पुर्ज़ों को दुबारा जोड़ना शुरु कर दिया। पूरा इंजन वापिस जोड़ने के बाद, वे जैन साहब से बोले----

''गंजे, अब ये स्टार्ट हो जायेगा...?''

जैन साहब बोले, ''गुरुजी, अब ये तो क्या..?, इसका तो बाप भी स्टार्ट नहीं होगा।''

जैन साहब आगे बोले, ''मैं आपको आज से नहीं, पिछले कई सालों से जानता हूँ और मुझे अच्छी तरह से पता है, कि आप कोई ऑटो-मोबाईल इंजीनियर नहीं हैं।'' गुरुजी ने जैन साहब को स्कूटर में किक मारने के लिए कहा और ये क्या..........?

स्कूटर तो स्टार्ट हो गया।

जैन साहब, आश्चर्य चक्ति हो, भौंचक्के से रह गये और फिर चिल्लाये-----

----असम्भव.......।।

गुरुजी आप इन्सानों की बीमारियाँ तो ठीक करते ही हैं, आज मशीनों की भी।

आप धन्य हैं गुरुदेव....।।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि, गुरुजी जानते थे कि यह स्कूटर स्टार्ट होगा और दूसरी बात यह, कि उन्होंने इसके लिये भगवान के इंजीनियर बाबा विश्वकर्मा को आदेश दिया था और उसने गुरुजी का आदेश माना भी।

साहेब जी आप महान हैं --------

64. जब मैंने और गुरूजी ने, एक साथ अमेरिका जाने का, प्रोग्राम बनाया।

गुरूजी के आशीर्वाद से जब मैंने, उनके साथ व्यापारिक विदेश-यात्रा (Business Trip) के लिये अमेरिका जाने का प्रोग्राम बनाया, तो गुरूजी ने अपनी स्वीकृति दे दी। इस बात से मैं बहुत प्रसन्न था। लेकिन गुरूजी किसी कारणवश लोगों में व्यस्त थे, अतः उन्होंने मुझे आदेश दिया कि, मैं एअरपोर्ट पहुँचकर उनका इन्तज़ार करुं और वो पीछे-पीछे आ जायेंगे।

एअरपोर्ट पहुँचकर, मैंने वहाँ उनका फ्लाईट के उड़ने तक बहुत इंतज़ार किया और अंत में विमान में बैठ गया। विमान उड़ा और लंदन होता हुआ, शिकागो पहुँच गया।

शिकागो पहुँचने पर मुझे, वहाँ एक बहुत अच्छा व्यापारिक-संस्थान मिला। परन्तु उस कम्पनी के वाईस प्रेसिडेन्ट, मिस्टर जीन शवॉटर्स ने, मुझसे व्यापार सम्बन्धी बातचीत के लिए सिर्फ तीस मिनट का समय ही दिया। लेकिन तीस मिनट की मीटिंग में, वह इतना प्रभावित हो गया, कि हमारी बातचीत करीब छः घण्टे तक चली। वाईस प्रेसिडेन्ट ने, स्वयं दो बार उठकर कॉफी बनाई तथा मुझे और मेरे साथ जो व्यक्ति ऐजेन्ट (Agent) गया था, उसे भी पिलाई।

उसने लगभग चार से पाँच लाख अमेरिकी डालर का ऑर्डर दिया तथा पचास हज़ार डॉलर ओर, नये टूल्स बनाने के लिए मंजूर किये, जो हमारी रिसर्च एवं डेवलपमैन्ट के लिए ख़र्च होने थे। यह मेरे जीवन का एक अतुल्यनीय व्यापारिक लेन-देन था।

अपनी इस पहली मुलाकात का, इतना अच्छा परिणाम आयेगा और वह भी अमेरिका के इतने बड़े व्यापारिक-संस्थान के साथ, मुझे इसका अंदाज़ा नहीं था।

मैं यह जानता हूँ कि मैं यंत्र-कला (Technical) में तो निपुण हूँ परन्तु मैं एक अच्छा सेल्समैन नहीं हूँ। मेरा ऐजेन्ट (Agent) भी इस उपलब्धि को लेकर, आश्चर्य चकित था। मैंने गुरूजी को यह सब फोन पर बताया और उनसे भारत लौटने की इजाज़त माँगी।

अब एक दुर्घटना घटित हुई.......

जब मैं अपनी विदेश-यात्रा (Tour) समाप्त करके, भारत वापिस आया तो मैंने सोचा कि क्यों न मैं, गुरूजी की हवाई यात्रा की वह टिकट, जिसका गुरूजी ने इस्तेमाल नहीं किया था, ट्रेवल ऐजेन्ट को वापिस लौटा दूं?

मैंने गुरूजी से उस टिकट के लिए कहा, तो गुरूजी ने कहा---

''मैं ढूंढ़ कर बाद में दे दूंगा।''

इस बीच ट्रेवल ऐजेन्ट, बाकी पेमेन्ट और/या न इस्तेमाल की गई टिकट वापिस करने के लिए ज़ोर देने लगा।

मैं दुबारा गुरूजी के पास टिकट के लिए गया और उन्होंने मुझे फिर भी टिकट नहीं लौटाई...। मुझे यह समझ नहीं आया कि, मैं गुरूजी से बार-बार टिकट लौटाने के लिए क्यों कह रहा था?

तीसरी बार मैंने अपने बेटे बब्बू को गुड़गाँव भेजा और वो वह टिकट ले आया तथा मैंने वह टिकट, ट्रेवल ऐजेन्ट को लौटा दी। बब्बू ने मुझे बताया कि जब गुरूजी ने टिकट लौटाई, तो उनका मूड ठीक नहीं था। तब तक भी मुझे अपनी गलती का अहसास नहीं हुआ।

शाम को जब मैं गुरूजी के पास गुड़गाँव पहुँचा, और गुरूजी को प्रणाम किया तो उन्होंने मेरी तरफ देखकर कहा--- ***''अमेरिका का पानी लग गया है तुझे।''***

मैं अपना पक्ष रखते हुए बोला, ''गुरूजी, मुझसे कोई गलती हुई है क्या...?'' परन्तु उन्होंने इसका कोई जवाब नहीं दिया।

वह व्यक्ति, जो हमारे साथ, अपने व्यापारिक सम्बन्ध अधिक सुदृढ़ बनाने के लिए अति-आतुर था और भारत आकर हमसे मिलना चाहता था, अचानक चुप्पी साध गया। करीब डेढ़ महीने के लम्बे इन्तज़ार के बाद, मैंने गुरूजी के सामने, उसकी, इस असाधारण चुप्पी की बात रखी।

गुरूजी अपने बेडरुम में, अपनी उसी प्रसिद्ध मुद्रा में (अपनी दाँयी टाँग, बाँयी जाँघ के ऊपर रख कर) बैठे थे उनके दर्शन कर, आनन्द विभोर हो, मैंने गुरूजी से कहा, ''गुरूजी, एक पार्टी जिससे मैंने चार-पाँच लाख डॉलर का ऑर्डर लिया था, उसने मेरी चिट्ठियों का जवाब तक देना बन्द कर दिया है और न ही किसी तरह की कोई बात ही कर रहा है। जबकि कुछ समय पहले तक वह बहुत उत्साहित था।''

गुरूजी बोले---- ***''कौन सा ऑर्डर...?''***

मैंने जवाब दिया, ''वो ही, जो मैंने अमेरिका में लिया था।''

गुरूजी बोले---- ***''वो तो मैंने लिया था।''***

मैंने हंसते हुए कहा, ''ठीक है...गुरूजी, आपने ही लिया था, मुझे मालूम है लेकिन... उस आर्डर का हुआ क्या...?''

गुरूजी बोले----

''कौन सा ऑर्डर बुक किया था मैंने...? और कब...? .....मैं तो वहाँ कभी गया ही नहीं।'' ''तुम्हारे टिकट वापिस करने के साथ ही यह स्पष्ट हो गया था कि मैं तो अमेरिका गया ही नहीं था। ...... मैंने कोई ऑर्डर बुक नहीं किया।''

गुरूजी अब गम्भीर मुद्रा में थे और कठोरता उनके चेहरे पर स्पष्ट दिखाई दे रही थी। उन्होंने मेरी तरफ देखा और कहा---- ***''नीचे बैठो और जवाब दो।''***

अब उन्होंने कहना शुरु किया,

- ''जब तुम हवाई जहाज में अपनी सीट पर बैठे, तुमसे अगली वाली सीट खाली थी?''

  मैंने याद करके उत्तर दिया........, ''.......जी गुरुजी''
- ''जब तुम लंदन से शिकागो की दूसरी फ़्लाईट की सीट पर थे, तो भी तुमसे अगली सीट खाली थी?

  मैंने फिर उत्तर दिया---''...जी गुरुजी''
- ''एक महीने बाद वापसी पर जब तुमने वॉशिंगटन के लिए फ़्लाईट ली, तब भी अगली सीट खाली थी......''
- ''वॉशिंगटन से पेरिस जाते हुए भी तुमसे अगली सीट खाली थी...... ''
- ''पेरिस से नई दिल्ली आते हुए भी तुमसे अगली सीट खाली थी...... ''

मैंने अपनी सभी फ़्लाईटस के बारे में, सोचकर देखा..... मेरे पास कहने के लिए कोई शब्द नहीं थे।

अविश्वस्नीय..........!!

मेरे सिवा कोई दूसरा नहीं जानता था, कि सभी फ़्लाईटस में मुझसे अगली सीट हमेशा खाली रही थी।

मुझे अपने अमेरिका-भम्रण की सारी पुरानी यादें, ताजा हो आईं। दिल्ली से लंदन, लंदन से शिकागो, शिकागो से वॉशिंगटन, वॉशिंगटन से पेरिस और अन्त में पेरिस से दिल्ली तक... मुझसे अगली सीट पर कोई भी नहीं था। वह हमेशा खाली ही थी और किसी और को, दी ही नहीं गई थी। इससे पहले मुझे इस बात का ध्यान भी नहीं आया था।

गुरुजी बोले, ''बेवकूफ, वहाँ मैं बैठा था, हमेशा तेरे साथ.....''

और तूने......,

मेरी टिकट वापिस कर दी.......!! और

साबित कर दिया कि अमेरिका में,

मैं मौजूद नहीं था......??

अब मुझे सब समझ में आने लगा और मुझे अपनी गलती का अहसास हुआ, मैंने यह महसूस किया कि----

- कैसे मेरी वह व्यवसायिक-मीटिंग असाधारण हुई थी और पार्टी ने मेरी सभी बातें मान ली थी... और
- क्यों मिस्टर जीन शवॉटर्स, मुझसे मेरी हर बात पर पूर्णतयाः प्रभावित था.. और

- *क्यों मेरा ऐजेन्ट (Agent) चकित रह गया, जब वाईस प्रेसिडेन्ट ने, हमारी रिसर्च एवम् डेवलपमैन्ट के लिए, पचास हज़ार डॉलर बिना किसी शर्त के देने के लिये अपनी अनुमति दी।...*

मुझे सबकुछ याद आने लगा, कि कैसे-कैसे असाधारण प्रश्न उसने मुझसे किये और उन प्रश्नों के कैसे-कैसे, नपे-तुले उत्तर, मैंने उसे दिये और उसने अपना सिर हिला कर, बिना कुछ कहे, उसे स्वीकार कर, मुझसे बिज़नेस ऐग्रीमेन्ट कर लिया।

पूरी मीटिंग में उसने, मेरी किसी भी बात का विरोध नहीं किया। जब मेरे ऐजेन्ट (Agent) ने, मेरे लिए मीटिंग का समय लिया था तो कहा था कि वाईस प्रेसिडेन्ट बहुत अधिक व्यस्त है और मुश्किल से केवल तीस मिनट का ही समय मिल पाया है। लेकिन, वही इस मीटिंग की बातचीत को लम्बा खींचते हुए, तीस मिनट से छः घण्टे तक ले गया।

मैं अपने आपको तथा अपनी योग्यताओं को अच्छी तरह से जानता हूँ। मैं यहाँ सच्चे मन से कहना चाहता हूँ, कि मीटिंग में हुए एक तरफा परिणाम का श्रेय, उस अदृश्य महाशक्ति को जाता है, जिसने मेरे रुप में विराजमान होकर, वहाँ पर छः घन्टे बिताये और वह कार्य किया, जो मेरे लिए पूर्णतः असम्भव था।

यह कोई कहानी नहीं है, बल्कि यह मेरा अपना निजी और व्यधिगत अनुभव है।

ये........., गुरुजी हैं।
गुरुजी ...और सिर्फ गुरुजी।।

वे कहीं भी चमत्कार कर सकते हैं। चाहे वे अदृश्य रुप में..., शिकागो में हों और या फिर शारीरिक रुप में..., गुड़गाँव में।

जैसा, भगवान करते हैं।

65. जब गुरूजी, एक ही समय में, चार जगह उपस्थित थे।

मैं यहाँ आपकी जानकारी के लिये कुछ लिख रहा हूँ, जो एक अलग तरह के ज्ञान पर आधारित है। अतः इस पर गम्भीरता पूर्वक विचार करें। इसे समझने के लिये ज़रुरी है कि, अपने विचारों की तरंगों को रोकें। थोड़ा रुकें और उपयुक्त समय का इन्तज़ार करें। सच्चाई साबित करने के लिये किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं है।

यदि किसी प्रकार की कोई शंका है, तो एक सलाह है, कि आप इसे ना पढ़ें और अगले पृष्ठ पलट दें।

अगर आप यह सोचते हैं, कि कहीं आपसे आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्ति का, वह लक्ष्य छूट न जाये तो, आपको सलाह दी जाती है कि, वो तरीका अपनाओ, जो अब तक अनकहा है। जो उन अज्ञानी लोगों को पता है, जिनका ढाँचा गुरूजी ने स्वयं तैयार किया है और उन्हें सेवा करने का आदेश दिया है।

केवल ऐसे ही लोग, उन इच्छुक लोगों के लिये हितकर होंगे, जो आपको इस ज्ञान के बारे में समझा सकेंगे। **यदि तुम्हें, उन शिष्यों के साथ रहकर, फिर भी ऐसा लगता है, कि इस तरह से ज्ञान प्राप्त करना मुश्किल है,** तो एक और दूसरा उपाय भी है..

जो निम्न लिखित है :-

आप हर हफ्ते, हर महीने या महीने में दो-बार, गुड़गाँव सैक्टर 7 और सैक्टर 10 के स्थान में जाओ। वहाँ गुरूजी के किसी भी रुप पर, अपना ध्यान केन्द्रित करो तथा वहाँ अपने को, विचारों से दूर रखते हुए, कुछ मिनट शान्ति से बैठो।

कुछ समय तक, विचार रहित किया गया ये अभ्यास, इसका विलक्षण नतीजा आपके सामने लेकर आयेगा। इसमें कुछ अधिक समय लग सकता है, लेकिन आप अपना धैर्य न खोऐं। सबसे पहले अपने अन्दर झाँक कर देखें और फिर सोचें, कि आप क्या जानना चाहते हैं। यह सिर्फ आपकी अपनी जाँच के लिये है।
(इसके लिये अधिक समझने की जरुरत नहीं है, सिर्फ आपकी जानकारी के लिये ही लिखा गया है।)

यदि आप आध्यात्मिक ज्ञान का, वह सर्वोच्च लक्ष्य प्राप्त करने के इच्छुक हैं, तो बस इसी कथन पर स्थिर रहो और बस ऐसा ही करते रहो। ऐसा करने से ही आपके अन्दर विश्वास का एक अकुँर फूटेगा और लगातार किये गये इस कार्य से आपके अन्दर, पूर्ण विश्वास विकसित होगा। यह उपलब्धि आपके जीवन में एक चमत्कार ले आयेगी।

सिर्फ एक विश्वास देकर आप, गुरूजी के करीब़ और करीब़ आ जायेंगे। बिना गुरूजी की कृपा के, और कोई रास्ता नहीं है। यह लगातार किया गया अभ्यास ही आपको निष्कृय (Effortless) बना सकता है, जो सिर्फ गुरूजी ही कर सकते हैं तथा आपके अन्दर इस दृढ़ विश्वास की शक्ति को स्थिर कर सकते हैं। कि--------

''सब कुछ, गुरुजी ही करने वाले है....., मैं नहीं......''

यह एक लम्बा अभ्यास है, लेकिन यह अभ्यास करना उतना ही ज़रुरी है, जितना कि जीने के लिये साँस लेना।

जब हज़ारों लोग, रात के 12 बजे से लेकर, अगले दिन रात के 1 बजे तक, लम्बी-लम्बी कतारों में, गुरुजी के दर्शन के लिये खड़े होते थे, तब किसी संस्था के लोगों का ध्यान, इस तरफ गया और उन्होंने इस भीड़ को, एकत्र करने वाले, जिन्हें वह भीड़ 'गुरुजी' कहती थी, उनकी सत्यता जानने का प्रयास किया।

इसके लिये, चार ऑफिसर्स का एक दल (Team) बनाया गया और उनको वॉकी-टॉकी सेट (Walki-Talkie Handsets) इस आदेश के साथ, दिये गये कि वे, गुरुजी की हर गतिविधि पर नज़र रखें और इसकी सूचना उन्हें दें। इसके लिये उनको गुरुजी के चार मुख्य स्थानों पर, जहाँ गुरुजी अक्सर, रोज़ आते-जाते थे, नियुक्त किया गया।

वह चार स्थान निम्न लिखित थेः -

1. गुरुजी का घर, सैक्टर 7, गुड़गाँव।
2. गुरुजी का कर्ज़न रोड का ऑफिस।
3. गुरुजी का गोल-मार्किट का सरकारी आवास। तथा
4. गुरुजी का गुड़गाँव का फार्म ।

सभी ऑफिसर निश्चित समय पर, अपने-अपने पूर्व निर्धारित स्थान पर पहुँच गये।

अब जैसे ही गुरुजी ने अपने कर्ज़न रोड स्थित ऑफिस में प्रवेश किया, वैसे ही वहाँ पर तैनात ऑफिसर ने, गुड़गाँव फार्म पर तैनात ऑफिसर को सूचित किया और कहा, ''हाँ, गुरुजी यहाँ हैं और अभी-अभी ऑफिस में आये हैं।''

दूसरी तरफ से उस ऑफिसर ने, उसकी बात को गलत साबित करते हुए कहा, ''नहीं, ये तुम कैसे कह सकता हो? वे तो यहाँ हैं और अभी-अभी ऑफिस में आये हैं।'' उनका तीसरा और चौथा ऑफिसर भी पूर्ण विश्वास के साथ यही बात कह रहा था कि गुरुजी तो वहाँ हैं।

उन चारों ऑफिसर्स के बीच, एक असमंजस की सी स्थिति पैदा हो गई। वे चारों वॉकी-टॉकी (Walki-Talkie Handsets) पर बात कर रहे थे और चारों इस बात को, एक साथ, इसी यकीन से कह रहे थे कि, गुरुजी तो उनके सामने हैं और अभी-अभी आये हैं। उन सबने गुरुजी को, एक साथ पूर्ण मनुष्य रुप में देखा, लेकिन अलग-अलग जगहों पर।

एक ने गुरुजी को कर्ज़न रोड ऑफिस में, तो दूसरे ने गोल मार्किट में, तीसरे ने सैक्टर 7 में तो चौथे ने गुड़गाँव फार्म पर ।

<u>अब एक बहुत मज़ेदार घटना घटी</u>...।
जो ज़िन्दगी की बेश-कीमती घटना है
तथा
संजों कर रखने योग्य है।
बहुत उत्तेजना से भरपूर और
अत्यधिक खूबसूरत......

- *गुरुजी ने सैक्टर 7 के स्थान पर, ऑफिसर को चाय के साथ मिठाई खिलाई और उसके सभी प्रश्नों के उत्तर दिये....।*
- *गुरुजी ने गुड़गाँव फार्म पर भी, ऑफिसर को चाय के साथ मिठाई खिलाई और उसके भी कुछ प्रश्नों के उत्तर दिये....। और*
- *कर्ज़न रोड पर ऑफिसर को भी, गुरुजी ने चाय के साथ मिठाई खिलाई और उसके भी प्रश्नों के उत्तर दिये....।*
- *गुरुजी ने गोल मार्किट के सरकारी आवास पर, ऑफिसर को भी चाय के साथ मिठाई खिलाई और उसके भी प्रश्नों के उत्तर दिये।*

वाह............!!

चार अलग-अलग जगहों पर, सभी ऑफिसरों को, एक ही समय में, गुरुजी ने स्वयं चाय पिलाई तथा मिठाई भी खिलाई तथा उनके प्रश्नों के उत्तर भी दिये....!!

सभी ऑफिसरों ने, गुरुजी को अलग-अलग साष्टाँग प्रणाम करते हुए मॉफी माँगी।

आफ़रीन............ गुरुदेव !!

यह एक असम्भव सी बात है, जो एक साधारण व्यक्ति के आँख, कान व दिमाग की पहुँच से, बहुत ऊपर है।

जैसा कि मैं ऊपर कह चुका हूँ कि, बिना किसी शर्त के गुरुजी के समक्ष समर्पण ही, आपको इस दिव्य ज्ञान की ओर ले जा सकता है।

बेशक कोई भी जिज्ञासु, भक्ति और साधना से आध्यात्मिक शक्तियों को प्राप्त तो कर सकता है, लेकिन आगे चलकर ये असन्तुष्टता व थकाने वाली हो सक्ती हैं। क्योंकि वह स्वयं इस यात्रा का भविष्य व अन्त नहीं जानते, वे सिर्फ अंदाजा ही लगा सकता हैं। यदि यही सब गुरु को समर्पण करके, प्राप्त किया जाये तो इस तरह की परेशानियाँ नहीं आती। क्योंकि करने वाले गुरुजी स्वयं ही हैं और वे ही तुम्हारा भविष्य जानते हैं, जो कि तुम नहीं।

शुरु-शुरु के दिनों में जब मैं गुरुजी के पास आया था, तो मुझे आदेश मिला था, कि मैं साधना, भक्ति, आध्यात्मिक किताबें पढ़ना और मंदिरों में माथा टेकना आदि बन्द कर दूं। इस बात पर तब मैंने गुरुजी से पूछा था, कि गुरुजी फिर मैं क्या करुं.....?

गुरूजी ने कहा था-----

''तुम लोगों की सेवा करो और
मुझसे प्यार करो।''

उन्होंने आगे कहा,

''तुम कुछ नहीं करो, अब जो कुछ करना है,
मैं करूंगा और तुम्हें तुम्हारे लक्ष्य,
'मोक्ष' तक खुद ही लेकर जाऊंगा।''

मैंने 'मोक्ष' और 'मुक्ति' के बारे में सुना और पढ़ा तो था लेकिन व्यवहारिकता के रू-ब-रू (Across In Practical) *कभी नहीं आया। केवल लोगों के मुख़ से सुना और किसी का लिखा हुआ पढ़ा था। पता नहीं वह सही है या गलत, जबकि गुरूजी तो मेरे सामने सब कुछ शारीरिक तथा व्यवहारिक रुप से करते थे और करते हैं। वे जो कुछ कहते हैं, वह हो जाता है। यह कोई एक दिन, एक महीना या एक साल का अनुभव नहीं है, मैंने शारीरिक रुप में, उनके चरणों में पंद्रह साल रहकर, यह सब कुछ देखा और जाना है तथा हर रोज़ अनगिनत चमत्कार भी देखे हैं। मेरे अन्दर किसी भी तरह का कोई सवाल आता, तो वे गुरूओं के गुरू, 'महागुरूदेव' मुझे उसका जवाब तुरन्त दे देते हैं।*

वे लोग, जिन्होंने गुरूजी को शारीरिक रुप में नहीं देखा है, वे उनके शिष्यों द्वारा, उन्हें जानने का हक रखते हैं। गुरूजी कहीं नहीं गये, वह हर कदम पर हमें राह दिखाते है तथा ज्ञान देते हैं। जब सारा संसार थककर सो जाता था, तो गुरूजी हमें, अपने कमरे में ले जाकर, रात्रि 12 बजे से लेकर मध्य रात्रि 2: 30 बजे तक, अपनी भरपूर कृपा और अनकहे आध्यात्मिक ज्ञान से मालामाल करते थे।

66. जब दूबे जी की बिल्ड़िग, गुरूजी के आशीर्वाद से खाली हो गई।

उत्तर प्रदेश के रहने वाले दूबे जी को, राजस्थान में स्थित अपनी जायदाद की कुछ समस्या थी। जो, उसने वहाँ एक बैंक को किराये पर दे रखी थी। दूबे जी चाहते थे कि वह जगह ख़ाली हो जाये, परन्तु इसके लिए बैंक अधिकारी तैयार नहीं थे।

संयोगवश, दूबे जी गुरूजी के शिष्य डा. शंकर-नारायण जी से मिले। उसने, उनसे इस विषय पर सलाह माँगी, तो डा. शंकर-नारायण ने कहा, ''मुझे इस विषय में इतनी जानकारी नहीं है, ऐसा करता हूँ, कि मैं तुम्हें अपने गुरूजी से मिलवाता हूँ, वे तुम्हारा काम करवा सकते हैं। यदि उन्होंने हाँ कर दी, तो तुम्हारा काम हो जायेगा।'' दूबे जी इसके लिये राज़ी हो गये।

डा. शंकर-नारायण, उसे गुरूजी के पास लाये, तो गुरूजी ने उससे पूछा---

''तुम क्या चाहते हो?''

तो उसने अपनी समस्या गुरूजी को बता दी और कहा कि वह चाहता है कि, उसकी वह जगह खाली हो जाये। गुरूजी बोले :

''जाओ, तुम्हारा काम हो जायेगा।''

मीटिंग के लिए तय समय पर दूबे जी, बैंक के प्रधान कार्यालय (Head Office) गये और वहाँ ऑफिसर से मिलने के लिए, अपनी बारी का इंतज़ार करने लगे।

जब दूबे जी वहाँ इंतजार कर रहे थे, तभी दूबे जी, यह देखकर आश्चर्य चकित रह गये, कि गुरूजी उस ऑफिसर के कमरे में जा रहे है। कुछ समय बाद, उस ऑफिसर ने, दूबेजी को अपने कमरे में बुलाया। उसकी बात सुनी और बिना किसी परेशानी के उनको, जगह खाली करके देने की बात मान ली।

जल्दी ही दूबे जी को उस जगह का कब्जा मिल गया।

गुरूजी के वे शब्द :

''जाओ...., तुम्हारा काम हो जायेगा''

.....काम कर गये।

तथा दूबेजी को, अपने जीवन की एक बड़ी परेशानी से, छुटकारा मिल गया।

यह सब तो ठीक है, लेकिन जैसा गुरूजी ने कहा था, उसकी जगह भी कुछ दिनों के बाद बैंक वालों ने खाली कर दी। लेकिन यह अध्याय यहीं समाप्त नहीं हुआ, बहुत सी निम्न लिखित बातें हैं जो विचारणीय हैं :-

- *आखिर गुरूजी, उस बैंक के ऑफिसर के कमरे में, करने क्या गये थे...?*
- *कब और किस दरवाजे से, गुरूजी उसके कमरे से बाहर निकले...?*
- *दूबे जी ने, गुरूजी को उस बैंक ऑफिसर के कमरे के, अन्दर जाते हुए तो देखा, परन्तु गुरूजी न तो उसके कमरे में ही थे और न ही कमरे से बाहर जाते हुए ही दिखे...।*

इसका जवाब आप ही दे दो ना,
गुरूजी ।।

मुझे तो ऐसा लगता है कि आपने स्वयं ही जायदाद खाली करने का आदेश दिया था, उस बैंक ऑफिसर के अन्दर बैठकर.......।

67. जब गुरूजी अपना शरीर छोड़ गये और दुबारा उसमें वापिस लौटे।

गुरूजी का जन्म स्थान, पंजाब के होशियारपुर ज़िले के, हरियाना गाँव में है।

गुरूजी अपने कुछ शिष्य, जिनमें सीताराम जी, सनेत के सुरेश जी, आर. पी. शर्मा जी तथा मैं, राजा (जैसा कि गुरूजी मुझे बुलाते थे) दिन की सेवा समाप्त करने के उपरान्त, हमें एक छोटे से कमरे, जिसमें बिस्तर आदि रखे जाते थे, में ले गये।

गुरूजी करीब आधी रात तक, हम सब पर आध्यात्मिक ज्ञान और आशीर्वादों की वर्षा करते रहे। उसके बाद उन्होंने खाना लाने का आदेश दिया।

मक्की की रोटी और सरसों के साग तथा घी के साथ खाना आ गया। उन्होंने अपने हाथ से साग में घी डाला और बड़े प्यार से हमें खिलाने लगे, ''खा पुत, खा'' कहते-कहते, उन्होंने अपनी प्लेट उठाई तथा हम सबने एक साथ खाना शुरु किया।

खाना समाप्त होने से कुछ पल पहले, जब गुरूजी अपने मुँह में साग से भरी चम्मच ले जा रहे थे, तभी गुरूजी ने 'ॐ' शब्द का उच्चारण किया और साथ ही कोई अन्य दो शब्द भी बोले। अचानक उनके दोनों हाथ चम्मच सहित नीचे लटक गये। हमने देखा कि उनकी आँखें बन्द हो गई हैं और शरीर भी शिथिल पड़ गया है। हम सभी लोग घबरा गये और उनके चेहरे की तरफ टकटकी लगाकर देखने लगे।

हमने देखा कि उनका शरीर बिलकुल स्थिर है और उसमें कोई हलचल नहीं। हमें उस समय कुछ भी समझ नहीं आया, हम भयभीत हो गये। हम कभी उनकी नब्ज़ देख रहे थे तो कभी साँस, और कभी उनके हृदय की धड़कन टटोल रहे थे। लेकिन हमें वहाँ कुछ भी नहीं मिल रहा था, ना नब्ज़, ना साँस और ना ही दिल की धड़कन।

ओह.........!!

यह क्या हो गया? ऐसा तो हमने कभी सोचा भी नहीं था। हमने वही घी लिया और गुरूजी की हथेलियों पर, पैर के तलुवों पर तथा टाँगों पर उनकी मालिश करना शुरु कर दिया। ताकि शरीर में उर्जा उत्पन्न हो। हम उन्हें अपनी पूर्वावस्था में लाने की पूरी कोशिश कर रहे थे, लेकिन सब बेकार.......!!

तभी अचानक सीताराम जी की नज़र, गुरूजी की घड़ी पर पड़ी और वे बोले, ''राजपॉल, मैंने माता जी से सुना है, कि कभी-कभी इसी समय गुरूजी अपने शरीर से बाहर निकलकर, कहीं जाते हैं और कुछ समय के बाद फिर वापिस आ जाते हैं। हो सकता है, वह कहीं गये हों। इस समय सुबह के दो बजकर बीस मिनट हुए हैं, यह समय 'गुरू-पहर' कहलाता है और यह पहर सुबह साढ़े तीन बजे तक रहेगा। अतः हमें घबराना नहीं चाहिए और सुबह साढ़े तीन बजे का, शान्ति से इंतज़ार करना चाहिए, जब तक गुरूजी अपने शरीर में, वापिस न आ जायें। अतः हम मालिश आदि करना छोड़, चुपचाप बैठ गये।

रात का समय, एकदम एकान्त तथा शान्त वातावरण ऐसा, कि यदि एक सुई भी गिरे तो उसकी भी आवाज़ सुनाई दे। हमारे लिए एक-एक मिनट भी गुज़ारना मुश्किल हो रहा था। परन्तु किसी तरह से हम सब ने सुबह के साढ़े तीन बजे का, बड़ी बेसब्री से इन्तज़ार किया।

अचानक **'ॐ'** की एक तेज ध्वनि के साथ, गुरूजी ने अपनी आँखें खोली और सीधे खड़े हो गये। हम सब की तरफ देखे बिना ही, कमरे से बाहर चले गये। गुरूजी का यह रुप असाधारण था और हममें से किसी में भी इतनी हिम्मत नहीं थी, कि हम उन्हें पुकार सकें। उस समय रात्रि के साढ़े तीन बजे थे, हमारे मन, अब शान्त थे, हम सोने की कोशिश करने लगे।

लेकिन सच तो यह है, कि किसी व्यक्ति का, इस तरह शरीर से बाहर निकलकर जाना, और सवा घन्टे के बाद उसी शरीर में फिर लौट आना, संसारी समझ से परे की बात है।

यह अपने बस की बात, कैसे हो सकती है? यह तो सिर्फ भगवान के हाथ में है, कि वह किसी की आत्मा को शरीर से बाहर निकाल, उसे एक नये शरीर में डाल कर, एक नया जन्म देता है। परन्तु अपने आप अपने शरीर से बाहर निकल जाना और कुछ समय के बाद, फिर उसी शरीर में लौट आना, बिलकुल **अविश्वस्नीय** सी बात लगती है। लेकिन गुरूजी ने ऐसा हम चारों शिष्यों के सामने किया।

भगवान ही की तरह उनका, अपनी आत्मा पर इतना नियन्त्रण और अधिकार है......!! मैं नहीं कह सकता, कि किसी भी जन्म में मैंने, इस तरह का अनुभव पाया हो। दिमाग और बुद्धि जो अब तक हमारे जीवन का आधार है, सब धराशाई हो गया और मैं देखता ही रह गया। इतनी बड़ी बात और इतनी सरलता से कर दी गुरूदेव ने, और वो भी पूर्ण प्रेक्टीकल रुप में..!!

आफरीन गुरूदेव...... ।।

साधु और तपस्वी भी, समाधि की अवस्था में जाने से पूर्व, उचित समय और उचित स्थान का, प्रबन्ध करते हैं। इसके साथ-साथ कुछ शिष्यों को, नियन्त्रण सौंप कर, यह क्रिया करते हैं। समाधि के लिये उचित जगह का चुनाव, समाधि पर बैठने के लिये उचित मुद्रा जैसे पद्मासन आदि और उसके बाद प्राणायाम की क्रिया शुरु होती है। यह कार्य कुछ मिनटों तक करने के उपरान्त ही एक साधक, अपनी समाधि की अवस्था में जाता है। अब तक जितना मैं समझ सका हूँ, कि उनकी आत्मा, शरीर के ही किसी चुने हुए स्थान पर, स्थिर रहती है।

लेकिन गुरूजी ने ऐसे किसी नियम या तरीके को नहीं अपनाया। गुरूजी मक्की की रोटी और सरसों का साग खा रहे थे, और खाते-खाते एक चम्मच साग अपने मुँह में रखा और उसे चबाने लगे। अचानक चबाना बन्द कर दिया और तभी गुरूजी ने

‘ॐ’ शब्द का उच्चारण किया और कोई अन्य और दो शब्द भी बोले, अचानक उनके दोनों हाथ नीचे उनकी गोद में लटक गये।

यह सब मेरे तथा मेरे गुरु भाई आर. पी. शर्मा जी, सीताराम जी, तथा सनेत (हिमाचल) के सुरेश, हम सब के सामने हुआ और इसमें कुछ सैकिण्ड का ही समय लगा।

-------असम्भव.........

मैंने न तो कभी सुना, न कभी देखा और न ही कहीं पढ़ा। जैसा कि गुरुजी ने किया। बस सोचा... और सैकिंण्ड में शरीर से बाहर निकल गये और वह भी खाना खाते-खाते.......!!

मैं बचपन से बहुत जिज्ञासु हूँ, मैं बहुत से महा-पुरुषों से मिला, लेकिन मैंने ऐसा पहले कभी नहीं देखा।

करीब सुबह छः बजे, गुरुजी जब कमरे में वापिस आये तो हम सब को डाँटने लगे----

‘‘ये क्या किया तुमने, घी लगा-लगा कर भर दिया मुझे,
क्या समझा था......कि गुरु मर गया है?
इतना घी तुमने मेरी बाजुओं और
टाँगों पर लगाया।’’

वे आगे बोले---

‘‘मैं क्या कर रहा हूँ, यह देखने तुम मेरे पीछे नहीं आ सकते थे, क्या मैंने पहले तुम्हें, ये सिखाया नहीं था?’’

‘‘गुरुजी हमें क्षमा कर दीजिए।’’ हम सिर्फ इतना ही कह सके, ‘‘गुरुजी यह हमारे लिए एक नया अनुभव था, हमारी बुद्धि ने काम नहीं किया। कृपा कीजिए गुरुदेव..., हमें क्षमा कर दीजिए...।’’

अगर यह इतना ही आसान है कि इस तरह से शरीर से बाहर निकल जाना और फिर दुबारा उस शरीर में वापिस आना, तो इनसे पहले ऐसा किसी ने क्यों नहीं किया था। स्पष्ट है कि गुरुजी स्वयं् भगवान हैं.....।

जब हम लोगों ने यह निर्णय लिया, कि गुरुजी का हम सुबह साढ़े तीन बजे तक इन्तज़ार करेंगे..., तो उस समय आर. पी. शर्मा जी, गहरी निद्रा में चले गये। जब गुरुजी साढ़े तीन बजे अपने शरीर में वापिस आये और कमरे से बाहर चले गये, तो शर्मा जी भी उठ गये। वे बहुत आनन्दित लग रहे थे। उन्होंने सोई अवस्था में जो कुछ देखा, उसका पूरा वृतान्त हमें बताया।

शर्मा जी ने बताया, कि वहाँ एक बड़ी सी गुफा थी, उसमें बहुत से तपस्वी थे, जिनकी लम्बी-लम्बी दाढ़ी और लम्बे-लम्बे बाल थे वह तपस्वी, उनके रास्ते के दोनो तरफ बैठे थे। गुरुजी सीधा जा रहे थे और वे अपना सिर झुकाकर तथा अपने दोनो हाथ ज़मीन की तरफ किये हुए, गुरुजी का अभिवादन कर, उन्हें प्रणाम कर रहे थे। लेकिन

गुरूजी उनकी तरफ नहीं देख रहे थे और इन सबसे बेखबर, चुपचाप आगे चले जा रहे थे।

शर्माजी ने आगे बताया, कि वे गन्तव्य बिन्दु नहीं देख पाये, जहाँ पर गुरूजी गये थे। उससे पहले ही वह जाग गये।

अब मैं गहरी सोच में पड़ गया। गुरूजी उस गुफ़ा में जा रहे थे, जहाँ तपस्वी तप कर रहे थे। जैसे ही गुरूजी ने वहाँ प्रवेश किया, उन्होंने उनकी उपस्थिति महसूस की तथा अपनी साधना रोक, उन्हें झुककर अभिवादन तथा प्रणाम किया। वे तपस्वी सैंकड़ों वर्षों से उस गुफा में तप कर रहे होंगे, ज़ाहिर है कि वे भी सिद्ध पुरूष ही होंगे। उन्होंने गुरूजी को देखा, पहचाना और प्रणाम किया?

***क्या गुरूजी वोहीं तो नहीं, जिनके लिये ये तपस्वी, बैठे हुए तप कर रहे हैं......
...??***

.....ये तो सिर्फ गुरूजी ही बता सकता हैं।

68. जब चन्दरभान की पत्नी को, एक पुत्र का आशीर्वाद दिया।

एफ. सी. शर्मा जी, गुरूजी के प्रारम्भिक शिष्यों में से एक हैं और आज भी उन्हीं के साथ, जुड़े हुए हैं। उनकी धर्मपत्नी भी धार्मिक विचारों वाली हैं। वे अपना अधिकतर समय अपने घर में ही, सेवा के लिये बिताते हैं। सभी बड़े दिन, जैसे गुरु पूर्णिमा, महाशिवरात्रि, गणेश चतुर्थी और बड़े वीरवार पर, गुड़गाँव आकर सेवा करते हैं। लोग उन्हें पूरा सम्मान देते हैं और उनसे गुरूकृपा माँगते है।

चन्दरभान, एफ. सी. शर्मा जी का एक नज़दीकी दोस्त है। एक दिन उसने शर्माजी से प्रार्थना की, कि वे गुरूजी को अपने साथ लेकर उनके घर आयें। शर्मा जी ने उसे आशीर्वाद दिया और गुरूजी को साथ लेकर उसके घर गये।

तब उसकी पत्नी गर्भवती थी और गुरूजी को अपने घर में देख वह बहुत खुः श हुई तथा उसने गुरूजी के लिए चाय बनाई और बड़े भक्तिभाव से उनके समक्ष लेकर आयी। मैं नहीं कह सकता क्यों, लेकिन गुरूजी भी बहुत खुः श हुए।

गुरूजी ने उसकी तरफ देखा और कहा,

''कल सुबह आठ बजे, तुम्हें एक पुत्र की प्राप्ति होगी।''

उस दिन 7 जुलाई 1974 का दिन था। अगले दिन, 8 जुलाई 1974 को, सुबह के ठीक आठ बजे ही, उसने एक खूबसूरत पुत्र को जन्म दिया। उन्होंने उस लड़के का नाम विकास रखा और अब वह लगभग 35 वर्ष का है। वह खुः शहाल है और अपने माता-पिता की सेवा करता है।

जब मैं शर्माजी के नये घर में, गृह प्रवेश के अवसर पर गया, तो वहाँ चन्दर भान अपने पुत्र को लेकर आया और मुस्कराते हुए मुझे प्रणाम किया तथा कहने लगा कि यह देखो..... गुरूजी ने मुझे, मेरे जीवन का ये खूबसूरत उपहार दिया है।

विकास वाकई गुरूजी द्वारा दिया गया, एक खूबसूरत उपहार है और अपने माँ-बाप की सेवा करने वाला है।

69. जब मैंने गुरूजी का चेहरा, दुगने आकार में देखा।

महा-शिवरात्रि का शुभ अवसर था और सभी शिष्य गुड़गाँव स्थान पर थे। हमेशा की तरह, असंख्य लोग, देश-विदेश से, इस अवसर पर गुड़गाँव आये हुए थे तथा स्थान के सभी कमरे, लोगों से भरे हुए थे।

बाहर मुख्य सड़क के फुटपाथ पर, लोगों की लम्बी-लम्बी क़तारें लगी हुई थी, परन्तु वहाँ पूर्णतयाः शान्त वातावरण था। गुरूजी ने मुझे आदेश दिया, कि तुम अपने गुरूभाईयों के साथ जाओ और जहाँ पर लोग, गुरु दर्शन के लिए इन्तज़ार कर रहे हैं, वहाँ की 'परिक्रमा' करके आओ। ('परिक्रमा' का अर्थ है-- जहाँ से लोगों की लाईन शुरु होती है और जहाँ पर समाप्त होती है, वहाँ तक लोगों को देखते हुए जाओ और फिर वहाँ से वापिस आओ।)

मैंने स्थान से चलना शुरु किया और चलते-चलते करीब दो किलोमीटर दूर तक चला गया, जहाँ तक लोगों की लाईनें लगी हुई थी। मैंने देखा, कि वहाँ केवल एक लाईन ही नहीं, बल्कि वहाँ तो पाँच-पाँच लाईनें लगी हुई थी। हज़ारों की संख्या में लोग वहाँ खड़े, अपनी बारी का इन्तज़ार कर रहे थे, परन्तु सभी शान्त व प्रसन्न थे। स्थान के सामने पार्क में ही क्या, सड़क पर भी सैंकड़ों की संख्या में, लोग गुरूजी के दर्शनों की एक झलक पाने का, इन्तज़ार कर रहे थे। वे धीरे-धीरे स्थान की तरफ बढ़ रहे थे, सभी के दिमाग में केवल एक ही विचार था, कि उन्होंने सिर्फ़ गुरूजी के दर्शन करने हैं।

क्या उनका लक्ष्य है......?

वाह.........

मैं ऐसे गुरूभक्तों का, जिनका मेरे गुरूजी के प्रति इतना प्यार और इतनी भक्ति है, प्रसन्नता से स्वागत करता हूँ।

यह सोचकर कि गुरूजी को बता दूं, जो कुछ मैंने बाहर देखा है, मैं अन्दर स्थान के कमरे में गया तो देखा, गुरूजी वहाँ कमरे में नहीं हैं। मैं स्थान के सामने वाले कमरे में चला गया। लेकिन वहाँ पहुँचकर, जो कुछ मैंने देखा, वह देखकर तो स्तब्ध रह गया। मैंने देखा, कि गुरूजी बहुत से लोगों के बीच में खड़े हैं, जो कुछ मेरी आँखों ने देखा, वह बिलकुल अविश्वस्नीय था....।

मैंने देखा......

उनका चेहरा और सिर, सभी लोगों से दुगना बड़ा था।

मैंने अपने सिर को झटका दिया, आँखें बन्द की और दुबारा आँखें खोलकर अपने आप को देखा कि, मैं जो देख रहा था वह हक़ीकत थी या फिर मेरा भ्रम.....!! लेकिन वह एक हक़ीकत ही थी।

लगभग एक मिनट तक, मुझे ऐसा ही दिखता रहा। कुछ समय के बाद, गुरूजी अपने असली रुप में आ गये। यह जो मैंने ऊपर कहा है, यह मेरे आध्यात्मिक जीवन का,

एक अभूतपूर्व अनन्य अनुभव (Exclusive Experience) *है। न इससे पहले और न ही कभी बाद में, ऐसा हुआ।*

सत्तर के दशक में जब मैं, गुरूजी के पास आया और उन्होंने मुझे अपना शिष्य बनाया, उससे पहले, मैं कई संतों से मिला था और मुझे उनका सान्निध्य भी प्राप्त हुआ था। ज़ाहिर है, उन लोगों के साथ रहकर भी मैंने बहुत से चमत्कार देखे होंगे। परन्तु उसमें से कोई एक-आध भी, गुरूजी के चमत्कारों से मेल नहीं खाता था।

उनसे मैंने जो कुछ भी सीखा था, वह केवल सिद्धान्तिक (Theory) *था, लेकिन गुरूजी तो स्वयं् कर्ता हैं। जो कुछ उनसे चाहो वह वास्तविक रुप से कर देते हैं, अर्थातः वह पूर्णतयाः सिद्धान्तिक* (Theory) *और व्यवहारिक* (Practical) *हैं।*

लोग उनके पास दर्द, बुख़ार तथा अपनी अन्य शारीरिक अथवा कई अन्य परेशानियाँ लेकर आते और उनसे ठीक करने की प्रार्थना करते, तो गुरूजी उन्हें तुरन्त, उनकी समस्या से मुक्त कर देते। कुछ लोग ऐसे भी थे, जिन्हें ठीक होने में समय ज़्यादा लगता था। पूछने पर गुरूजी ने बताया, कि अधूरे विश्वास के साथ या मुझे परख़ने के लिए, जो लोग आते हैं उन्हें ठीक होने में समय ज़्यादा लगता है। ये बुड्डे बाबा (भगवान) का अपना तरीका (Style) *है।*

ये घटनाऐं ही मेरी धरोहर हैं। इन्हीं घटनाओं से मेरे गुरूजी की महिमा का बखान होता है और मुझे उनके आलौकिक रुप के दर्शन होते हैं। उनका आशीर्वाद पाने के बाद, मुझे नहीं पता कि, मुझे और कुछ प्राप्त करने की, ज़रुरत रह गई है।

आप धन्य हैं गुरूजी,
आप त्रिलोकी नाथ की तरह
सिर्फ देने वाले हैं।

प्रणाम.... साहेब जी।

70. *जब गुरूजी ने मेरी सिंगापुर की, व्यवसायिक विदेश-यात्रा* (Tour) *रद्द कर दी।*

<u>नई दिल्ली के मायापुरी</u> इलाके में, मेरी एक स्टेनलैस-स्टील के सिंक, बनाने की फैक्ट्री है।

यह उस समय की बात है, जब हम सिंक के लिये, टब (Tub) *तथा ड्रेनेज बोर्ड* (Dainage Board) *अलग-अलग स्टील की दो शीटों से बनाते थे तथा बाद में उन्हें जोड़ते थे। इस तरह के सिंक को, ड्रेनेज बोर्ड-सिंक कहते हैं। टब में बरतन धुलते हैं और बोर्ड पर रखे जाते हैं, सूखाने के लिए।*

मैंने सुना, कि सिंगापुर में एक स्टेनलैस-स्टील सिंक फैक्ट्री है, जो एक ही शीट में से उपरोक्त दोनों चीजें, एक साथ बनाती है। मैं यह तकनीक जानने के लिये बहुत उत्सुक हो गया। यदि यह तकनीक, मैं विकसित कर लेता हूँ, तो हमारी फैक्ट्री का उत्पादन दुगना हो सकता है।

मैंने अपनी फैक्ट्री के जनरल मैनेजर को, मेरे लिये सिंगापुर की उस फैक्ट्री को, देखने की व्यवस्था करने का आदेश दिया। उसने कुछ हफ्तों के पत्राचार के बाद, आख़िर मेरा यह व्यवसायिक विदेश-यात्रा (Tour) *का कार्यक्रम तय करा दिया।*

सब कार्यक्रम अपने तय तरीके से होना था----

- *सिंगापुर पहुँचने पर, वहाँ की फैक्ट्री के किसी ऑफिसर को मुझे लेने एअरपोर्ट आना था और वहाँ से उस होटल तक ले जाना था, जहाँ मेरे लिए ठहरने की व्यवस्था की गई थी।*
- *ऑफिसर को मुझे लेने दुबारा होटल आना था, ताकि वहाँ से मुझे आदर सहित अपनी फैक्ट्री ले जाया जा सके तथा व्यापार सम्बन्धित बातचीत हो सके।*
- *तद-उपरान्त, अपनी टीम के साथ मुझे, उस स्थान पर ले जाना था, जहाँ उस स्टील सिंक का उत्पादन होता था तथा मुझे वह डाई भी दिखाई जानी थी, ताकि मैं उसके डिज़ाईन को भी अच्छी तरह से समझ सकूं।*

इस तरह से मेरा काम पूरा होता और मैं अपनी यात्रा समाप्त कर, वापिस आ जाता।

अतः यात्रा से पहले मैं गुड़गाँव गुरूजी के पास, आशीर्वाद लेने पहुँचा। मैंने गुरूजी को प्रणाम किया तो गुरूजी बोले----

''तो अब मेरा शिष्य धोखा देने जा रहा है, अपने बच्चों को......।''

मुझे कुछ समझ नहीं आया। मैंने गुरूजी से पूछा, ''कौन सा धोखा गुरूजी...?'' मैंने तो ऐसा कुछ नहीं किया, जिससे किसी को कोई नुकसान हो और न ही मैं कभी ऐसा करुंगा ही.....।

गुरूजी ने कहा---

''यह धोखा ही है बेटा, तुम सिंगापुर जा रहे हो, हज़ारों सिंक के ख़रीदार बन कर, लेकिन तुम जानते हो कि तुमने सिंक नहीं ख़रीदने..। इसका मतलब, तुम उनकी बिजनेस की उम्मीदों को नष्ट करने जा रहे हो। वे नहीं जानते कि तुम किस उद्देश्य से उनके पास आ रहे हो। वे यह भी नहीं जानते कि तुम अन्दर से क्या चाहते हो। इसलिये यह धोखा ही है।''

मैं बोला, ''मैं समझ गया गुरुजी। लेकिन गुरुजी वे मेरे बच्चे कैसे हो गये?'' गुरुजी बोले----

''जब हम विदेशों के लिये विमान से, उड़ान भरते हैं, तो वह विमान धरती के जिस-जिस हिस्से के ऊपर से, होकर निकलता है, वह हिस्सा मेरे परिवार में शामिल होता जाता है। इस लिये वह परिवार भी, तुम्हारे बच्चों में शामिल हो गया है।''

गुरुजी, मेरा आपको कोटि-कोटि प्रणाम है। आपको सम्पूर्ण ज्ञान है, आपके समझाने की शधि **'सर्वोच्च'** है। मेरा ये सौभाग्य है, कि मुझे आपका शिष्य होने का अवसर मिला। मैं तो ऐसा स्वप्न में भी नहीं सोच सकता था। अतः मैंने अपना सिंगापुर की विदेश-यात्रा (Tour) का कार्यक्रम रद्द कर दिया।

मैंने गुरुजी से फिर पूछा, ''गुरुजी, मुझे उस डाई का डिज़ाईन कैसे मिलेगा...?

गुरुजी बोले----- **''मैं बताऊंगा तुम्हें...।''**

करीब तीन हफ़्ते बीत गये। एक दिन मैं, स्थान के साथ वाले छोटे कमरे में आराम करने के लिये लेटा हुआ था कि मेरी आँख लग गई और मैं सो गया। स्वप्न में मुझे डाई का एक डिज़ाईन दिखा, उठकर तुरन्त मैंने उसे कागज़ के टुकड़े पर उतार लिया।

अगले दिन मैंने अपने फोरमैन रतन सिंह, जिसकी आयु लगभग सत्तर वर्ष से ऊपर होगी और उसे डाई बनाने का भरपूर ज्ञान था, बुलाया और कहा, कि वह इस डिज़ाईन की डाई बनाना शुरु करे। उसने तभी जवाब दिया, कि डिज़ाईन ठीक नहीं है। मैंने उससे कहा कि मैंने इसी ड़िजाईन की डाई बनाने का निर्णय लिया है अतः वह इसे बनाने का काम शुरु करे। वह फिर बोला इसमे बहुत अधिक पैसा लगने की सम्भावना है, अतः आप इस तरह का जोखिम न लें। मैंने उससे कहा, ''यह मेरा आखिरी फैसला है और मैं यह जोखिम उठाने के लिए तैयार हूँ। बस तुम आदेश का पालन करो।''

इस काम में, करीब छः से आठ महीने का समय लग गया और मेरे सामने हू-ब-हू वैसी ही डाई तैयार थी, जैसी मैंने अपने स्वप्न में देखी थी।

हमने वह डाई मशीन पर परीक्षण के लिये लगाई और अपनी साँसें रोककर प्रैसमेन को आदेश दिया कि वह उसे चलाये।

ओह-------- अभियान सफल हुआ।-----

भारत में पहली बार, एक शीट से सिंक का टब तथा ड्रेनेज बोर्ड (Dainage Board) बन कर तैयार था।

गुरुजी ने एक बार मुझे कहा था :

''ड़िजाईन तुम्हें मैं दूंगा'' और उन्होंने वह कर दिया।

ऐसे इंजीनियर हैं मेरे गुरुजी...!!,
सिर्फ और सिर्फ गुरुजी...।।

प्रणाम गुरुजी......,
गुरुजी, मुझे अपनी कृपा का दान दो ।।

71. जब महाराज-किशन को गुरूजी ने उनके स्नान करने तक, उनका इन्तज़ार करने का आदेश दिया।

<u>महाराज-किशन</u> गुरूजी के प्रिय शिष्यों में से एक हैं। गुरूजी अक़्सर उन्हें ''रामाकृष्णा'' के नाम से ही बुलाते थे

महाराज-किशन, गुरूजी के पास उनके कमरे में थे कि अचानक गुरूजी उठे और बोले---

''बेटा, मैं नहाने जा रहा हूँ,
तब तक तुम यहाँ मेरा इन्तज़ार करो।''

महाराज-किशन ने, किसी से सुन रखा था कि जब गुरूजी नहाने जाते हैं तो समय बहुत लगाते हैं। वे तुरन्त बोले, ''गुरूजी, मैं घर जाना चाहता हूँ।'' लेकिन गुरूजी बोले---

''मैंने तुम्हें कुछ देना हैं...।
इसलिए तुम मेरे वापिस आने तक रुको।''

परन्तु महाराज किशन ने जिदद् की और कहा, कि उसे रात नौ बजे तक दिल्ली पहुँचना है, इसलिए वह किसी ओर दिन आकर ले लेगा और वह चला गया।

उस दिन महाराज-किशन के पास, बहुत सा 'नगद पैसे' भी थे। वह बस में, दिल्ली जाने के लिये सवार हुआ, लेकिन वह बस रास्ते में ही खराब हो गई। बस के सभी यात्री दूसरी बस में सवार हुए, लेकिन वह बस भी रास्ते में खराब हो गई। उन्हें मजबूरन तीसरी बस में बैठना पड़ा, परन्तु उस बस ने उन्हें पटेल नगर के बजाय, कशमीरी गेट उतारा।

रात का समय था और उन्हें घर पहुँचने के लिए, किसी स्थानीय वाहन की आवश्यक्ता थी। अतः उन्होंने वहाँ से पंजाबी बाग के लिए एक ऑटो रिक्शा लिया। ऑटो ड्राईवर ने, रास्ते में अपना ऑटो रोका और किसी दूसरे व्यक्ति को, यह कह कर कि, वह उसका दोस्त है, अपने साथ आगे बिठा लिया।

कुछ समय बाद उसने दुबारा, अपना ऑटो रोका और कहा कि उसका रिक्शा खराब हो गया है। तभी वहाँ से अचानक एक पुलिस कॉन्स्टेबल गुज़रा। उसने उसके, इस तरह रास्ते में रिक्शा रोकने पर ऐतराज़ किया, तो वह वहाँ से रिक्शा स्टार्ट करके चल दिया।

लेकिन करीब दो-तीन मील चलने के बाद, एक सुनसान ज़गह पर आकर, उसने फिर अपना रिक्शा रोक दिया और कहा कि उसके रिक्शे का इंजन खराब हो गया है। महाराज-किशन को उसकी इस हरक़त ने शंका में डाल दिया और वह डर भी गया।

क्योंकि उसके पास बहुत अधिक संख्या में 'नगद पैसे' थे, अतः उसने गुरूजी से प्रार्थना की, कि कृप्या उसकी रक्षा करें।

तभी एक चमत्कार हुआ। दो मिनट में ही सामने से पैट्रोल पुलिस के जवान आ गये। एक ऑफिसर घोड़े की पीठ से नीचे उतरा और रिक्शा चालक से, रास्ते में रुकने का कारण पूछा। इस पर महाराज-किशन ने उसके शंकाशील व्यवहार और उसके इरादे के बारे में, शिकायत की तथा सहायता माँगी। घुड़सवारों ने उसका लाईसैंस ले लिया और उसे हिदायत दी कि वह सवारी को छोड़कर, वापिस थाने में आकर रिपोर्ट करे।

महाराज-किशन नगद पैसे के साथ सुरक्षित रुप से पिछली रात नौ बजे के बजाय अगले दिन सुबह के चार बजे अपने घर पहुँचा।

अगले दिन जब महाराज-किशन ने गुरुजी को प्रणाम किया तो गुरुजी ने मुस्कुराते हुए पूछा---

''क्यों बेटा, नौ बजे पहुँच गया था कल...?''

बसों को खराब करके, गुरुजी ने उसे, यह सबक दिया कि उसने गुरुजी की इन्तजार करने की बात न मान कर गलती की थी और स्वयं, पुलिस के घुड़सवार बनकर, उसकी रक्षा भी की तथा उसे सुरक्षित घर भी पहुँचा दिया।

72. गुरूजी के दाहिनी हथेली में, जब एक दीप्तिमान ठोस 'चक्र' पहली बार देखा।

<u>गुरू पूर्णिमा के दिन</u> चल रहे थे, एक दिन देर शाम की बात है, स्थान लोगों की भीड़ से, ख़चाख़च भरा हुआ था। लोगों की संख्या सैंकड़ों में नहीं, हज़ारों में थी। गुरूजी ने मुझे आदेश दिया कि मैं उनके पीछे आऊँ और वे मुझे स्थान की पीछे फ्रिज़ वाले कमरे में, ले गये।

गुरूजी बोले----

''तुम तैयार हो जाओ,
मैं तुम्हें कुछ दिखाना चाहता हूँ।''

मुझे अंदाज़ा हो गया था, कि मुझे अब कोई बहुत बड़ी चीज़ मिलने वाली है।

उन्होंने मुझे सतर्क किया और कहा----

''बेटा, ऐसा कभी-कभी ही होता है,
कि मेरे हाथ में यह 'चक्र' आ जाता है
और 'ॐ' अदृश्य हो जाता है।''

गुरूजी ने मुझे अपनी हथेली दिखाई। मैं अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं कर पा रहा था।

गुरूजी की दाहिनी
हथेली के बीचों-बीच,
करीब दो इन्च व्यास का,
एक ठोस दीप्तिमान 'चक्र',
जिसमें से एक
टयूब लाईट जैसी सफेद
रोशनी निकल रही थी,
विराजमान था।

100% ***अ-कल्पनीय......!!***

इसकी कल्पना करना भी सम्भव नहीं था। ऐसा न कभी, ज़िन्दगी में देखा और न ही कभी सुना।

'ॐ' के दर्शन तो गुरूजी ने कई लोगों को कराये हैं लेकिन इस 'चक्र' के बारे में कभी किसी ने नहीं बताया। कुछ शिष्य जिनमें श्री एफ. सी. शर्मा और डा. शंकर-नारायण हैं, जिनसे मेरी बात हुई, उन्होंने भी इसके दर्शन किये हैं। इनके अलावा कई अन्य शिष्यों ने भी इस 'चक्र' के दर्शन किये होंगे, लेकिन मैंने ऊपर केवल दो शिष्यों के नामों का ही उल्लेख किया है।

साधना, तपस्या और अनन्य भक्ति के द्वारा ही, इस लक्ष्य को पाना सम्भव है, तभी शरीर के किसी विशेष भाग पर, कुछ इस प्रकार के चिन्ह प्रगट होते हैं।

ज्ञान का होना, एक ऊँची बात है लेकिन वह ज्ञान कहाँ से प्राप्त हुआ, यह जानना भी अत्यावश्यक है। किसी ने लिखा और मैंने पढ़ा, यह भी ज्ञान है। लेकिन उसमे से उपजी शंकाओं को दूर करने के लिए प्रमाण की आवश्यकता होती है। लेकिन ऐसी कोई जानकारी, जो जिसके स्वयं के ऊपर गुज़री हो, उसी के मुँह से सुनी हो, बिलकुल शंका-रहित होती है। उसके लिये किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती।

मैंने यहाँ जिस बारे में ज़िक्र किया है वह न तो कहीं से सुना और न ही किसी किताब में ही पढ़ा। ये सब मैंने गुरूजी के मुँह से सुना और स्वयं अपनी आँखों से देखा है और वह भी उनके विशेष मूड में तथा अति विशिष्ट समय पर।

गुरूजी के हाथ में ***'ॐ'*** *का होना, आध्यात्मिक तौर पर एक बहुत बड़ी उपलब्धि है, लेकिन* ***'चक्र'*** *का होना तो और भी बड़ी बात है। जहाँ तक मेरे ज्ञान का प्रश्न है, मैं नहीं जानता कि संसार में किसी और को कभी इस पद की प्राप्ति हुई हो।*

गुरूजी ने कहा---

''एक अथवा अनेक वर्षों में एक बार मेरे हाथ में यह 'चक्र' आता है। जब यह आता है, तब मेरे हाथ से 'ॐ' अदृश्य हो जाता है। जो शिष्य इसके दर्शन कर लेते है वे अपने आध्यात्मिक सफ़र का समुद्र पा लेते हैं, इसलिए इसका महत्व 'सर्वोच्च' है।''

73. *मेरी पत्नी की शिकायत पर, जब गुरूजी ने मेरे माथे पर स्ट्रोक्स (Strokes) लगाये।*

एक बार मैं अपनी पत्नी तथा बेटियों के साथ, रात के समय गुड़गाँव गया। वहाँ पहुँच कर हमने गुरूजी के पवित्र चरणों में प्रणाम किया।

अचानक मेरी पत्नी ने गुरूजी से मेरी शिकायत की, ''गुरूजी, अपने बेटे को तो देखिये...!! रास्ते में इन्होंने, सड़क पर तीन व्यक्तियों को करीब़-करीब़ मार ही दिया होता।।''

गुरूजी ने पूछा कि क्या बात हो गई? तो वह बोली, ''ये कार चलाते समय सो रहे थे'' जब इन्हें उठाया तो इन्होंने, एक साईकल रिक्शा, जिसमें दो सवारियाँ भी थी और जो हमारी साईड़ पर ही आगे-आगे जा रहा था, से केवल चार फुट की दूरी पर ही 'ब्रेक' लगाई।

गुरूजी ने मेरा सिर पकड़ा और मेरे माथे पर स्ट्रोक्स लगाने शुरु कर दिये। गुरूजी की उंगली ऐसे लग रही थी मानों वह कोई लोहे की छड़ हो।

एक........ दो........ तीन.........
जब तक इक्क़ीस नहीं हो गये,
वे मारते ही चले गये....।।

मेरी हालत ऐसी हो गई, जैसे मैं आकाश में घूम रहा हूँ। वह दर्द बहुत असहनीय था। कुछ देर के बाद अपने होश में वापिस आया और तय किया कि----
'अब गाड़ी चलाते हुए कभी नहीं सोऊँगा।'

तभी मेरे दिमाग में अचानक एक ख़याल आया और मैंने गुरूजी से पूछा, ''गुरूजी, अगर मैं सो रहा था तो कार की ब्रेक किसने लगाई?''

गुरूजी ने अधिकाराना अंदाज में, अपनी छाती पर हाथ रखते हुए कहा---
''ब्रेक..., मैंने लगाई थी''

मैंने आगे फिर पूछा, ''गुरूजी, आप तो जानते ही हो कि मैं सो गया था, तो कार कौन चला रहा था?'' गुरूजी दुबारा बोले---
''बेवकूफ.., कार मैं चला रहा था।''

मैंने बड़े हल्के-फुल्के अंदाज में, अपने भगवान के चमक्ते तेजपूर्ण चेहरे की तरफ देखते हुए कहा, ''गुरूजी, जब कार आप चला रहे थे, ब्रेक भी आपने लगाई तो मेरी नींद क्यों खराब की? मुझे सोने दो ना, गुरूजी......।।''

उन्होंने मुझे प्यार से पुचकारा और अत्याधिक प्यार भी किया।----------
कितने भाग्यशाली हैं हम शिष्य, जिन्हें इन जैसे गुरु मिले। अगर हम गाड़ी चलाते समय सो भी जाऐं, तो वह स्वयं् आकर उसकी कमान सम्भाल लेते हैं। वह उन सभी का भाग्य संवार देते है, जो इनके पास पूर्ण विश्वास के साथ आते हैं।

74. जब मेरी फैक्ट्री का जनरल मैनेजर, बड़े वीरवार पर, गुरुजी के पास गया।

<u>मेरी फैक्ट्री का जनरल मैनेजर</u> मि. अरोड़ा, एक कृत्रिम मिज़ाज ऑफिसर था, जो अपने काम से काम रखता था।

एक बार हम बैठे हुए, साधारण बातचीत कर रहे थे कि वह बोला, ''सर, अक्सर मैं ये देखता हूँ कि आपके पास लोग आते हैं, आपके चरण छूते हैं, आप भी उन्हें आशीर्वाद देते हैं और वे लोग सन्तुष्ट होकर चले जाते हैं।'' ''वास्तव में, यह सब मेरी समझ में नहीं आ रहा। अगर आप बुरा न मानें तो मैं इस विषय में और अधिक जानना चाहता हूँ।''

उसकी बात का तात्पर्य समझते हुए, मैंने उसे बताया कि मैं गुड़गाँव वाले, गुरुजी का शिष्य हूँ। उन्होंने मुझे बहुत सी आध्यात्मिक शक्तियाँ दी हैं, जिनका मैं लोगों की भलाई के लिए प्रयोग करता हूँ। इसे सेवा कहते हैं वास्तव में यह सेवा...

'भक्ति और साधना का ही, एक मार्ग है'

यह रास्ता मुझे, मेरे गुरुजी ने दिया है, यही कारण है कि लोग मेरे पास आते है।

इसके बाद बहुत दिन निकल गये। एक दिन सुबह-सुबह, मिस्टर अरोड़ा मेरे ऑफिस में आये और कुर्सी पर बैठने के बजाय ज़मीन पर बैठ गये और मेरे चरण छू लिये। उसके व्यवहार में आये, अचानक इस बदलाव को, मैं समझ नहीं सका और उसे कुर्सी पर बैठने के लिए कहा, क्योंकि वह मेरी फैक्ट्री के पूरे स्टाफ़ का, सीनियर ऑफिसर था। ऑफिस में शिष्टाचार व अनुशासन जरुरी है, अतः मैं नहीं चाहता था कि स्टाफ़ यह देखे, कि उनका ऑफ़िसर, अपने ही ऑफ़िस में, ज़मीन पर बैठा है।

उसने कहा कि वह मुझसे कुछ मिनटों के लिये, अकेले में बात करना चाहता है। जिसके लिये मैंने हां कर दी। मि. अरोड़ा ने कहना शुरु किया--------

''सर, उस दिन जब आप, अपने गुरुजी के बारे में बता रहे थे, तो मैं आपकी बात से सहमत नहीं था। इस लिये मैंने सोचा कि, क्यों न मैं भी बड़े वीरवार के दिन, गुड़गाँव गुरुजी के पास जाऊँ, और मैं गया भी तथा मैंने उनके दर्शन भी किये। गुरुजी ने मुझसे पूछा---''तुम क्या चाहते हो?''

*तो मैंने उनसे कहा, ''गुरुजी, मैं पूरी मेहनत से तीन कम्पनियों का काम करता हूँ लेकिन मेरी मासिक आय सात हज़ार रुपये से ऊपर, कभी नहीं आती। मैंने उनसे प्रार्थना की, गुरुजी मुझे आशीर्वाद दीजिए कि मेरी मासिक आय, दस हज़ार रुपये हो जाये। गुरुजी ने मुझे आशीर्वाद देते हुए कहा----**''हो जायेगी।''***

अब वह भावुक होकर बोला :

''सर, इस महीने के अन्त में मुझे दस हज़ार, सात सौ रुपये मिले है।''

सर, मैंने ऐसा सोचा भी नहीं था, परन्तु ऐसा हुआ है और मुझे यकीन है कि यह सब गुरुजी ने ही किया है। उसने आगे बताया, जब मैं गुरुजी से मिलकर, गुड़गाँव से

निकला था तो मैंने मन में सोचा था कि यदि गुरूजी ने मुझे वास्तव में आशीर्वाद दिया है और मेरा काम हुआ, तो ऑफिस में आकर मैं आपके चरण छू लूंगा और आज मैं वही कर रहा हूँ।

यह तो सिर्फ एक उदाहरण है। ऐसे हज़ारों अन्य लोगों के साथ भी ऐसा ही हुआ है, जिनके भाग्य, गुरूजी ने संवारे और वे सभी उनकी कृपा-पात्र बने।

मेरे प्रभु आप धन्य हैं -------

''आपको, मेरा प्रणाम है''

75. जब मानसिक रूप से बीमार राज अरोड़ा, जो प्रेत-ग्रसित था, हिंसात्मक हो गया।

गुरूजी ने मुझे, पंजाबी बाग स्थित मेरे निवास स्थान पर, आध्यात्मिक शक्तियों द्वारा, सेवा करने के लिये आशीर्वाद दिया है। मैं छुट्टी के दिन, स्थान पर आये लोगों की, शारीरिक और मानसिक बीमारियों को, गुरूजी द्वारा दी गई आध्यात्मिक शक्तियों का प्रयोग करके, दूर करता हूँ। इसको सेवा कहते हैं, यही मेरी भक्ति और साधना है।

एक दिन की बात है, लगभग छः फुट लम्बा नवयुवक, जिसे उसकी बहन और माँ इलाज के लिये, स्थान पर लेकर आईं। उस समय मैं, स्थान पर सेवा के लिये बैठा हुआ था। वह मेरे सामने सोफे पर, एक हीरो की तरह बैठ गया। वह महिलायें नीचे कारपेट पर बैठीं और मुझे उस नवयुवक की समस्या के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि वह कभी-कभी बहुत हिंसात्मक हो, आपे से बाहर हो जाता है। उसे सम्भालना भी बहुत मुश्किल हो जाता है। उन्होंने प्रार्थना की, गुरूजी हमें इस पीड़ा से मुक्त कीजिये।

तभी उस नवयुवक ने, सोफ़े पर बैठे हुए ही, मुझे बड़े गन्दे लहज़े में सम्बोधित किया, मेरी बेइज्ज़ती की तथा मुझे चुनौती (Challenge) भी दी। मैंने उसे शान्त रहने के लिये कहा, लेकिन वह वहाँ से उठा और मेरे सिर के पास आकर खड़ा हो गया तथा मुझे धमकियाँ देने लगा। उस समय स्थान का पूरा कमरा, लोगों से भरा हुआ था, यह देखते हुए उन महिलाओं ने मुझसे मॅफ़ी माँगी और ज़बरदस्ती, उसे वहाँ से लेकर चली गई। मैं उन लोगों को देखता ही रह गया।

अगले दिन मैं गुरूजी के पास गया और उन्हें उस नवयुवक द्वारा की गई, अपनी बेईज्ज़ती तथा दी गई चुनौती के बारे में बताया। जब मैं बता चुका तो गुरूजी बोले---**''बेटा, शैतान को सिर पर नहीं चढ़ने देना, तू डर गया था...''**

गुरूजी ने मुझसे आगे कहा---**''तू मेरा शिष्य है और कोई भी शैतान तेरे से ज़्यादा बलवान नहीं हो सकता...।।''**

मुझे सारी बातें स्मरण हो आईं..., वास्तव में उस नवयुवक का गठीला शरीर देखकर, मैं डर ही गया था।

क्या बात है------!!

गुरूजी तो पूर्ण सिद्ध व त्रिकालदर्शी हैं।
वे गुड़गाँव में बैठे हुए सबकुछ देख रहे थे-----

अगले शनिवार,

मैं स्थान पर सेवा कर रहा था। वह नवयुवक दुबारा आया और उसने फिर, ठीक वैसा ही व्यवहार किया, जैसा पिछले शनिवार को किया था। तब मुझे गुरूजी की कही बात याद आई। जब वह अपनी हद् पार कर गया, तब मैं उठा और अपनी लुंगी को सम्भालते हुए बोला, ''अब गाली दे दुबारा...।'' अब वह गाली देने के बजाय एकदम नर्म पड़ गया। मैंने भी बिना समय गवांए, उसे पकड़ा और पीटना शुरु कर दिया और

आध्यात्मिक तरीके से दाँये-बाँये तब तक मारता रहा, जब तक उसका खून नहीं निकलने लगा। उसके बाद मैंने रुई का एक टुकड़ा लिया, उसके खून को साफ किया तथा उसे जल पिलाया और उसे अपने बिस्तर पर लिटा दिया। करीब़ तीस मिनट बाद, वह वहाँ से उठा और एक आम साधारण व्यक्ति की तरह चला गया।

अगली बार, जब वह मुझे क्लब में मिला, उस समय मैं अपनी टेनिस की ड्रेस में था। मैंने उसे बुलाया और पूछा कि तुम दुबारा क्यों नहीं आये? वह बोला, ''आपने मुझे बहुत पीटा'' मैंने उसे कहा, ''और क्या करता मैं..., पीटा ही है ना और तो कुछ नहीं...?'' वह बहुत नम्र तथा सभ्य व्यक्ति लग रहा था, बोला कि अब वह बिलकुल ठीक है और उसे अब किसी तरह की कोई बीमारी नही है।

यह एक बहुत बड़ा चमत्कार था, कि एक पागल लड़का, जो अपनी माँ व बहन के लिये मुसीब़त बना हुआ था, ठीक हो गया और एक आम आदमी की तरह, अपना व्यापार सम्भाल लिया और अपने परिवार का भरण-पोषण करने लगा।

मैं यहाँ बड़े हर्ष के साथ कहना चाहता हूँ, कि इसके बाद, उसने कोई भी मेडिकल इलाज नहीं कराया। आज वह बिलकुल स्वस्थ है और अपने परिवार के साथ, एक आम ज़िन्दगी, जी रहा है। अब वह कोई मानसिक मरीज़ नहीं है, जैसा कि वह स्थान पर आने से पहले था।

उस पागल और हिंसात्मक व्यक्ति को ठीक करने में, गुरूजी ने सिर्फ दो दिन का ही समय लगाया।

- ❖ *पहले शनिवार को उसकी, हरकतों को नज़र अन्दाज़ कर दिया...*
- ❖ *दूसरे शनिवार को उसकी, बीमारी को उसके शरीर से बाहर कर दिया और उसे एक सामान्य नवयुवक बना दिया, ताकि अपने परिवार की पूरी तरह से देखरेख कर सके।*

गुरूजी ने गुड़गाँव बैठे-बैठे ही, यह सारा काम कर दिया, जो समझ में आने वाला नहीं था।

प्रणाम..........

हे गुरुदेव ....

76. गुरूजी ने कहा, ''बेटा, मैं तुम्हें कभी भी, कहीं भी, जब चाहूँ देख सकता हूँ।''

उस दिन, क्या परम-आनन्द-पूर्ण दिन था, गुरूजी अपने कमरे में प्रसन्नचित मुद्रा में बैठे, हम सबका मनोरंजन कर रहे थे। इस तरह का माहौल, हम सब के लिए कभी-कभी ही बन पाता था।

हम आठ-नौ शिष्य गुरूजी के पास बैठे, बातें कर रहे थे, हंस रहे थे तथा आपस में सवाल-जवाब भी कर रहे थे। ऐसा लग रहा था, मानों भगवान स्वयं धरती पर उतर आया हो और एक आम इन्सान की भाँति व्यवहार कर रहा हो तथा हमारी ज़िन्दगी को प्रकाशमान कर, उसमें खुशियाँ बिखे़र रहा हो।

हम सब इस परम-आनन्द का सुःख लेने में मस्त थे कि, अचानक गुरूजी ने विषय बदल दिया। दीवार की तरफ देखते हुए, एक शराऱत भरी मुस्कुराहट के साथ कहा----

''मेरे शिष्य समझते है....., कि मेरी तस्वीर उलटने से,
मैं उन्हें देख नहीं सकता।''
''बेटा...!!, मैं तुम्हें कभी भी, कहीं भी,
जब चाहूँ देख सकता हूँ।''

उसी समय मेरा एक गुरु भाई, मेरे नजद़ीक आया और मुझसे बोला, ''राजपॉल, तुम्हें समझ में आया कि गुरूजी ने अभी क्या कहा?'' मैंने मुड़कर उसकी तरफ देखा तो वह बोला, ''गुरूजी मेरी तरफ इशारा कर रहे थे। कृप्या आप किसी ओर को मत बताना'' वह आगे बोला, ''कल रात मैं और तुम्हारी भाभी, आपस में बुरी तरह से लड़ रहे थे, लेकिन जैसे ही मैंने ऊपर दीवार की तरफ देखा, तो महसूस किया कि गुरूजी दीवार पर लगी तस्वीर में से, मुझे देख रहे हैं। मुझे शर्म महसूस हुई और मैंने गुरूजी की तस्वीर उल्टी कर दी।''

''पर ताज्जुब की बात तो यह है------
कि हमारी हर गतिविधि पर उनकी नज़र होती है......!!''

मैं और मेरे गुरूभाई आपस में बात करने लगे, कि इनसे तो बचना 'ना-मुमकिन' है।

77. जब गुरुजी ने, अपने शिष्य को, चार महीने के बाद, पराँठा खाने के लिये दिया।

रेनुकाजी में, कई हफ़्तों की लगातार सेवा के बाद, गुरुजी ने अपने कुछ शिष्यों को, सेवा के अन्तिम चरण के लिये बुलाया और सभी, अपनी इस पवित्र यात्रा के लिये, गुरुजी के पास रेनुकाजी चल दिये।

हममें से दो शिष्य, सुबह ही, एक अलग कार में चले गये। उन दोनों का आपस में बहुत नज़दीकी सम्बन्ध था और वे आपस में एक-दूसरे के साथ, बहुत बे-तकल्लुफ (Informal) भी थे। उस दिन बहुत गर्मी थी। दोपहर के समय, वह दोनों करनाल पहुँचे। जब वह बाज़ार से गुज़र रहे थे, तो उन्हें एक बीयर की दुकान नज़र आई और उनमें से एक बोला, ''क्यों न हम बीयर पीते हुए चलें..?'' गुरुजी के पास पहुँचने में करीब छः घण्टे का समय ओर लगेगा और इतना समय हमें सामान्य (Normal) होने के लिये बहुत है। अतः उसने वहाँ से बीयर ले ली। (साधारणतयाः अगर छः घण्टे पहले बीयर पी हो, तो उसकी गंध अथवा कोई अवशेष बाकी नहीं बचते अर्थातः नज़र नहीं आते।)

लेकिन हुआ इससे बिलकुल विपरीत...।।

वे दोनो रेनुकाजी पहुँच कर गुरुजी के कमरे में गये और उनमें से एक, जैसे ही गुरुजी को प्रणाम करने के लिए झुका,

गुरुजी बोले---

''टूठा पी कर आया है, गुरु के सामने...??''

''जा......, और पहले लोगों की लाईन की परिक्रमा करके आ...।''

गुरुजी अपने आप को सीमाओं में इस तरह से छुपाकर रखते थे, कि न तो कोई उन्हें ढूंढ सकता था और न ही समझ सकता था।

रेनुकाजी में रात साढ़े नौ बजे सेवा शुरु हुई और अगले दिन शाम तक चलती रही। इस तरह रेनुकाजी में, सेवा का अध्याय सम्पन्न हुआ।

गुरुजी, रेनुकाजी से वापिस आये और उन्होंने दुनिया को दिखा दिया, कि वे एक लाख से भी ज़्यादा लोगों की भीड़, ऐसी अगल-थलग पहाड़ी स्थान पर भी, बिना किसी व्यक्तिगत निमन्त्रण के, एकत्र कर सकते हैं।

अब वह शिष्य, जिसने बीयर पी थी, घर वापिस आने पर बीमार पड़ गया। वह जो कुछ ख़ाता, उसे उल्टी कर देता। उसने केवल तरल पदार्थ व हल्का ख़ाना शुरु किया, लेकिन वह भी उल्टी हो जाता।

जब ऐसा होना नहीं रुका, तो वह गुरुजी के पास आया और गुरुजी से ठीक करने की प्रार्थना की। गुरुजी बोले---

''ठूठा पीकर आया था गुरु के सामने...''

वह बोला--- ''गुरूजी छः घण्टे पहले, एक बीयर की बोतल पी थी, सोचा था आपके पास पहुँचने तक हज़म हो जायेगी। गलती हो गई गुरूजी, मॉफ कर दीजिये।''

लेकिन.... उल्टियाँ फिर भी नहीं रुकीं।

कई हफ़्ते और फिर महीने बीत गये, लेकिन उसे लगातार उल्टियाँ होती ही रही। मैंने तथा मेरे कई गुरु भाईयों ने गुरूजी से, एक-एक करके उसे ठीक करने की प्रार्थना की, लेकिन उल्टियाँ जारी रही।

अब वह शिष्य बहुत कमज़ोर हो गया और आख़िर वो समय आया, कि वह अपने ऑफ़िस भी नहीं जा सकता था। उसने अपनी पत्नी से सलाह की और अपनी बीमा पॉलिसियाँ इक्कट्ठा कर ली तथा अपनी जायदाद के कागजात और पैसे के बारे में भी, सांसारिक तौर पर निबटारा करने का निर्णय ले लिया। ताकि उसके बच्चों व पत्नी को, बाद में कोई दिक़्कत न आये।

उसका शरीर लगभग 40% (चालिस प्रतिशत) *कमज़ोर पड़ चुका था। तब हमने गुड़गाँव में, आठ-दस शिष्यों की, एक आक़समिक बैठक बुलाई और सबने इस विषय की गम्भीरता को देखते हुए, यह निर्णय लिया, कि हम सब इक्कट्ठे जाकर गुरूजी के चरणों को पकड़ लेंगे और उस शिष्य को जीवन-दान देने के लिये प्रार्थना करेंगे। यदि हम सब मिलकर ऐसा करेंगे, तो विश्वास है कि गुरूजी का दिल पिघल जायेगा और वह उस शिष्य को, जरुर मॉफ कर देंगे और फिर हमने ऐसा ही किया-------*

हम सब मिलकर खड़े हो गये और गुरूजी की प्रतीक्षा करने लगे। जैसे ही गुरूजी अपने कमरे में आये, निश्चित प्रोग्राम के अनुसार, हम सबने एक साथ गुरूजी के चरण पकड़ लिये और मिलकर प्रार्थना करते हुए कहा, ***''हे गुरुदेव, इसे माफ कर दो*-------''**

अब गुरूजी गम्भीर हो गये। स्थान के पीछे फ्रिज़ वाले कमरे में, जहाँ बिस्तर वाला, बड़ा बॉक्स पड़ा हुआ था तथा वहाँ पर मध्यम सी रोशनी थी, हमने देखा कि गुरूजी का चेहरा कुछ बदल सा गया। उन्होंने, उस शिष्य की तरफ देखा और कहना शुरु किया---

''मैंनें तुम्हें भगवान बनाया है। लोग तुम्हारे पास अपने दुःख दूर करवाने के लिए आते हैं, और तुम अपने अन्दर, शैतान धारण करके चले आये... और वो भी अपने गुरु के पास...''

सभी लोग अपनी साँस रोके खड़े थे, कोई कुछ भी नहीं बोल पा रहा था। गुरूजी आगे बोले--- ***''लो जिस शैतान ने, तुमसे गुरु-अवहेलना कराई थी, आज मैं उसी शैतान से ही तुम्हें ठीक कराऊँगा।*** *और...*

तब उन्होंने क्या किया....!!

जो कुछ किया, वह विश्वास करने योग्य नहीं है। पूरे संसार में, इसका दूसरा कोई उद्हारण नहीं मिलेगा। यह एक ऐसा, अनोखा आध्यात्मिक चमत्कार है, जो पहले न कभी देखा और न ही कभी सुना.......।।

उन्होंने अपने चहेते सेवादार बिट्टू को बुलाया और एक चौथाई बोतल (पव्वा) काली रम लाने का आदेश दिया। सभी लोग घ़बरा गये। किन्तु रम की बोतल लाई गई।

गुरूजी ने रम की करीब आधी बोतल, एक स्टील के गिलास में डाली और उसमें थोड़ा सा पानी मिला कर, अपने माथे पर लगाया तथा गिलास, उस शिशय को थमाते हुए आदेश दिया--- ***''ले, एक ही घूंट में पी जा...।।''***

जब गुरूजी, गिलास में रम डाल रहे थे, तो वह शिष्य, मेरे कान में फुसफुसा कर बोला---''राजपॉल, ये मुझे खत्म करने लगे हैं शायद..।।''
वह सोचने लगा ''कि शायद आज उसकी ज़िन्दगी का आख़िरी दिन है। ये मुझे क्या पिलाने लगे हैं, इससे तो मेरी ज़िन्दगी, एक मिनट में ही समाप्त हो जायेगी..!! चार-पाँच महीनों का खाली पेट है, बचुँगा नहीं!''

मैंने कहा, ''भईया, चुपचाप हाँ में हाँ मिला और पी जा, सोचो मत।''
(चिकित्सा विज्ञान को देखते हुए, उसकी सोच गलत नहीं थी)

......हम सब अपनी-अपनी साँस रोके खड़े थे।

<u>यह एक अविश्वस्नीय कार्य था</u>------
एक व्यक्ति, जिसका पेट पिछले चार-पाँच महीनों से खाली हो और जो दाल का सूप तक भी न पचा पा रहा हो, तो क्या वह खालिस रम पचा लेगा....!! वह फट नहीं जायेगा??

सभी शिष्य, एक-दूसरे की तरफ देख रहे थे--------

उस शिष्य के पास, उसे पीने के अलावा और कोई दूसरा रास्ता भी नहीं था।--------

उस शिष्य ने गुरूजी के हाथ से, वह गिलास लिया और एक ही घूँट में पी गया। बड़े प्यारे अंदाज़ में, पूर्ण अधिकार (Authority) *के साथ गुरूजी बोले----****''जा मॉफ़ किया...।''***

उन्होंने आगे आदेश दिया--- ***''अब रसोई में जा और माँ से परांठे लेकर खा, और हाँ, तेरा जितना दिल करे, उतने पराँठें खा ।''***

उसने ऐसा ही किया। माताजी ने उसे एक पराँठा दिया और वह उसने खा लिया, माताजी के दुबारा पूछने पर, उसने एक पराँठा और लिया और चट कर गया। हमारे जीवन में यह एक बहुत बड़ा चमत्कार था।

<u>आश्चर्य है</u> ....,

जिस व्यक्ति ने पिछले चार महींने से, अन्न का एक दाना भी न खाया हो, उसने बिलकुल खाली पेट, दो पराँठे पचा लिये.....!! विश्वास नहीं होता। लेकिन ऐसा हुआ। जिसे एफ. सी. शर्मा जी ने, डा. शंकर-नारायण स्वयं मैंने तथा और भी कुछ शिष्यों ने अपनी आँखों से देखा।

<u>सभी शिष्य अपनी-अपनी आँखें बन्द करके, पहचानने की कोशिश करने लगे कि</u>---

--------आखिर ***गुरुजी हैं कौन...?***

क्या मतलब..........??

एक आदमी, जिसने पिछले चार महीने से कुछ खाया या पिया ना हो, उसे रम (जो आग है) पिला दो, तो वो मरेगा या जियेगा...!! इन्सानी दिमाग से तो, मरेगा ही। लेकिन यहाँ तो इतना भी कह दिया, ***''जा माफ किया. ..''*** *और उसी वक्त पराँठे भी खिला दिये और* ***बन्दा बिलकुल ठीक...।।''***

इसका मतलब ये हुआ कि डर, ज़िन्दगी, मौत, बीमारी और तंदरुस्ती ये सब गुरुजी के लिये, एक जैसी हैं, सिर्फ खेल-तमाशा...। इसका अर्थ है, कि उनको पता था, ये अभी ठीक हो जायेगा। यानि कोई डर या ख़तरा बिलकुल नहीं था इनके लिये।। तो......

मैं क्या जानूं कि ये कौन हैं,

''मनुष्य के भेस में''

- *यह सोचने के बजाय कि ये क्या और कैसे हुआ, सिर्फ ''गुरुजी के बारे में सोचो'', वे क्या-क्या कर सकते हैं।*
- *जो कुछ उन्होंने दर्जन भर लोगों के समक्ष किया, वे पढ़े-लिखे और समझदार लोग थे।*
- *कौन-कौन से अधिकार और शक्तियाँ हैं इनके पास।*

एक ही रास्ता है, इन सच्चाईयों को समझने और हज़म करने का, और वह है, कि गुरुजी से प्रार्थना करें कि वह स्वयं ही हमें, वो बुद्धि व शक्ति प्रदान करें, जिससे कोई बात बने।

मैंने क्या देखा और आपने क्या पढ़ा, छोड़ो इसको...। आप बस गुरुजी की अपार कृपा का आनन्द लो। इसलिये दिमाग जितना कम लगाओगे, समझ उतनी ही ज़्यादा आयेगी।

78.जब एक 18 वर्षीय लड़का पागल हो गया और उसकी आँखों की पुतलियाँ ऊपर की तरफ़ हो गयी।

<u>हमेशा की तरह</u> मैंने, पंजाबी बाग स्थान पर बैठकर सेवा शुरु की। लोग अपनी-अपनी बारी से एक के बाद एक, मेरे पास आते और उनके जाने के बाद, फिर किसी दूसरे व्यक्ति को, मेरे पास भेजा जाता। मैं महागुरु का शिष्य हूँ और उन्हीं ने मुझे, अपना शिष्य बनाया है तथा आदेश देकर, मुझे सेवा करने का अवसर प्रदान किया है।

उस दिन स्थान पर एक नवयुवक आया और पागलों की तरह अभिनय करने लगा। उसका पूरा शरीर काँपने लगा और उसकी आँखों की पुतलियाँ ऊपर की तरफ हो गई।

मैंने उस लड़के के सिर पर हाथ रखा तो उसकी आवाज़ बदल गई। उसकी अपनी पहचान भी बदल गई। मैंने उसके माथे पर स्ट्रोक्स (Strokes) लगाये, तो उसके मुँह से किसी गढ़वाली संत की आवाज़ आई और उसने मुझसे पूछा, कि मैं उसे क्यों मार रहा हूँ...? वह बोला..., ''मैं एक गाँव का बाबा हूँ, लोग मेरे पास आते हैं, मैं उनकी इच्छाऐं पूरी करता हूँ तथा वे लोग 'लोहड़ी' के दिन, मुझे प्रसाद अर्पण करने का वचन देते हैं। यह लड़का भी मेरे पास आया था, इसकी भी इच्छा, मैंने पूरी की थी, इसने भी मेरा प्रसाद अर्पण करने का वचन दिया था, लेकिन इसने अपना वादा पूरा नहीं किया अर्थातः मेरा प्रसाद नहीं चढ़ाया। बजाय मुझे मारने के, आप इससे प्रसाद चढ़ाकर, अपना वचन पूरा करने को क्यों नहीं कहते...? जब मैंने इसकी मुराद पूरी की थी, तभी इसने मेरा प्रसाद चढ़ाने का वचन दिया था और अब यह अपने वादे से मुकर गया है, तो फिर क्यों न मैं, इसके शरीर में आकर, इसे सज़ा दूं?

परन्तु मैं, गुरूजी के मार्गदर्शन के अनुसार उसके माथे पर, तब तक स्ट्रोक्स (Strokes) लगाता गया, जब तक उसने, उसके शरीर से बाहर निकल जाना स्वीकार नहीं किया। आख़िर वह मान गया। मैंने उसके सिर पर से अपना हाथ हटा लिया और एक झटके के साथ, उसने अपनी गर्दन सीधी कर ली। वह लड़का सामान्य हो गया। उस लड़के ने मुझे अपने पैर की उंगली का एक घाव भी दिखाया और कहा कि यह किसी भी दवाई से ठीक नहीं हो रहा है। मैंने उसे जल, लौंग व इलायचियाँ दी और वह चला गया।

अगले दिन गुड़गाँव में, जब मैंने गुरूजी को प्रणाम किया तो वह मुझे डाँटते हुए बोले---

''राज्जे, कल एक गढ़वाल का देवता, तेरी शिकायत कर रहा था कि तूने उसकी, एक नहीं सुनी और उसे बहुत पीटा?''

*गुरूजी आगे बोले---**''बेटा, देख तो लिया करो कि सामने भूत-प्रेत के अलावा, कोई और भी हो सकता है।''***

मुझे इसका अहसास हुआ और मैंने गुरूजी को, जो कुछ हुआ था, विस्तार से बताया। मैंने गुरूजी से आगे के मार्ग-दर्शन के लिए प्रार्थना की, और उन्होंने मुझे आशीर्वाद दिया।

अगले हफ़्ते, जैसे ही मैंने पंजाबी बाग स्थान पर सेवा शुरु की, वही लड़का पुनः आया और उसी तरह से बर्ताव करने लगा, जैसा उसने पिछले हफ़्ते किया था।

अब मैंने उसे पीटने की बजाय उससे पूछा कि, वह गुरूजी के पास मेरी शिकायत करने गया था...? उसने बड़े आराम से जवाब दिया कि, उसके पास, इसके अलावा और कोई चारा नहीं था, कि बड़े गुरूजी के पास जाकर उन्हें बताए, कि आप तो मेरी बात ही नहीं सुनते।

मैं उसकी बात और उसकी पहुँच को सुनकर, बहुत खुः श हुआ और प्यार से कहा, कि वह इस लड़के के शरीर को मुक्त कर दे। ताकि वह आराम से अपनी ज़िन्दगी जी सके और वादा किया कि वह लड़का उसका प्रसाद, आने वाली 'लोहड़ी' के दिन, चढ़ा देगा।

आखिर ***चमत्कार हो गया.........!!***

वह लड़का पूर्णतयाः स्वस्थ हो गया और उसका वह पाँव का घाव भी अगले ही दिन ठीक हो गया।

कुछ ऐसे गुप्त रहस्य होते हैं, जो साधारण व्यक्ति आसानी से नहीं समझ पाते। लेकिन यह समझना बहुत ज़रूरी है कि गुरूजी, हर वह बात जानते हैं, जो मैं पंजाबी बाग में, सेवा करते समय करता हूँ। मैंने सुन रखा था, कि सर्व-शक्तिमान गुरूजी के लिये, किसी विशेष जगह, कोई समय अथवा सीमा का कोई बन्धन नहीं हैं। उनके लिए कोई अवरोध नहीं, कोई सीमा नहीं।

हे गुरुओं के गुरु, 'महागुरूदेव',
आप इस धरती पर.....
<u>देवो महेश्वरा</u> हो......।।

कृप्या हमें अपना आशीर्वाद देकर,

अनुगृहीत करें।

79. गुरुजी की, दासता अच्छी है।

<u>एक बार गुरुजी</u> के, बहुत से शिष्यों की मीटिंग चल रही थी। यह एक बहुत मज़ेदार मीटिंग थी। हर शिष्य, गुरुजी के अविश्वस्नीय कार्यो से सम्बन्धित, अपना-अपना व्यक्तिगत अनुभव बता रहा था। हर किसी का अनुभव, दूसरे से अच्छा था। हर घटना अति उत्तम थी तथा दिल को छू लेने वाली थी। सबसे सुन्दर बात तो यह थी, कि जो कोई भी शिष्य, गुरुजी के साथ हुआ, अपना व्यक्तिगत अनुभव बाँट रहा था, वह अन्त में, गुरुजी का यश-गान कर रहा होता था।

अतः, अन्त में यह वार्तालाप, एक बिन्दु पर आकर समाप्त हुआ कि, सिर्फ गुरुजी ही देने वाले हैं और बाकी सब लेने वाले हैं।

उन सब शिष्यों में से एक शिष्य, जो अब तक केवल सुन रहा था, सबसे अन्त में खड़ा हुआ और बोला कि मैं सिर्फ एक वाक्य में अपना व्यक्तिगत अनुभव बाँटना चाहता हूँ और वह यह है कि :-

गुरुजी का दास बन कर जीना,
ज़्यादा अच्छा है,
बजाय इसके कि संसार का राज्य प्राप्त हो।

<u>वाह</u>.........

क्या सु-विचार** (Calculation) **है......!!

80. गुरूजी अधिक्तर लम्बी सेवा के बीच, हम शिष्यों को मध्यान्तर (Interval) देते थे।

<u>मध्यान्तर</u> (Interval) का समय, यह समय हम सब के लिये, एक प्यार तथा मस्ती का समय होता था, जिसमें हम साधारण बातचीत करते थे। इसमें गुरूजी, सभी शिशयों को, उनके प्यार के उपनाम (Nick Names) से भी पुकारते थे।

चुटकुले और हंसी-मज़ाक, ऐसे होता था, मानो कि हम सभी, उनके दोस्त हों। लेकिन हमेशा सबसे महत्वपूर्ण बात यह होती थी, कि मीटिंग के दौरान या अन्त में, एक आध्यात्मिक संदेश ज़रुर होता था। इस तरह का मौका हमें, कभी-कभी ही मिलता था।

*ऐसे ही एक मौके पर, जब मैं छः -सात शिष्यों के साथ, गुरूजी के कमरे में बैठा हुआ था तथा साधारण बातचीत चल रही थी, कि अचानक गुरूजी ने मेरी तरफ देखा और बोले---**''ओ, राज्जे, तू बाथरूम में फर्श पर लाईनें कैसी खींच रहा था आज?''***

*फिर वे हल्का सा गुस्सा दिखाते हुए बोले--- **''कभी तो चैन से बैठा कर... ।''***

किसी शिष्य को समझ नहीं आया कि गुरूजी के कहने का क्या मतलब है...? मैंने थोड़ा शर्माते हुए कहा, ''गुरूजी, कुछ नहीं.... बस वैसे ही....'', दरअसल, जब मैं वहाँ इंडियन स्टाईल के पोट पर बैठा था, तो मेरा ध्यान वहाँ फर्श पर इक्कट्ठा हुए पानी की ओर चला गया। मैंने सोचा, कि क्यों न इस पानी को पोट की ओर, दिशा दे दूं...... तो मैं उस पानी के किनारे को छूते हुए, पोट के किनारे तक ले आया और पानी पोट में चला गया। बस मैंने बाथरूम में यही किया था गुरूजी..., यही आया था मेरे दिमाग में.....।।

वहाँ बैठे सभी लोगों के साथ, वे हंसने लगे।

*इसमें भी एक संदेश छुपा था, **गुरूजी हमें, बन्द कमरे में भी देख रहे हैं, जबकि वहाँ हमारे अलावा और कोई नहीं होता।***

*अतः आप सर्वत्र **'विराजमान'** हैं।*

81. गुरूजी की अर्धांगिनी, माता जी, अन्नपूर्णा हैं...।।

गुरुजी ने, मेरी दो बेटियों के लिये, गुड़गाँव स्थान पर, दो लड़कों का चुनाव किया। गुरूजी ने मुझे, बच्चों के शगुन करने के लिये, एक छोटा सा समारोह करने की अनुमति दी और उसका इन्तज़ाम करने के लिए, पंजाबी बाग भेजा।

दोनों परिवार, जिनमें से एक मुम्बई और दूसरा हैदराबाद से था, उन्होंने अपने-अपने रिश्तेदारों और सम्बन्धियों को, समारोह में शामिल होने के लिये निमत्रंण दिया। क्योंकि गुरूजी ने यह निर्णय, अचानक लिया था इसलिए इस समारोह में, कुछ चुने हुए लोगों के ही, शामिल होने की उम्मीद थी।

करीब 125 लोगों के भोजन के प्रबन्ध के लिये, रसोइये **(CATERER)** को कहा गया। लोगों का आना शुरू हो गया और वह समय भी आ गया, जब लोगों को खाना परोसा जाना था।

उसी समय मेरे बड़े भाई की पत्नी, मेरे पास आई और बोली कि 240 से अधिक मेहमान आ चुके हैं और ख़ाना सिर्फ 125 लोगों के लिये ही बनवाया गया है। आप रसोइये **(CATERER)** को तुरन्त और ख़ाना बनाने का आदेश दें।

तभी अचानक मातारानी (माताजी), जो इस समारोह की सर्वे-सर्वा थी, वहाँ पहुँच गई। मैंने उन्हें ख़ाने की स्थिति के बारे में अवगत कराया और पूछा कि, क्या और खाना बनाने के लिये कहूँ? माताजी ने कहा---

''नहीं राज्जे, हम खाना दुबारा नहीं बनाते।
चल..., मुझे वहाँ ले चल, जहाँ खाना रख़ा हुआ है...।''

मातारानी जी, मेरे साथ रसोई में गईं और आदेश दिया कि, मैं सभी पतीलों के ढक्कन उठाऊं। मैंने वैसा ही किया। फिर उन्होंने, सब पतीलों में झाँक कर देखा और यह आदेश दिया, कि अब इन पतीलों में झाँक कर, कोई नहीं देखेगा और न ही अंदाजा लगायेगा कि इसमें कितनी मात्रा शेष है।

उन्होंने आगे कहा, सिर्फ एक रसोईये के अलावा पतीलों का ढक्कन कोई नहीं उठायेगा और वो भी सिर्फ **(WAITERS)** के बर्तन में डालने के लिए ही .....।

खाना परोसा गया और चमत्कार हो गया।
250 से अधिक लोगों ने खाना खाया ...और

CATERER तथा WAITERS के 35 लोगों ने भी खाना खा लिया और उसके बाद भी सभी पतीलों में खाना बचा हुआ था।

जब मैं गुरूजी से, गुड़गाँव स्थान पर मिला तो वह बोले----

'' राज्जे, तेरी माँ, अन्नपूर्णा है...।।''

''खाना कभी खत्म, हो ही नहीं सकता था बेटा...।

गुरूजी आगे बोले---

''चाहे ओर लोग भी आ जाते,
भरपेट खाना उन्हें भी मिलता।''

एक साधारण व्यक्ति के दिमाग से यदि सोचता, तो इसका जवाब मिलना कभी भी सम्भव नहीं होता। सब्जियाँ, चावल, घी व आटा, 125 लोगों के खाने के लिये ख़रीदा व बनवाया गया था। लेकिन वह 300 से भी अधिक लोगों को परोसा गया।

------यह कैसे सम्भव हुआ...?------

यह सवाल हमेशा दिमाग में रहेगा, लेकिन इसका जवाब कोई नहीं दे सकेगा, सिवाय गुरूजी के और मातारानी जी के। इसलिये गुरूजी के साथ, बिना किसी शर्त के, पूर्ण रूप से समर्पित हो जाना ही, ठीक रहेगा।

मुझे तो इस बात का जवाब मिल गया, क्योंकि मैं यह जानता हूँ कि गुरूजी ने मेरे विश्वास को बार-बार इसी तरह पक्का किया और मैं सिर्फ यही याद कर-कर के ही जी रहा हूँ..... और औरों को बाँटनें का आनन्द भी ले रहा हूँ।

.....और न ही कभी
यह खोजने की कोशिश करता हूँ,
कि यह कैसे सम्भव हुआ...।।

82. जब एक जर्मन फोटोग्राफर, गुरुजी की फोटो ख़ींचना चाहता था।

अस्सी के दशक की महाशिवरात्रि समारोह की बात है, सम्पूर्ण भारत के अलावा विश्व के अन्य देशों से भी लोग इसमें शामिल होने के लिए, गुड़गाँव में एकत्र हुए थे। शिवरात्रि से दो दिन पूर्व एक नवयुवक, जो जर्मनी से आया था और गुरुजी की फोटो ख़ींचना चाहता था। गुरुजी बोले---

''बेटा, आज नहीं.... दो दिन बाद ख़ींच लेना।''

वह नवयुवक बोला, ''गुरुजी, आज क्यों नहीं?''

गुरुजी बोले--- ''बेटा, आज मैं हूँ नहीं।''

वह नम्रता से जिद्द करते हुए बोला, ''गुरुजी.. आप मेरे सामने बैठे हैं, कैसे मान लूं कि आप नहीं हैं?''

गुरुजी मुस्कुराये और बोले----- ''ठीक है।।''

उस नवयुवक ने गुरुजी की फोटो ख़ींचनी शुरु कर दीं। उसने गुरुजी की 17 या 18 फ़ोटो ख़ींचीं।

अगले दिन वह नवयुवक फिर आया और गुरुजी के कमरे के बाहर ही खड़ा हो गया। मैंने उसे देखा और अन्दर आने को कहा, ''आ जाओ..., गुरुजी के दर्शन कर लो।''

वह एकदम चुपचाप खड़ा था और कुछ देखे जा रहा था। फिर अचानक कहने लगा, ''मैं जर्मनी का एक विख़्यात फोटोग्राफर हूँ मेरा यह व्यवसायिक कैमरा भी बहुत कीमती है।'' पहली बार ऐसा हुआ है कि मैंने फोटो ख़ीची हों और सारी की सारी फिल्म-रोल खाली आई हो। मुझे समझ नहीं आ रहा कि मेरी इस विफ़लता का कारण क्या है...?''

गुरुजी मुस्कुराते हुए बोले----

''बेटा, तेरी फोटोग्राफी में कोई कमी नहीं,
पर जब मैं हूँ ही नहीं तो फोटो कैसे आयेगी...?''

गुरुजी आगे बोले----

''शिवरात्रि पर ख़ीचना, तब आ जायेंगीं।''

शिवरात्रि के बाद उसने फोटो ख़ींचीं, सभी फोटो ठीक आ गई। लेकिन उस खाली फिल्म-रोल का रहस्य वह अपने साथ जर्मनी ले गया।

गुरुजी ने उससे कहा था कि मैं यहाँ नहीं हूँ...
इसका क्या मतलब...??

इसका मतलब, या तो रब...., या फिर कोई रब जैसा ही.... बता, या समझ सकता है।

83.जब गुरूजी के पास एक प्रेत-ग्रसित जवान लड़का आया ।

गुड़गाँव स्थान पर गुड़गाँव के एक उद्योगपति का जवान बेटा जो प्रेत-ग्रसित था, अपने पिता के साथ आया और आते ही अव्यवहारिक बर्ताव करना शुरू कर दिया। वह ऐसे बर्ताव कर रहा था जैसे वहाँ स्वयं मौजूद न हो बल्कि उसके अन्दर से कोई दूसरा व्यक्ति बात कर रहा हो। वह अपनी गर्दन को झटके दे रहा था, अपनी बाजुओं को अकड़ा रहा था तथा अपनी उंगलियों को बार-बार मरोड़ रहा था, जैसे वह कोई दिमागी मरीज़ हो।

गुरूजी ने उसके सिर को पकड़ा और उसके माथे पर स्ट्रोक्स **(Strokes)** *लगाने ही वाले थे कि उसके अन्दर बसी दूसरी आत्मा ने गुरूजी से इन्साफ़ की दुहाई देते हुए कहा---*

''गुरूजी, आप तो गुरू हैं मुझे मारने से पहले मेरा कसूर बता दीजिये''

वह आगे बोला----

''इसने मेरे साथ क्या किया है, वह भी देख लीज़िए और फिर इन्साफ कीजिए। उसके बाद जो मेरे लिये हुक्म होगा..., मैं वैसा ही करुंगा....।''

उस परिवार के जाने के बाद मैंने गुरूजी से पूछा, ''गुरूजी, उस लड़के के द्वारा वह आत्मा क्या कहना चाह रही थी...? वह उस लड़के के प्रति किस न्याय-अन्याय की बात कर रही थी? कृप्या इस पर प्रकाश डालिए...। कोई विशेष कारण ही रहा होगा जिसके लिए आपने उसे ठीक नहीं किया। ......ऐसी क्या वज़ह थी। वैसे उसे ठीक करना तो आपके लिए मिनटों-सैकिण्डों का काम था?''

गुरूजी बोले----

''बेटा जो आत्मा उस के माध्यम से बोल रही थी, वह उसकी ही फैक्ट्री में काम करने वाले एक कर्मचारी की थी। जो पिछले हफ़्ते ही एक एक्सीडेंन्ट में मर गया था। मौत के बाद उस कर्मचारी की पत्नी फैक्ट्री गई थी और उसने मालिक से कुछ आर्थिक सहायता माँगी थी। इस लड़के ने कहा कि उसके पति का इन्शोरेन्स है इसलिये उसके प्रति, इस फैक्ट्री की कोई ज़िम्मेवारी नहीं बनती है। अतः हर्ज़ाने के लिए वह इन्शोरेन्स कम्पनी जाये, न कि उनके पास आये।'' वह महिला बोली, ''इन्शोरेन्स कम्पनी से हर्ज़ाने का क्लेम मिलने में तो काफी समय लग जायेगा लेकिन उसको अपने बच्चों के भरण-पोषण के लिये पैसों की अभी आवश्यकता है।''

उस महिला ने यह भी कहा, ''कि वह आपके पास इस वज़ह से भी आई है कि उसका पति पिछले दस सालों से आपके पास काम करता था और पिछले दस सालों में मेरे पति तथा आपके बीच, एक कर्मचारी और मालिक का रिश्ता था। इसीलिए मैंने आपसे आर्थिक मदद की प्रार्थना की है।''

इतना सुनकर वह लड़का गुस्से में आ गया और उसने चपरासी को बुलाकर, उसे वहाँ से बाहर निकाल दिया। उस समय उसके पति की आत्मा वहीं पर मौजूद थी। उसे मालिक के लड़के का अपनी पत्नी के प्रति, यह कठोर व रुखा व्यवहार बर्दाश्त नहीं हुआ और वह उस लड़के के शरीर में प्रवेश कर गयी। बस यही एक कारण था।''

गुरुजी आगे बोले----

''अब वह आत्मा चाहती है कि उस लड़के को दण्ड मिले। वह आत्मा उसके शरीर से बाहर निकलने से पहले, मुझसे न्याय चाहती है। इसीलिये उसने मुझसे इन्साफ़ की गुहार लगाई थी।''

गुरुजी ने बताया---

''वह आत्मा मेरे आदेश पर उस लड़के को कुछ दिनों के बाद छोड़ तो देगी, लेकिन इससे पहले मुझे उस आत्मा के लिए भी कुछ करना होगा। क्योंकि मैं गुरु हूँ..., अतः इस नाते मुझे उसके साथ भी न्याय करना है। इसलिए इस लड़के को अभी कुछ दिनों तक इसी परिस्थिति से गुज़रना होगा।''

लगभग एक हफ़्ते के बाद, वह लड़का पुनः पहले जैसा सामान्य हो गया।

इस घटना का मैं स्वयं साक्षी हूँ। इसके बारे में यदि किसी जिज्ञासु को कोई अन्य जानकारी, आध्यात्मिक ज्ञान के बारे में और या फिर गुरुजी से सम्बन्धित हो और अधिक जानना चाहें, तो मैं हाजिर हूँ। जाहिर है कि आत्मा का गुरुजी में विश्वास रखना, यह प्रमाणित करता है कि गुरुजी व भगवान एक ही हैं।

मेरी आपसे प्रार्थना है कि हे गुरुदेव...

मेरा प्रणाम स्वीकार कीजिए...।।

84. जब गुरुजी ने अली असग़र को मिरगी के रोग से मुक्त किया।

जम्मू के मुश्ताक़ मौहम्मद ज़ाफरी के साथ मेरे व्यापारिक सम्बन्ध थे। एक बार वे अपनी पत्नी और बेटे के साथ दिल्ली आये तो मेरी उनसे फोन पर बात हुई। उन्होंने मुझे बताया कि उनके बेटे अली असग़र को निमोनिया, तेज़ बुख़ार और उसक शरीर पर चकतों के निशान पड़ गये हैं। वह बहुत परेशान लग रहा था। अतः मैं उसे देखने होटल चला गया। वहाँ पहुँचकर मानवता के आधार पर, मैंने उसे अपने यहाँ ठहरने के लिये कहा और यह भी कहा कि जो चिकित्सा जरुरी है, उसका इन्तज़ाम वहीं हो जायेगा।

मैं उन सब को अपने साथ लेकर पंजाबी बाग आ गया। रात का ख़ाना खाने के बाद वे सब सोने चले गये।

अगले दिन सुबह जब मैं अपने ऑफिस के लिये निकलने लगा तो उसकी पत्नी, मेरे पास आई और कहने लगी, ''भाई साहब, आप मेरे बेटे को ठीक कर दीजिए।'' वह मुझसे इस तरह की बात करेगी, मैं इसके लिये तैयार नहीं था। अतः मैंने उसकी बात को नज़र-अन्दाज करते हुए ऐसा ज़ाहिर किया कि जैसे मैं समझा नहीं कि वह क्या कहना चाहती है।

तब उसने मुझे बताया कि उसने रात को मेरी बेटी पुन्चू से अली असग़र की बीमारी के बारे में बात की थी तब उसी ने ही बताया है कि आप गुड़गाँव वाले गुरुजी के शिष्य हो और आप उसके बेटे को ठीक कर सकते हो।

उसने बड़ी नम्रता से कहा, ''भाई साहब, अली असग़र को साल में दो-तीन बार मिरगी का द़ौरा पड़ता है और हमें दो से तीन महीने तक अस्पताल में ही रहना पड़ता है। हम बड़ी मुसीब़त में हैं।

मैंने उसे विस्तार से बताया कि यहाँ के कुछ नियम और कायदे हैं। जिसका बड़ी सख़्ती से पालन करना जरुरी होता है। क्योंकि आप लोग मुस्लिम समुदाय से है, अतः आप लोगों के लिये यह करना मुश्किल होगा।

वह बोली, ''मैं एक माँ हूँ... और चाहती हूँ कि मेरा लड़का ठीक हो जाये। इसलिए आप जो भी कहेंगे... मैं वह सबकुछ करने के लिए तैयार हूँ...।''

तब मैंने कहा, ''अच्छा, तो ये दवाई का लिफ़ाफा बाहर फैंक दो।'' मेरी इस बात पर उसके पति को थोड़ी हिचकिचाहट हुई लेकिन वह उस पर नाराज़ हुई और कहा कि तुरन्त वह यह लिफ़ाफा बाहर फैंक दे। उसने उसकी बात मानते हुए लिफ़ाफा बाहर सड़क पर फैंक दिया। मैं उसके विश्वास की परीक्षा लेना चाहता था। मैं फिर बोला, ''अच्छा तो ठीक है, आज रात मैं तुम्हारे बेटे को ठीक कर दूंगा।''

मैंने उससे कहा, कि वह अपने बेटे को, आज रात मेरे बिस्तर पर लिटा दे। जब हम लोग रात का खाना खाने के बाद सोने के उस कमरे में गये जहाँ अली असग़र पहले से सो रहा था, तब जैसे ही मैं उसके बिस्तर पर बैठा तभी एकदम उसे मिरगी का द़ौरा

पड़ गया। उसने काँपना शुरु कर दिया, उसकी आंखों की पुतलियाँ ऊपर की तरफ हो गयी तथा उसके बाजू व टाँगें अकड़ गई।

वह ज़ोर से चिल्लाई..., ''हाय अल्ला, मेरा बच्चा......!! और उसने अपने बच्चे को अपनी गोद में ले लिया।

मैंने उसे, उसकी गोद से छीन कर अपनी गोद में लिया और उसके माथे पर गुरुजी द्वारा दिये गये गुप्त संदेशानुसार स्ट्रोक्स **(Strocks)** लगाने शुरु कर दिये। इस काम में कुल तीन से चार मिनट का समय लगा होगा कि वह लड़का बिलकुल सामान्य हो गया।

यह कार्य, उसके तथा उसके पति के लिये कोई चमत्कार से कम नहीं था। वे दोनों एक-दूसरे की तरफ देख रहे थे और अपने बेटे से बात कर रहे थे ''असग़र, क्या हुआ बेटा...?'' वह लड़का बोला, ''कुछ नहीं अम्मी...।'' जिस तरह से असग़र ने उनसे बात की, उन्हें इसकी कोई उम्मीद नहीं थी।

वह चिल्लाते हुए बोली, ''भाई साहब..., पिछली बार जब इसे ऐसा दौरा पड़ा था तो हम इसे तुरन्त अस्पताल ले गये थे और इसके इलाज़ के लिये हमें तीन महीनें तक वहाँ रुकना पड़ा था। आपने ऐसा क्या किया, कि यह कुछ ही मिनटों में, बिलकुल ठीक हो गया?''

मैंने उन्हें स्पष्ट शब्दों में कहा कि--

यह गुरुजी द्वारा दी गई आध्यात्मिक शक्तियाँ है,
जिसका कोई अन्त नहीं है और
उन्होंने ही आपके बेटे को मेरे द्वारा ठीक कराया है।

मैंने उन्हें जल दिया और कहा, चिन्ता की कोई बात नहीं है रात को आराम से सो जाओ।

अगली सुबह अली असग़र को कोई बुख़ार नहीं था और उसके शरीर पर जो चकते बन गये थे, वे सब भी ग़ायब हो गये थे।

मुश्ताख़ मौहम्मद ज़ाफरी और उसकी पत्नी ने अपनी ज़िन्दगी में ऐसा पहली बार देखा था कि दौरे के बाद सब कुछ तुरन्त, एकदम सामान्य हो गया। वे मंत्रमुग्ध से हो गये थे।

कुछ दिन मेरे पास रुकने के बाद वे खुःशी-खुःशी जम्मू, अपने घर लौट गये। उसे यह बीमारी दुबारा फिर कभी नहीं आई।

अली असग़र, उस समय करीब आठ साल का बच्चा था। कुछ महीनों के बाद जब अपने पिता के साथ एक बार जम्मू के रघुनाथ बाज़ार से जा रहा था, तो रास्ते में एक मन्दिर की तरफ इशारा करके अपने पिता से जिदद् करने लगा कि वह उसे उस मन्दिर में ले जाये। उसके पिता ने मुस्लिम होने के नाते हिचक महसूस की। लेकिन अली

असग़र बोला, ''अब्बू, ये सेख़री अंकल के मौला का घर है और मैंने उनसे मिलना है, वे उनके साथ अन्दर बैठे हैं।''

मुश्ताख़ मोहम्मद ने मुझे ये बात बताते हुए कहा कि उसे बहुत अंचम्भा हुआ था क्योंकि उन्होंने उनकी ज़िन्दगी में, कभी मन्दिर के बारे में उसके सामने कभी कोई बात नहीं की थी। यह उस लड़के की ही समझ थी जैसा कि उसने कहा कि सेख़री अंकल, मन्दिर में बैठे है।

(अपने कारोबारी-क्षेत्र में लोग मुझे सेख़री के नाम से ही जानते हैं)

गुरुजी हमारी सोच से भी बहुत आगे हैं। उस लड़के तथा उसके माता-पिता के प्रति वे कितने दयालु हैं कि जिसे मिरगी जैसी श्रापित बीमारी हो, उसे केवल एक रात में सम्पूर्ण जीवन के लिए ठीक कर दिया........!!

किस तरह से इसकी व्याख्या करें कि गुरुजी क्या हैं...?

जब मैं इसका जवाब देने या व्याख़्या करने के बारे में सोचता हूँ, तो अपने आपको बहुत छोटा महसूस करता हूँ।

मैं अपने भगवान से सिर्फ उनकी कृपा माँगता हूँ।

प्रणाम है........

गुरुजी।

85. जब गुरूजी ने एक महिला के बिगड़े हुए ख़राब चेहरे को कुछ दिनों में ही ठीक कर दिया।

एक व्यक्ति, अपनी पत्नी को जिसके चेहरे की हालत बहुत खराब व बिगड़ी हुई थी गुरूजी के पास लेकर आया और उन्हें बताते हुए प्रार्थना करने लगा कि गुरूजी यह मेरी पत्नी है जो पहले बहुत खूबसूरत थी। लेकिन अचानक इसका चेहरा पहले सफ़ेद होने लगा और फिर धीरे-धीरे, पिछले कुछ सालों में उसकी हालत दिन-ब-दिन और बिगड़ती चली गई और इसका चेहरा बदसूरत होता चला गया। हमने इसका बहुत इलाज करवाया लेकिन कोई भी इलाज इसे ठीक नहीं कर सका।

उसकी हालत बहुत ही ख़राब थी। उसका चेहरा बिलकुल गला हुआ सा लग रहा था। उसकी आँखों का नीचे का हिस्सा बहुत झुलसा हुआ था और आँखें खुली और सामान्य से काफी नीचे लटकी हुई थीं। गुरूजी ने मुझे उसे, काली मिर्च और जल देने का आदेश दिया।

एक हफ़्ते के बाद वह दुबारा आई उसे देखकर मुझे अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं हुआ....!! उसके चेहरे का रंग ब्राऊन और करीब-करीब उसके शरीर के रंग जैसा हो चुका था और उसकी आँखों के नीचे का भाग भी लगभग आधा ठीक हो गया था। वह तो ठीक हो गई थी!!

वाह गुरूजी.......!!
चार साल पुरानी बीमारी एक हफ़्ते में ठीक.....!! और वह भी बिना किसी दवाई के...?

यह अविश्वस्नीय कार्य था। और एक अप्रत्याशित बदलाव भी।

गुरूजी कहने लगे, ''राज्जे, तू इनके अन्दर से निकली दुआंऐ सुन.. ये दुआऐं, इनके अन्दर बैठे भगवान की आवाज़ हैं।''

मैंने गुरूजी से पूछा कि गुरूजी इस महिला को यह कौन सी बीमारी थी, जो आपने सिर्फ एक हफ़्ते में ही ठीक कर दी...!!

गुरूजी ने बताया कि एक आदमी इससे शादी करना चाहता था लेकिन इसकी शादी किसी दूसरे आदमी से हो गई। पहले वाले आदमी ने एक तांत्रिक से मिल कर तंत्र-क्रिया द्वारा, इसको बदसूरत बनाने के लिए यह घृणित कार्य किया था।

इस बीमारी का कोई इलाज़ नहीं था। केवल आध्यात्मिक शक्तियों से परिपूर्ण काली मिर्च ही इसे ठीक कर सकती हैं।

86. जब गुरूजी ने, 1984 के दंगों से एक रात पहले, बड़े वीरवार की सेवा स्थगित कर दी।

प्रत्येक बड़े वीरवार के दिन, गुरूजी से आशीर्वाद लेने वाले लोगों की भीड़ लगातार बढ़ती ही चली जा रही थी। इस तरह दिन-ब-दिन लोगों की बढ़ती हुई संख्या को देखते हुए गुरूजी ने बुद्धवार की रात्रि से ही बड़े वीरवार की सेवा करनी शुरू कर दी थी।

गुरूजी ने यह निर्णय इसलिए भी लिया था कि अगले दिन सुबह, बड़े वीरवार को लाईन में अपनी बारी का इन्तजार करने वाले भक्तों को कुछ सुविधा हो सके।

अक्टूबर 1984 की बात है, जब प्रधानमन्त्री श्रीमति इंदिरा गाँधी की हत्या हो गई।

गुरूजी ने मुझे ये आदेश दिया कि मैं लोगों को यह सूचित करूं कि वे लोग आज अपने-अपने घर वापिस चले जाऐं, कल सुबह बड़े वीरवार की सेवा नहीं होगी। क्योंकि कल सभी सड़कें असुरक्षित होंगी। हर जगह खून खराबा होने वाला है। (बहुत से अनुयायी गुरूजी से आशीर्वाद लेने के लिये बुद्धवार की रात को ही आ गये थे।) उन अनुयाईओं में से सभी सिख भक्तों को ये कहा गया कि वे अभी, रात में ही दिल्ली वापिस चले जायें। क्योंकि गुरूजी ने उनके लिये सख़्त हिदायत दी है।

सीताराम जी ने आकर मुझे बताया कि गुरूजी ने कहा है कि कल बड़ी संख्या में खून-खराबा होने वाला है। इसलिए बड़े वीरवार की सेवा को अगले महीने के लिए स्थगित कर दिया है। सभी लोग वापिस चले गये।

हम सब अच्छी तरह से जानते हैं कि अगले दिन क्या आतंक मचा। पूरा जंगल राज था और सिखों की निर्दयता पूर्ण हत्याऐं हुई और सम्पूर्ण दिल्ली-क्षेत्र लूट और हत्याओं के आग़ोश में था।

गुरूजी को इसका पूर्ण ज्ञान था कि कल क्या होने वाला है। इसीलिए उन्होंने 'बड़े वीरवार' की सेवा को स्थगित किया ताकि हज़ारों सिखों की जान बचाई जा सके।

87. जब फोटो के भरे बैग में से गुरूजी ने, उसकी बेटी की फोटो निकाली।

गुरुपूर्णिमा का समय था। मुम्बई से 'वीरजी' के नेतृत्व में, मुम्बई स्थान के लोगों के एक ग्रुप में दिनेश भंड़ारे, जो आध्यात्मिक ज्ञान का जिज्ञासु था, अपने दिमाग में सिर्फ एक ही विचार लेकर आया था कि वह जान सके कि गुरूजी कौन हैं और गुड़गाँव स्थान पर ऐसा क्या होता है कि मुम्बई के लोग भागे चले जाते हैं....!!

गुरुपूजा समाप्त हो चुकी थी और बाहर से आये हुए लोग, 'गुरु पूर्णिमा' पर गुरूजी का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए, अपनी-अपनी बारी की प्रतीक्षा कर रहे थे सभी गुरूजी को अपनी-अपनी व्यक्तिगत समस्यायें बता रहे थे और गुरूजी उनकी समस्या सुनकर उन्हें उनसे मुक्ति प्रदान कर रहे थे।

तभी मुम्बई ग्रुप के दो दोस्त, दिनेश तथा केलकर की बारी आ गई। गुरूजी को अपनी समस्या बताने के लिए केलकर ने गुरूजी को प्रणाम किया और कहा, ''गुरूजी, मेरी बेटी बहुत बीमार है।'' गुरूजी ने उससे पूछा कि क्या तुम उसे साथ लाये हो? वह बोला, ''नहीं गुरूजी, वह तो पूना में है।'' गुरूजी ने उसकी फोटो दिखाने के लिए कहा, तो वह दौड़ कर 'वीरजी' के पास गया, क्योंकि उसने उसकी फोटो मुम्बई में उनको दे दी थी।

जल्दी-जल्दी उनसे, वह पोलीबैग ले आया जिसमें सब लोगों की दर्जनों फोटो रखीं थीं। जैसे ही उस पोलीबैग में से अपनी लड़की की फोटो ढूंढने के लिए उसे खोला ही था कि गुरूजी ने उसके हाथ से वह पोलीबैग ले लिया और अपने हाथ से, उसमें से एक फोटो निकाली और बिना देखे ही केलकर को दिखाते हुए कहा---

''क्या यही तुम्हारी बेटी का फोटो है...?''

कमाल है--------

दिनेश और केलकर, एक दूसरे को आश्चर्य चकित होकर देखने लगे। यह उनके जीवन का बहुत बड़ा आश्चर्य था। यह कैसे सम्भव हो गया कि गुरूजी ने बिना देखे बैग में हाथ डाला और केलकर की बेटी की ही फोटो बाहर निकाल ली जबकि उसमें दर्जनों फोटो रखीं हुई थी....!! ''यह एक असम्भव कार्य था।''

दिनेश भंड़ारे, जो यह जानने के लिये ही आया था कि गुरु जी कौन है और स्थान क्या है, एक ही पल में सारी ज़िन्दगी के लिए, अपनी पहचान गवाँ बैठा।

यही वो व्यक्ति था जिसने बाद में यह घोषणा की--

''एक ईमानदारी और एक गुरूदेव का हाथ हो सिर पर,
ज़िन्दगी अपने आप चलेगी।''

स्पष्ट है कि--- या तो गुरूजी की एक अतिरिक्त आँख, उनके हाथ में लगी हुई थी जिससे उन्होंने उस लड़की की फोटो को पहचाना या फिर उस लड़की की फोटो, उन सब फोटो में से उछलकर गुरूजी की चमत्कारी उंगलियों में अपने आप आ गयी। ये मेरी समझ से तो बाहर है। नहीं तो किसी आम व्यक्ति के लिए पोलीबैग में लगभग तीस से भी ज़्यादा फोटो में से, वही फोटो निकालना 'ना-मुमकिन' है।

आप ही बतायें......

हे गुरूदेव......!!

88. जब मैंने अपने आप को भूख़ से व्याकुल महसूस किया।

प्रत्येक बड़े-वीरवार से पहले आने वाले बुद्धवार रात को, माता जी सभी शिष्यों और सेवादारों को स्वयं् खाना खिलाती थी। मैं भी रात के समय गुड़गाँव पहुँचा और माताजी को प्रणाम किया तो माताजी ने मुझे भी एक दाल-चावल की फुल प्लेट, पकड़ा दी।

मैंने कहा, ''मातारानी जी, जब मैं पंजाबी बाग से चला था तो ख़ाना खाकर ही चला था। कृप्या आप मुझे इसमें से आधा दे दीजिए...।'' माताजी ने मुड़कर मेरी तरफ देखा, मुस्कुराईं और फिर उसमें से आधे दाल-चावल निकाल कर आधे मुझे दे दिये, जो मैंने खा लिये।

.......हे भगवान.......!!

ये क्या हुआ.....??

दाल-चावल की वह प्लेट समाप्त करते ही मुझे तो बहुत ज़ोर से भूख़ लगनी शुरु हो गई। मैं माता जी के पास गया और बोला, ''मातारानी जी, जो दाल-चावल मैंने वापिस किये थे, कृप्या वो मुझे लौटा दीजिए। उन्होंने वह मुझे दिये और मैं वह भी खा गया।

-----एक अद्भुत चमत्कार हुआ----

अब तो मेरी भूख़, अपनी चरम सीमा तक पहुँच गई। मैंने अपने चारों तरफ बैठे, लोगों की तरफ देखा और फिर अपनी खाली प्लेट माताजी की तरफ बढ़ाते हुए, प्रार्थना करने लगाः

''मातारानी जी, मैं दो बार आपसे आधी-आधी प्लेट लेकर खा चुका हूँ, लेकिन मेरा पेट अब भी खाली है। भूख़ है, जो बढ़ती ही जा रही है। मैं इस अज़ीब परिस्थिति को, समझ नहीं पा रहा हूँ। मुझे ऐसा लगता है कि मुझसे कोई बहुत बड़ी भूल हो गई है कि आपने पहले जो फुल प्लेट दाल-चावल की दी थी और मैंने वह प्लेट लेने से मना कर दिया था। इसलिए मातारानी जी, कृपया आप दुबारा वैसे ही फुल प्लेट, दाल-चावल दीजिए जैसी कि आपने पहले दी थी।

मेरी इस बात पर, माता जी मुस्कुराईं और उन्होंने मुझे, दुबारा वैसे ही फुल प्लेट भर के दे दी।

आश्चर्य--------

मैं उसे खाकर तृप्त हो गया।

परन्तु सोचने की बात तो यह है, कि मैं दाल-चावल की दो फुल-प्लेट खा गया और वह भी पूरा खाना खा चुकने के बाद। मैं पूरी रात बड़े ही

आराम से सोया और मुझे बिलकुल भी महसूस नहीं हुआ कि आज मैंने दुगने से ज़्यादा खा लिया है।

यदि इन छोटी-छोटी घटनाओं को, संसारिक रुप से सोचा जाऐ तो यह बहुत ही साधारण सी लगती है। लेकिन आध्यात्मिक मार्ग में यही छोटी-छोटी घटनाऐं एक महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। यह छोटी-छोटी घटनाऐं, एक एक अक्षर के रूप में हैं और अक्षरों के मिलाने से ही शब्द और फिर, शब्दों से वाक्य बनते हैं। इन्हीं शब्दों से बने वाक्य ही हमें संदेश देते हैं। इसलिए यह सलाह है कि गुरू के पास होने वाली इन घटनाओं को गम्भीरता से लें और अपने आध्यात्मिक सफ़र को कामयाबी के साथ तय करें।

89. जब संतलाल जी ने गुरूजी से, गुड़गाँव वाले फार्म में आलू की पैदावार के बारे में बात की।

गुरूजी अपने कमरे में बैठे थे, मैं भी अन्य शिष्यों के साथ उनके पास बैठा था। संतलाल जी, गुरूजी के प्रिय शिष्यों में से एक हैं। जब गुरूजी प्रसन्न-मुद्रा **(LIGHT MOOD)** में होते तो हम भी गुरूजी के इस **(FREE MOOD)** का फ़ायदा उठाते हुए, उनसे खुलकर बात कर लेते थे।

शिवरात्रि नज़दीक थी और आलुओं के विषय में बात चल रही थी क्योंकि 'शिवरात्रि का व्रत' आलुओं के प्रसाद से ही खोला जाता है। संतलाल जी बोले, ''गुरूजी, गुड़गाँव के फार्म में आलू के पौधे बहुत छोटे हैं और मैं नहीं समझता कि इस बार उसमें इतने अच्छे आलू पैदा होंगे कि उनमे से इस 'शिवरात्रि का प्रसाद' बन सके।'' वह आगे बोले, ''आप सोनीपत आकर देखो गुरूजी..., वहाँ के फार्म की फ़सल कितनी अच्छी और अधिक है। मैं ये सोचता हूँ कि इस बार 'शिवरात्रि का प्रसाद', सिर्फ सोनीपत के आलुओं से ही बन पायेगा...।'' गुरूजी ने उसकी तरफ देखा और मुस्कुरा दिये, बस.... ।।

कुछ दिनों बाद, जब गुड़गाँव फार्म में खुदाई शुरु हुई तो उसमें से अच्छी क्वालिटी के बड़े-बड़े आलुओं की बोरियाँ ही बोरियाँ निकली, जबकि उधर संतलाल जी के सोनीपत वाले फार्म से, छोटे-छोटे और थोड़े से ही आलू निकले।

वह परेशान होकर गुरूजी के पास वास्तविकता बताने के लिए आये। गुरूजी ने उसकी तरफ व्यंग भरी मुस्कान डालते हुए उसे, उसी के द्वारा, कुछ दिन पहले कही गई बात याद दिलाई।

संतलाल ने गुरूजी से कहा, ''गुरूजी, मुझे खेती का बड़ा पुराना अनुभव है। मेरे फार्म में ऐसा होना मेरे लिए कोई साधारण बात नहीं है......!! मुझे पूरा विश्वास है कि आपने मेरे सोनीपत वाले फार्म की फ़सल, अन्दर ही अन्दर गुड़गाँव वाले फार्म में शिफ्ट कर ली है। वरना पौधों को देखते हुए, कम से कम दस गुना पैदावार होनी चाहिए थी और वह भी अच्छी क्वालिटी के आलुओं की। गुरूजी मुस्कुराए और कहने लगे-------

''तुझे किसने कहा था, बढ़-चढ़ कर बात करने के लिए...?''

गुरूजी ने आगे कहा,

''तुम गुरू से बराबरी करने से पहले,
दो बार नहीं..., हज़ार बार सोचो।।''

गुरुजी ने बताया---

''सबका भाग्य सम्पूर्ण जगत के मालिक अर्थात, देवो महेश्वरा *ही लिखते हैं।*

मैं.... गुरु हूँ.., और उनके लिखे भाग्य को बदल सकता हूँ, बशर्ते कि आकांक्षी मेरे प्रति पूर्णतयाः समर्पित और विश्वास-बद्ध हो।

...भविष्य में इसका ध्यान रखना।

90.जब गुरूजी श्रीनगर, कश्मीर गये।

गुरूजी, श्रीनगर में थे और उनकी जीप मे अचानक कोई खराबी आ गई। अतः हम, लाल चौक पर स्थित एक मोटर पार्टस की दुकान पर गये। हमने दुकानदार से अपनी जरुरत के पुर्ज़े देने के लिये कहा।

उसने अपने किसी नौकर से वह पुर्ज़े निकालकर लाने को बोला और स्वयं, किसी दूसरे ग्राहक के साथ व्यस्त हो गया। मैं उसकी दुकान में इधर-उधर देख रहा था कि अचानक मेरी नज़र उसकी दुकान के अन्दर उसके काउन्टर के पास लगी, गुरूजी की एक बड़ी सी तस्वीर पर गई। उस समय गुरूजी मुझ से केवल तीन फुट की दूरी पर थे। गुरूजी की तस्वीर के आगे धूप जल रही थी और ताजे फूल रखे हुए थे, जो गुरूजी के प्रति उसकी आस्था का बख़ान कर रहे थे।

मैंने गुरूजी का ध्यान आकर्षित करते हुए कहा कि यह तो आपके किसी खास भक्त की दुकान है। गुरूजी ने मुझे चुप रहने के लिये ईशारा किया। मैंने फिर गुरूजी से कहा, ''गुरूजी, देखो आपकी इतनी बड़ी तस्वीर और उसके आगे धूप जल रही है। गुरूजी यह तो आपका बहुत बड़ा उपासक लगता है मैं चुप कैसे रह सकता हूँ...?''

गुरूजी ने कहा----

''यदि इसने मुझे पहचान लिया तो
यह हमसे पैसे नहीं लेगा।''

मैंने कहा, ''पर गुरूजी, यह कैसे मुमकिन है कि ये आपको न पहचाने....!! यह तो आप पर, अटूट विश्वास वाला भक्त लग रहा है।'' मैं तो यह सोच रहा हूँ कि जैसे ही वह अपना चेहरा, आपकी तरफ घुमायेगा वह अपनी दुकान के काउन्टर से कूद कर बाहर आ जायेगा आपको प्रणाम करने ...!! मैंने खुः शी से मुस्कुराते हुए कहा, ''आप बच नहीं सकते आज.... गुरूदेव''

गुरूजी बोले--

''राज्जे, ये मुझे तभी पहचानेगा ना,
जब मेरी इच्छा होगी... वरना कभी नहीं।''

और कमाल हो गया।

वह मुझे और गुरूजी को एक साथ देख रहा था और मुझसे बातें भी कर रहा था हालाँकि गुरूजी मेरे दाहिनी तरफ ही खड़े थे, इसके बावजूद भी वह यह नहीं जान सका कि जिनकी वह दिन-रात पूजा करता है, वह उससे चन्द इन्चों की दूरी पर खड़े हैं।

हमने उससे पुर्ज़ा लिया उसे पैसे दिये और उसे बिना कुछ बताये वापिस आ गये।

गुरूजी आप ये कैसे कर लेते हो?
आँखें होते हुए, आपकी तरफ देखते हुए भी,
कोई आपको पहचान क्यों नहीं सकता?

आपके कितने रूप हैं...,
मेरे साहेब जी ?

91. जब सुरेन्द्र तनेजा को अपने पुत्र का मुंडन कराने की इजाज़त देने से, गुरूजी ने मना कर दिया।

<u>सुरेन्द्र तनेजा</u> के बड़े भाई ने अपने तथा सुरेन्द्र के बेटे का मुन्डन समारोह करने का प्रोग्राम बनाया और उसके लिए दिन भी तय कर दिया। सुरेन्द्र इस समारोह के लिए, गुरूजी से इजाज़त लेने के उद्देश्य से उनके पास गया। लेकिन गुरूजी ने मुंडन कराने के लिए मना कर दिया।

सुरेन्द्र का बड़ा भाई, गुरूजी के प्रति अधिक विश्वास नहीं रखता था। इसलिए वह इस बात से सहमत नहीं था। अतः वह अपने छोटे भाई, सुरेन्द्र पर झुंझलाया और कहा कि तुम ज़िन्दगी की इन छोटी-छोटी बातों के लिये भी गुरूजी पर निर्भर रहते हो। वह समारोह की तारीख़ बदलने के लिये तैयार नहीं हुआ। उसने कहा कि वह अकेला ही अपने बेटे का मुन्डन संस्कार का समारोह कर लेगा और उसने ऐसा कर भी दिया।

कुछ दिनों के बाद, उसके लड़के के पेट में दर्द हुआ। उसने उसे बहुत सहजता से लिया और जिन दवाईयों आदि की जरूरत थी, लाकर उसे दी। परन्तु दर्द ठीक नहीं हुआ। धीरे-धीरे दवाईयाँ बढ़ती गई और उसका इलाज़ मंहगा, और मंहगा होता चला गया।
.......लेकिन दर्द वैसे ही जारी रहा।

अब यह उसके माता-पिता और सुरेन्द्र के लिये, एक गहरी चिन्ता का विषय बनता जा रहा था। सुरेन्द्र ने यह सब गुरूजी को बताया। गुरूजी बोले-----

''बेटा, मैं जानता था कि उसके भविष्य में क्या लिखा है और मैं यह भी जानता हूँ, कि आगे क्या होने वाला है। यही कारण था कि मैंने दोनों बच्चों के मुन्डन संस्कार के लिये मना किया था। तुम मान गये इसलिये तुम्हारा बच्चा बच गया लेकिन तुम्हारा भाई हठी था और उसने अपनी इच्छा से यह समारोह किया।''

उस लड़के की हालत दिन-ब-दिन बिगड़ती चली गई और आख़िर वह नहीं रहा।

उस समय सुरेन्द्र, आर. पी. शर्माजी के साथ, पूसा रोड पर ही कहीं था। उसकी गुरूजी से फोन पर बात हुई तो गुरूजी ने उससे कहा कि उस लड़के के पास ज़िन्दगी का सिर्फ एक ही घण्टा शेष बचा है और इसी के साथ यह भी आदेश दिया कि तुम घर नहीं जाओगे-----

ठीक एक घण्टे के बाद, सुरेन्द्र को घर से फोन आया और उसे परिवार के सदस्यों की चीखें सुनाई दी।

वाह गुरूजी---------

आप सब कुछ ऐसे जानते हैं, जैसे सबकुछ आपकी आँखों के सामने घट रहा हो.......!!

अपने चरणों से कभी जुदा न करना,
मेरे साहेब......!!

92. गुरूजी की टाँग में बाल-तोड़ था। जिसका मुझे ज्ञान नहीं था और संयोगवश, मैं उसी टाँग को दबा रहा था।

दरियागंज में मेरा एक शोरूम था। जहाँ बर्तन तथा अन्य सामान का व्यापार होता था। कई बार गुरूजी की विशेष कृपा होती और वे हमें आशीर्वाद देने के लिए वहीं आ जाते थे।

ऐसे ही एक दिन दोपहर का समय था और गुरूजी मुझे अनुगृहीत करने के लिए आ गये। गुरूजी के आने की ख़बर फैल गई तथा कुछ और शिष्य भी वहाँ पहुँच गये।

मैं गुरूजी की कुर्सी के पास, नीचे ज़मीन पर बैठ गया और उनकी टाँगें दबाने लगा। मैं लगातार ऐसा करता रहा और गुरूजी अपने सामने खड़े, सभी लोगों पर आध्यात्मिक-ज्ञान और अपने आशीर्वादों की वर्षा करते रहे। गुरूजी अपनी पूर्ण एकाग्रता के साथ, आध्यात्मिकता के गूढ़ रहस्य बताने में लीन थे और मैं लीन था उनकी टाँगें दबाने में।

तभी अचानक गुरूजी के मुख्य शिष्यों में से एक, सीताराम जी आ पहुँचे और उन्होंने गुरूजी के पवित्र चरणों में प्रणाम किया। परन्तु जैसे ही उन्होंने मुझे टाँगें दबाते हुए देखा तो उद्‌वेग से मुझसे पूछा कि मैं गुरूजी की कौन सी टाँग दबा रहा हूँ। मैंने उनकी तरफ देखा और पूछा, ''क्यों क्या हुआ.....??''

उन्होंने बताया कि सुबह जब मैं माताजी के दर्शन करने गया था तो उन्होंने मुझे बताया था कि गुरूजी की टाँग में बाल-तोड़ हो गया है। मैंने तुरन्त गुरूजी की पैन्ट को ऊपर उठाया तो मुझे एकदम झटका लगा...।

ओह.....,
ये तो वही टाँग है और उसमें से द्रव्य (पस) भी निकलने लगा था।

मैं यह तो जानता था कि हर किसी व्यक्ति के लिए बाल-तोड़ का दर्द असहनीय होता है। मैंने गुरूजी से पूछा, ''गुरूजी, आपने मुझे बताया क्यों नहीं.... कि आपकी टाँग में बाल-तोड़ है...'' वे बोले---

''जब एक शिष्य अपने गुरू की सेवा का आनन्द ले रहा हो तो मैं उसके आनन्द में ख़लल कैसे डालूं ?''

मैंने कहा, ''परन्तु गुरूजी, बाल-तोड़ पर तो हल्का सा कुछ छू भी जाये तो असहनीय दर्द होता है......।

इस पर गुरूजी बोले :
''बेटा, दर्द तो तब आयेगी ना, जब मैं उसे आने दूंगा।
मेरी मर्ज़ी के बगैर, वह कैसे आ सकती है----??''

क्या अविश्वस्नीय शब्द थे.......!!

ऐसे शब्द इस ज़िन्दगी में, इससे पहले कभी नहीं सुने थे। हर इन्सान सुःख-दुःख के जाल में फंसा हुआ है, लेकिन ऐसा कहते हुए आज से पहले, कभी किसी को नहीं सुना था।

''क्या मेरे लिए यह मुमकिन था, कि यह मैं समझ सकूं कि गुरूजी ने अभी क्या कहा है...?'' मैं इस विषय पर अपने दिमाग का इस्तेमाल करने में असमर्थ हूँ कि इसे समझ सकूं, न ही इस पर कोई व्याख्या या विचार करूं।

यह सब होने के बाद---

आज भी उनकी वही आवाज़ और वही शब्द, मेरे कानों में गूंजते हैं और वही आनन्दित तथा चमकता हुआ चेहरा, मेरे सामने आ जाता है।

एक नम्रतापूर्ण साधारण सी व्याख्या है कि गुरूजी आप सम्पूर्ण जगत के 'सर्वोच्च-स्तरीय' ज्ञान के ज्ञाता हैं।

गुरूजी, मेरी आपसे यही प्रार्थना है, कि आप मुझे इतना ज्ञान और सामर्थ्य दो ताकि आपके द्वारा दिये गये इस ज्ञान को समझ सकूं।

क्या दर्द, एक व्यक्ति है, जो एक किराये की टैक्सी लेकर, गुरूजी के दरवाजे पर आये और उनसे पूछे कि... ''क्या मैं अन्दर आ सकता हूँ ?''---------

दर्द हमारे अन्दर से उठती है और उसे हम स्वयं् ही महसूस करते हैं। अगर चिकित्सा विज्ञान की बात करें तो दर्द तो सिर्फ बेहोशी की हालत में ही महसूस नहीं होती, परन्तु गुरूजी तो पूर्ण जाग्रत अवस्था में थे और अपने शिष्यों को आध्यात्मिक ज्ञान दे रहे थे। आज तक, मैंने ऐसे किसी व्यक्ति को नहीं देखा, न ही मिला जोकि दर्द को यह कह कर रोक दे और आदेश दे---- कि तुम मत आओ ।

माफ़ करना......

मैं इसकी व्याख्या कैसे कर सकता हूँ जब कि मैं कुछ जानता ही नहीं हूँ।

सिर्फ गुरूजी से प्रार्थना कर सकता हूँ कि वह स्वयं् ही इसका खुलासा करें ।

93. जब करवाचौथ के दिन गुरूजी ने, माताजी के लिए मिट्ठाईयाँ खरीदीं।

गुरूजी, अपने ऑफिस में थे और सुरेन्द्र तनेजा भी उनके साथ था। गुरूजी के सहकर्मियों ने गुरूजी से तीन सौ रूपये कमेटी **(COMMITTEE CONTRIBUTION)** में, उनके मासिक अंशदान के लिए माँगे। गुरूजी ने अपना पर्स खोला और उसमें से सौ-सौ के दो नोट निकाले और बाकी के सौ रूपये के लिए, दस और बीस के नोट दिये।

यह स्पष्ट था कि गुरूजी के पर्स में सौ रूपये का और नोट नहीं था, नहीं तो वह छोटे नोट नहीं देते। उसके बाद वे सुरेन्द्र के साथ गोल मार्किट गये और वहाँ से गुड़गाँव चले गये। गुड़गाँव स्थान पहुँचने पर माता जी ने गुरूजी से पूछा, कि क्या वे 'करवाचौथ व्रत' से सम्बन्धित खा़ने का सामान ले आये है..?

स्थिति **(SITUATION)** को समझते हुए, सुरेन्द्र ने गुरूजी से कहा कि वह बाज़ार जाकर फल, मिठाई तथा जो ज़रुरी सामान है, ले आता है। परन्तु गुरूजी ने कहा कि यह काम हमेशा वे स्वयं ही करते हैं अतः आज भी स्वयं ही करेंगे। वह सुरेन्द्र को साथ लेकर बाज़ार चले गये। डॉक्टर चन्दर भी उनके साथ गया और वे एक दुकान पर पहुँचे।

वहाँ पहुँचकर गुरूजी ने अपने पर्स से, सौ-सौ के तीन नोट निकाल कर चन्दर को दिये और सामान ख़रीदने को कहा। डॉक्टर चन्दर सभी सामान ले आया लेकिन कुछ पैसे बच गये। गुरूजी ने डॉक्टर चन्दर को दुबारा भेजा और बचे हुए पैसों को भी खर्च करने का आदेश दिया।

चन्दर के जाने के बाद, सुरेन्द्र ने गुरूजी से पूछा कि उसने उनका पर्स देखा था लेकिन उसमें तो कोई नोट थे ही नहीं, फिर ये सौ-सौ के तीन नोट कहाँ से आ गये...?

गुरूजी बोले---

''बेटा, मेरा पर्स कभी खाली नहीं हो सकता। चाहे मैं इसमें से कितने भी पैसे क्यों न निकाल लूं। लेकिन... मैं ऐसा तब तक नहीं करता, जब तक कि कोई इज़्जत का सवाल न आ जाये।''

''आज मेरी अर्धांगिनी ने जो मेरी शक्ति है, मुझसे कुछ माँगा और मुझे खर्च करने के लिए पैसे चाहिए थे। इसीलिए मैंने अपनी इस आलौकिक शक्ति का प्रयोग किया है। परन्तु

पर्स से निकाले गये या उनसे बचे हुए रुपयों को वापिस पर्स में नहीं डाल सकता। इसीलिए मैंने, चन्दर को बाकी बचे पैसों को भी खर्च करने का आदेश दिया।''

अपने प्रारंभिक जीवन में, गुरु की खोज के लिए मैंने बहुत साल बिताये। कई सन्तों और महात्माओं तथा गुरुजनों के सम्पर्क में रहा। इस दौरान मैंने बहुत से चमत्कार भी देखे जो सिर्फ आम जनता को केवल प्रभावित करने के लिये ही किये जाते हैं। लेकिन जैसा गुरुजी ने किया, वैसा कहीं भी नहीं देखा। वह बिलकुल अलग था जो सिर्फ अपने शिष्यों के सामने, उनको ज्ञान से अवगत कराने के लिए और शायद अपना एक आलौकिक रुप दर्शाने के लिए किया था। इसका डॉक्टर चन्दर को बिलकुल आभास तक नहीं हो सका ।

गुरुजी द्वारा किया गया यह कार्य, दैविक नियमों पर आधारित था। इसके बारे में, मैं पहले कभी नहीं जानता था।

मैं बहुत खुःशं-किस्मत तथा ईश्वर का कृतज्ञ हूँ कि उसने मुझे इनके पवित्र चरणों में रहने का सौभाग्य प्रदान किया। गुरुजी ने मुझे तथा मेरे अन्य गुरु भाईयों को, अनेक दैविक रहस्यों से पर्दा हटा कर एक अछूते आध्यात्मिक जीवन का अनुभव कराया और पूर्णरुप से अपने अधिकार में रखकर, तब से अब तक चला रहे हैं ।---------

आफ़रीन गुरुदेव---- आफ़रीन

94. भक्तों के माँगने पर गुरूजी ने, अपने पर्स से पैसे निकाल कर उन्हें दिये।

गुरूजी स्थान के मुख्य द्वार पर खड़े थे और स्थान पर बैठे लोग, एक-एक करके गुरूजी को अपनी-अपनी समस्या बता रहे थे और गुरूजी उन्हें आशीर्वाद दे रहे थे।

तभी वहाँ एक महिला आई और गुरूजी से कहने लगी कि उसने अभी-अभी शालों का नया कारोबार शुरू किया है उसके व्यापार में **''बरकत''** के लिए उसे एक नोट देने की कृपा करें। गुरूजी ने अपनी पैन्ट की पिछली जेब से पर्स निकाला, खोला तथा उसमें से बीस रुपये का एक नया नोट, आशीर्वाद के साथ उसे दे दिया।

यह देखते ही एक और महिला आई और उसने भी प्रार्थना की, कि उसके बेटे के कारोबार में बढ़ोतरी के लिए उसे भी, एक नोट देने की कृपा करें। गुरूजी ने उसी पर्स में से बीस रुपये का एक और नोट निकाला तथा आशीर्वाद के साथ, उसे भी दे दिया।

बस फिर क्या था, हाल में बैठा हर व्यक्ति, गुरूजी के पास आया और ऐसे ही प्रार्थना करने लगा और गुरूजी उनको बीस-बीस के नये नोट पर्स से निकाल-निकाल कर देते चले गये।

सौभाग्यवश, उस समय मैं गुरूजी के पीछे खड़ा यह सब देख रहा था। उन्होंने करीब अस्सी लोगों को आशीर्वाद दिया और उन सभी को, बीस-बीस के नये नोट पर्स से निकाल-निकाल कर देते चले गये।

जब मैंने सीताराम जी को इस बारे में बताया तो वह बोले, बीस के नोट के साईज़ के हिसाब से अस्सी नोट, गुरूजी के पर्स में आ तो नहीं सकते। जबकि गुरूजी पर्स को भी मोड़कर जेब में रखते हैं। लेकिन यह सत्य है और ये सब मेरी आँखों के सामने हुआ था। मेरे सामने ही उन्होंने पर्स को जेब से निकाला, खोला और उसमें से एक-एक नोट निकालते और देते चले गये। मेरे अनुमान से लगभग अस्सी लोगों को, अनुगृहीत किया था गुरूजी ने।

परन्तु अस्सी नोट पर्स में डालकर, पर्स को मोड़ा नहीं जा सकता, ऐसी मेरी भी धारणा है। लेकिन जब गुरूजी ने अपनी जेब से पर्स निकाला था तो वह मुड़ा हुआ था।

जिज्ञासावश, मैंने जब गुरूजी से पूछा तो उन्होंने मेरी बात को उड़ा दिया और कहा-----

''बेटा, मैं किसी को भी ''ना'' नहीं कह सकता।'' और
''मेरा पर्स भी कभी खाली नहीं रह सकता।''

95. जब गुरूजी का एक हाथ पेट और दूसरा कमर के नीचे रखते ही, पेट दर्द गायब हो गया।

एक बार मैं और मेरे अलावा श्री आर. पी. शर्मा, एफ. सी. शर्मा जी व नदौन के संतोष तथा और भी कई शिष्य, रात को गुड़गाँव स्थान पर रुके। करीब मध्य रात्रि तक हम सब गुरूजी के पवित्र चरणों में उनकी कृपा का आनन्द लेते रहे।

अगले दिन सुबह-सुबह, एफ. सी. शर्माजी मेरे पास आकर बोले कि सन्तोष के पेट में असहनीय दर्द हो रहा है, वह दर्द के कारण कारपेट पर इधर-उधर लोट रहा है। मैं चाहता हूँ कि गुरूजी को इसी वक्त जगा दूं, लेकिन दुविधा में हूँ, कि यदि मैंने ऐसा किया, तो गुरूजी गुस्सा करेंगे।

सन्तोष की ऐसी हालत देख, मैंने गुरूजी के कमरे का दरवाजा खटखटा दिया। गुरूजी बाहर आये और संतोष की हालत सुनकर, साथ वाले छोटे कमरे में चले गये और सन्तोष को देखते ही, अपना एक हाथ उसकी कमर और दूसरा उसके पेट पर रखा और एक मिनट के अन्दर ही संतोष का पेट दर्द गायब हो गया।

वाह गुरूजी.........!!

गुरूजी आप कुछ भी कर सकते हैं। कभी भी कर सकते है। बस चुटकी बजाते ही। इतनी असहनीय दर्द और एक मिनट में ही गायब...

गुरूजी,

आप परम शक्तिशाली परमेश्वर हो।

गुरूजी बोले-----

''बेटा मेरी हथेली में 'ॐ' के अलावा और भी बहुत सी शक्तियाँ हैं। मैं छूकर उन शक्तियों को आदेश देता हूँ और आदेश पाकर, वह शक्तियाँ मेरा काम कर देती हैं।''

''हालाँकि वह शक्तियाँ, भगवान के आदेश और कार्यक्रम के अनुसार ही कार्य करती हैं और व्यक्ति को सुःख या दुःख देती हैं, यह रहस्य सिर्फ भगवान स्वयं या गुरु ही जानते हैं, लेकिन दुःख या सुःख पाने वाला व्यक्ति, इस रहस्य को नहीं जान पाता।''

''दुःख के समय, जब वह व्यक्ति, गुरु से माँग करता है, तो गुरु उसे मॉफ कर देते हैं और दुःख या पीड़ा देने वाली उस शक्ति को आदेश देते हैं कि वह उसे अपनी पकड़ से मुक्त कर दे और दुःख भोगने वाला व्यक्ति, दुःख से मुक्त हो जाता है।''

परन्तु यह तरीका क्या है, बिलकुल अज्ञात है।

गुरूजी ने हम सब पर, दोनों तरफ से आशीर्वादों की वर्षा की-------

- *सन्तोष का पेट दर्द, एक ही मिनट में दूर कर दिया और....*
- *सन्तोष का ही नहीं, इस पृथ्वी पर रहने वाले हर एक प्राणी की पीड़ा का रहस्य और इसके साथ-साथ इसका समाधान भी बता दिया और पूर्णतः स्पष्ट कर दिया कि इसका सम्पूर्ण अधिकार सिर्फ गुरूजी के ही पास है।*

96. जब गुरूजी ने मुझे सिंक की डाई बनाने का डिज़ाईन दिया।

मैंने अपनी फैक्ट्री में, अपने समझ के अनुसार सिंक की एक डाई बनाई। जब उसको हाईड्रॉलिक प्रैस पर लगाकर चलाया तो वह असफल हो गई। मेरे मुख्य टेक्नीशियन ने बहुत कोशिश की, लेकिन सब बेकार......

आख़िर मैंने टेक्नीकल मार्गदर्शन का सहारा लिया। इस समस्या से सम्बन्धित जितना मैं जानता था, किया। लेकिन फिर भी मेरे हाथ दुबारा असफ़लता ही लगी। कई घण्टों की लगातार मेहनत के बाद भी नतीजा शून्य ही था।

तभी फोन की घण्टी बजी और बब्बू ने फोन उठाया। उधर से फोन पर गुरूजी थे। उन्होंने पूछा----

''ओय, की कर रया ए तेरा प्यो?''
(तुम्हारे पापा क्या कर रहे हैं...?)

बब्बू, जो सारी वास्तविकता से पूर्ण परिचित था, बताया कि पापा मशीन पर हैं और एक डाई सही परिणाम नहीं दे रही है। पापा और टेक्नीशियन ने सारी कोशिशें कर ली हैं लेकिन कोई लाभ नहीं हो रहा। डाई के ड्रेनेज बोर्ड वाली साईड में एक डेन्ट आ रहा है। बहुत प्रयत्न करने के बाद भी नतीज़ा, ज़ीरो है। वे बहुत परेशान हैं और सारा काम रुका हुआ है।

गुरूजी बोले----

''उसे कहो, कि बाथरूम में जाये और सिगरेट पिये।''

इतना कह कर गुरूजी ने फोन रख दिया। बब्बू आया और मेरे पूछने पर बोला कि गुरूजी का फोन था। मैंने पूछा, कि तुमने मुझे फोन पर क्यों नही बुलाया...? उसने कहा गुरूजी ने अपने आप फोन बन्द कर दिया। मैंने पूछा कि क्या कह रहे थे गुरूजी...? उसने बताया कि वे आपके लिए पूछ रहे थे तो मैंने डाई की समस्या के बारे में बताया और कहा कि कई घण्टों से पापा, मशीन पर हैं लेकिन डाई ठीक परिणाम नहीं दे रही। इसलिए पापा बहुत परेशान लग रहे हैं। गुरूजी ने आपके लिए संदेश दिया है कि 'आप बाथरूम में जाकर सिगरेट पिओ' और उन्होंने फोन काट दिया। ....इतना कहकर बब्बू हंसने लगा।

मैंने उसे हंसने के लिये डाँटा और कहा कि मुझे एक सिगरेट दो। मैं बाथरूम में गया और सिगरेट पीने लगा। सिगरेट पीते ही मुझे समस्या का समाधान मिल गया।

बाहर आकर मैंने अपने टेक्नीशियन को बुलाया और उसे समझाया कि आधा इन्च मोटी, **2"x8"** की एक लोहे की प्लेट लो और उसे डाई की एक निश्चित जगह पर, वैल्डिंग कर दो।

मेरी इस बात पर वह टैक्नीशियन हंसा और बोला, ''सर, मेरा बीस साल का अनुभव है इस लाईन का, और आप टैक्नोलॉजी का मज़ाक उड़ा रहे हैं और साथ ही मेरा भी।'' जो आप बता रहे हैं, वह इस समस्या का समाधान नहीं है।

मैंने उससे कहा कि मैं इस बारे में कोई बहस नहीं चाहता, तुम जाओ और जैसा मैंने कहा है, वैसा करो। वह अनमने मन से, बब्बू को साथ लेकर मशीन पर चला गया। करीब एक घण्टे बाद वे दोनों वापिस आये तो उन दोनों के चेहरे पर मुस्कान थी।

अद्‌भुत----विस्मित----अविश्वस्नीय।

प्रयोग सफल था......

सिंक का निर्माण कार्य चालू हो गया था......।

वाह... गुरूजी वाह...

टैक्नोलोजी के बादशाह नहीं,
टैक्नोलोजी के खुद़ा हैं..आप ।

कैसे ब्यान करुं मैं अपने भाव..?

गुरूजी, यन्त्रकला के ज्ञाता **(ENGINEER GOD)** *हैं,*
आप बिना डाई या प्रोडक्ट को देखे,
फोन पर अपने शिष्य को आध्यात्म द्वारा
पूरा डिज़ाईन समझा देते हैं।

ओ, मेरे स्वामी,
ओ, मेरे पूज्यनीय,
ओ, मेरे गुरूदेव,
केवल आप ही आप हो।

आप जानते थे कि मैं क्यों असहाय और परेशान था। मेरे पास इस समस्या का कोई समाधान नहीं बचा था और मैं हार चुका था। आप ये सब अच्छी तरह से देख रहे थे और मज़े ले रहे थे परन्तु कुछ भी हो......,

हैं आप कृपासिन्धु-- करूणानिधान----

आप भगवान की तरह आये और मेरी सहायता की। आप पहले तो खुः शी-खुः शी घण्टों, मुझे देखते रहे और जब देखा कि, मैं बहुत परेशान

हो चुका हूँ और थक गया हूँ, तब आपने मुझे नहीं, मेरे बेटे को फोन कर दिया और इस तरह से मुझे आध्यामिकता का एक और अछूता पाठ पढ़ा दिया।

आप सब कुछ जानते हुए भी सामने नहीं आये। आप भगवान की तरह आये और मुझे बचा लिया।

हे मेरे परमेश्वर-------

आपके पास हर समस्या का समाधान है।

97. जब गुरुजी ने गुड़गाँव स्थान के लिए, प्लॉट नम्बर 702, अलॉट कराया।

गुरुजी ने फैसला किया कि वे अपना घर बनायेंगे ताकि वहाँ सेवा कार्य में कोई विध्न न डाल सके। जैसा कि 'बड़े वीरवार' के दिन, शिवपुरी के किराये के मकान की छत पर इन्तज़ार करते हुए भक्तों को लेकर, मकान मालिक ने ऐतराज़ किया था।

गुरुजी ने एक रिहायशी प्लॉट के लिए प्रार्थना-पत्र **(Application)** दिया और उन्हें स्वीकृति-पत्र मिल गया। उन्होंने आर. पी. शर्मा, सूरज शर्मा और एस. के. जैन साहब को, वह स्वीकृति पत्र देकर, रोहतक स्थित हुडा ऑफिस भेजा। साथ ही आदेश भी दिया कि प्लॉट का नम्बर 9 या उसके अंकों का योग 9 होना चाहिए।

जब ऑफिसर ने प्लॉट का नम्बर, अलॉट करने के उपरान्त उन्हें स्वीकृति पत्र लौटाया तो उस पर प्लॉट का नम्बर 9 नहीं बनता था। अतः शर्मा जी ने उससे नम्बर बदलने के लिए प्रार्थना की, परन्तु वह बोला कि अब तो सभी नम्बर अलॉट कर दिये गये हैं अतः वह ऐसा करने में असमर्थ है।

एक बार पुनः प्रार्थना करने पर, वह ऑफिसर बोला, यदि आपसे कोई अपना प्लॉट नम्बर बदलना चाहे, तो उसे कोई आपत्ति नहीं होगी।

शर्माजी तथा अन्य लोग इधर-उधर देखने लगे, कुछ समय इंतजार के बाद, उस ऑफिसर के पास एक सज्जन आये और उससे, अपना प्लॉट नम्बर बदलने की प्रार्थना करने लगे।

उस ऑफिसर ने, सामने खडे शर्माजी की तरफ इशारा करते हुए कहा, यदि उन्हें कोई ऐतराज़ न हो तो वह ऐसा कर सकता है।

उसने शर्माजी से प्रार्थना की और शर्माजी तुरन्त राजी हो गये क्योंकि उसके प्लॉट का नम्बर **702** था, जैसा कि गुरुजी ने आदेश दिया था। प्लाट के नम्बर के अंकों का योग **(7+2)=9** बनता था। अतः यह काम बिना किसी अतिरिक्त मेहनत के हो गया।

यह एक समझने की ही बात है कि गुड़गाँव में बैठे हुए भी, उनकी कृपा और आशीर्वाद से 9 नम्बर प्लॉट का इन्तज़ाम हो गया।

यहाँ यह साबित होता है कि गुरुजी गुड़गाँव बैठे बैठे ही, किसी दूसरे अलॉटी के दिमाग पर नियन्त्रण कर सकते हैं ताकि वह जाकर उस ऑफिसर को अपने प्लॉट का नम्बर बदलने के लिये कहे, जिसके प्लॉट का नम्बर 702 है।

देखने में यह एक साधारण सी बात है। लगता है कि यह काम वैसे ही हो गया। लेकिन मेरे लिये यह महत्वपूर्ण बात है कि गुरुजी ने सभी परिस्थितियों को अपने काबू में करके अपनी पसन्द का नम्बर ले लिया और वो भी बिना हुडा के आफिस में गये हुए। जैसा गुरुजी चाहते थे, वैसा हो गया।

.....साहेब जी आप महान हैं।

98. गुरूजी के पास एक व्यक्ति आया, डॉक्टरों के अनुसार उसकी ज़िन्दगी सिर्फ 15 दिन शेष बची थी।

दिमाग की बीमारी से ग्रस्त एक व्यक्ति, गुरूजी के पास आया। इसे डाक्टरों की तरफ से जवाब मिल चुका था और डॉक्टरों के अनुसार उसकी ज़िन्दगी सिर्फ पन्द्रह दिन ही शेष बची थी। ऐसा सोचते हुए कि अब उसके लिए कोई उम्मीद नहीं बची, एक आखिरी उम्मीद के साथ किसी को लेकर वह, गुरूजी के पास चला आया।

गुरूजी ने, उसके सिर पर हाथ रखा, उसे आशीर्वाद दिया तथा जल के साथ एक लौंग निगलने के लिए दिया और कह दिया----

''जा..., तू ठीक है।''

काम हो गया, वह ठीक हो गया।

दो महीने बाद

वह अपने न्यूरो सर्जन के पास, जिससे वह इलाज करा रहा था, गया तो डॉक्टर उसे ज़िन्दा देखकर एकदम चौंक गया.....!! उसने पूछा, ''कि वह कौन है जिसने ऐसा सम्भव कर दिखाया और वह कहाँ है....? ऐसा मेडिकल सांईस द्वारा तो सम्भव था नहीं... ।।''

तब उस मरीज़ ने उसे, अपने गुड़गाँव जाने तथा गुरूजी द्वारा दिये गये 'लौंग व जल' की बात बताई। डॉक्टर ने उसके दिमाग का सीटी स्कैन किया और यह देखकर हैरान रह गया कि एक लौंग मरीज के दिमाग में चिपका हुआ है।

वह असमंजस की स्थिति **(CONFUSED)** में आ गया। उसने अपने चिकित्सा व्यवसाय **(MEDICAL PRACTICE)** के क्षेत्र में, ऐसे दिमाग में लगा लौंग कभी नहीं देखा था। जैसा कि मरीज़ ने उसे बताया था कि उसने लौंग निगला था। लेकिन वह चलकर दिमाग के उस खराब हिस्से तक पहुँच कर ठीक जगह पर कैसे लग गया...!!

यह अविश्वस्नीय था...........!!

लेकिन ऐसा ही हुआ था।

हे मेरे स्वामी,

आपकी ये अज़ीब महिमा है। परन्तु विशेष बात तो यह है कि वह व्यक्ति ज़िन्दा है... मरा नहीं...।

''क्यों और कैसे'' जैसे अनेकों शब्द, लाईन में लगे, गुरूजी के चरणों की तरफ व्याकुलता से देख रहे हैं, और इसके जवाब की प्रतीक्षा कर रहे हैं. ......हो सकता है, इसका जवाब मिले भी, किसी को...!!

किन्तु यह सब भी गुरूजी की ही इच्छा पर निर्भर करता है।

99. जब गुरूजी, अपने परम शिष्य के साथ, स्कूटर चला कर अलीगढ़ गये।

गुरूजी के परमशिष्य, श्री आर. पी. शर्मा को उनके घर से टेलीग्राम आया कि उनकी माताजी, अंतिम सासें ले रही हैं और उन्हें तुरन्त अलीगढ़ बुलाया है। उसी समय वे टेलीग्राम लेकर गुड़गाँव पहुँचे और उन्होंने वह टेलीग्राम गुरूजी को दिखाया। गुरूजी ने टेलीग्राम लिया और उसे मरोड़कर, शर्माजी के हाथ में देते हुए कहा----

''तुम मेरे स्कूटर की पिछली सीट पर बैठो''

और स्कूटर स्टार्ट करके, वे अलीगढ़ की तरफ चल दिये।

बीच रास्ते में शर्माजी ने कहा, ''गुरूजी, ऐसा लग रहा है कि हमारे पीछे बारिश हो रही है।'' गुरूजी ने कहा----

''चिन्ता की कोई जरूरत नहीं है...''

और वे चलते रहे। उस समय वे अलीगढ़ से करीब़ सौ किलोमीटर की दूरी पर थे सारे रास्ते बारिश गुरूजी से पीछे पच्चीस-तीस फुट की दूरी पर होती रही और तब तक उनके पीछे ही रही, जब तक वे अलीगढ़, शर्माजी के घर तक नहीं पहुँच गये। परन्तु बारिश उन्हें छू नहीं सकी।

गुरूजी ने शर्माजी के घर पहुँचकर देखा कि शर्माजी के सभी सगे-सम्बन्धी, उनके यहाँ एकत्र हो चुके थे और शर्माजी की माताजी को नीचे जमीन पर बीच में लिटा रखा था और उनके सिर के पास शास्त्रों के अनुसार, एक दीपक भी जल रहा था। गाँव की रीति के अनुसार, अन्तिम संस्कार के लिए लकड़ियों का प्रबन्ध भी हो चुका था। शर्माजी की माताजी, अपनी आँखे बन्द किये हुए थी तथा उनकी साँस बहुत कोमलता से, धीरे-धीरे चल रही थी। वह पूर्णतः शान्त अवस्था में पड़ी थी।

गुरूजी ने वहाँ पहुँच कर, शर्माजी की माँ की बाँह पकड़ी और ऊपर उठाते हुए, उन्हें पैरों पर खड़ा कर दिया और लगभग चिल्लाते हुए, ज़ोर से बोले----

''चाची.... चल, दिल्ली चलें।''

(गुरूजी शर्माजी की माँ को, चाची के नाम से ही सम्बोधित करते थे)

शर्माजी के घर पर उपस्थित बहुत से पड़ोसियों तथा रिश्तेदारों ने, गुरूजी के इस कार्य को देखा। लेकिन इस पर किसी ने भी कोई आपत्ति या टिप्पणी नही की। सभी लोग केवल आर. पी. शर्मा और गुरूजी की तरफ देखते रहे। लेकिन सबसे अधिक मज़ेदार बात तो यह थी कि चाची ने दिल्ली पहुँचकर अपनी लम्बी छुट्टियों का आनन्द लिया।

शर्माजी अपनी माताजी को बस द्वारा, दिल्ली ले आये। वे छः महीने तक शर्माजी के पास दिल्ली में रही और फिर गुरूजी की आज्ञा से वापिस अलीगढ़ लौट आईं। अलीगढ़ वापिस लौटने के बाद भी, वह कई वर्षो तक जीवित रही और समय-समय पर गुरूजी के पास उनके दर्शनों के लिए आती रहीं।

अब मैं जबरदस्ती अपनी सांसें रोक कर, इस घटना के बारे में, आरम्भ से अन्त तक, क्रमवार से सोचता हूँ कि :

1. *गुरूजी ने, टेलीग्राम लिया और उसे अपनी हथेली से मरोड़ दिया।*
2. *गुरूजी ने उस दिन के अपने, सारे कार्यक्रम स्थगित कर दिये और स्कूटर पर करीब दो सौ किलोमीटर की कष्टपूर्ण यात्रा की।*
3. *गुरूजी के पीछे, लगभग तीन घण्टे तक लगातार बारिश का होना और उसका गुरूजी को कोई कष्ट न देना।*
4. *गुरूजी का, रिश्तेदारों और अंतिम संस्कार के इन्तज़ाम की परवाह किये बिना, चाची को उठने का आदेश देना।*
5. *शर्माजी का, अपनी माताजी को बस द्वारा, दिल्ली लाने का जोखि़म उठाना।*
6. *आखि़री और आश्चर्यजनक.......!!*

गुरूजी जानते थे कि वे क्या कर रहे हैं और वे अपने आप को प्रमाणित कर सकते हैं ।

आफ़रीन.......गुरूदेव......!!

100. जब गुरूजी ने आधी रात को, मेरे पेट को छुआ और पेट दर्द तुरन्त गायब हो गया।

रात का समय था मैं कुछ अन्य शिष्यों के साथ, गुरूजी के कमरे में उनके पवित्र चरणों में बैठा था। गुरूजी रात के दो बजे तक हम पर आध्यात्मिक-ज्ञान और आशीर्वादों की वर्षा करते रहे।

तदोपरांत उन्होंने खाने का आदेश दिया। जब सब लोग खाना खाकर चल दिये तो एफ. सी. शर्मा जी ने मुझे देखा, तो मेरे पास आकर बोले, क्या बात है...? मैंने उन्हें बताया, कि मेरे पेट में बहुत तेज़ दर्द हो रहा है। उन्होंने फिर पूछा कि क्या दर्द बरदाश्त नहीं हो रहा...? तो मेरी ओर से नकारात्मक उत्तर सुनने के बाद, उन्होंने सलाह दी कि मैं गुरूजी के कमरे का दरवाजा ख़टख़टाऊं और दर्द ठीक करने के लिये प्रार्थना करुं।

मैं गुरूजी के कमरे में पहुँचा तो मैंने देखा, कि गुरूजी के एक हाथ में प्लेट और दूसरे में चम्मच है। जैसे ही उन्होंने मुझे पेट पर अपना हाथ रखे, झुका हुआ देखा तो उन्होंने, अपनी प्लेट एक तरफ रख दी और पूछा,

''.....क्या हुआ पुत?''

तब उन्होंने मुझे अपने दोनो हाथों से पकड़ा और फिर एक हाथ मेरे पेट पर तथा दूसरा मेरी कमर पर रखकर, दबा दिया और मेरा पेट दर्द गायब हो गया। लेकिन उन्होंने मुझे जाने नहीं दिया और बैठने के लिये कहा।

उन्होंने इन्दु को आदेश दिया कि वह एक लिमका ले आये और साथ में माताजी द्वारा बनाया हुआ, चूर्ण भी लाये। उन्होंने वह मुझे पीने के लिये दिया और कहा---

''......काफी दर्द थी ना पुत ?''

मैं वहाँ से दूसरे कमरे में जाकर, आराम की नींद सो गया।

इतना प्यार... !!

इतना अपनापन... !!

इतनी सहानुभूति...!!

मैंने अपने जीवन में पहले कभी महसूस नहीं की थी। बहरहाल, गुरूजी ने जिस प्रकार अपनी प्लेट और चम्मच नीचे रखी और जिस तरह पूर्ण अपनेपन से मेरी तरफ देखा, मैं पूरी ज़िन्दगी उस पल को नहीं भुला सकता।

एक 'सर्वोच्च प्रभुत्व', जैसा कि स्वयं भगवान के पास है, का प्रयोग करते हुए मेरे दर्द को बिना समय लगाये, समाप्त कर दिया।

आफ़रीन..........गुरूजी.....!!

आप महानतम् हैं।

101. गुरूजी समय के अधीन नहीं, अपितु समय उनके अधीन है।

अस्सी के दशक की बात है। गुरूजी गोल मार्किट स्थित आहूजा के फ्लैट में थे, मैं उनके दर्शन करने व आशीर्वाद लेने के लिये, उनके पास पहुँचा।

वहाँ बहुत से भक्तजन व शिष्य भी आये हुए थे। कुछ घण्टों तक का ऐसा आनन्दपूर्ण समय, जिसकी यहाँ व्याख्या करना भी सम्भव नहीं है, हमने अपूर्व ख़ुः शी के साथ, गुरूजी के पवित्र चरणों में बिताया तथा उनके मुख़ारविंद से हमें, बहुत सी आध्यात्मिक ज़ानकारियाँ मिली।

यहाँ मैं अपनी जिन्दगी का एक अभूतपूर्व अनुभव लिख रहा हूँ :-

अचानक गुरूजी ने कहीं और चलने का निर्णय लिया। मैंने कार का दरवाजा खोला और गुरूजी अगली सीट पर बैठ गये। मैं डाईवर की सीट पर बैठ गया और अपनी घड़ी की तरफ देखने लगा जिसमें उस समय दोपहर के 12: 45 बजे थे।

उन्होंने मुझे कार स्टार्ट करने का आदेश दिया। गुरूजी ने मुझसे पूछा कि तुम किसका इन्तजार कर रहे हो, तो मैंने अपनी घडी की तरफ देखा और कहा, ''गुरूजी 12: 45 बजे (पौना समय) हैं और मैं सवाये समय का इन्तज़ार कर रहा हूँ।''
(क्योंकि उन्होंने ही हम सबको यह आदेश दे रखा था कि अपनी यात्रा शुरु करने का समय, हमेशा 'सवाया समय' ही रखना।)

(सवाया का मतलब ज़ीरो से कुछ मिनट ऊपर, जैसे कि 10: 15, 12: 15 या 1: 15 और ज़ीरो से कुछ मिनट नीचे पौना, जैसे 10: 45, 11: 45 या 12: 45 अर्थात 'पौना समय')

फिर जो कुछ गुरूजी ने किया, वह अविश्वस्नीय था। उन्होंने अपनी घड़ी में समय बदल कर 1: 15 कर दिया। उन्होंने मेरी तरफ देखा और कहा-----

''ले राज्जे, अब सवाया टाईम हो गया,
गाड़ी स्टार्ट कर और चल।''

मैंने गुरूजी के आदेश पर वैसा ही किया, परन्तु कार चलाते हुए भी मैं यह सोचता जा रहा था कि गुरूजी हमें तो कहते हैं, कि समय के पाबन्द रहो... लेकिन गुरूजी स्वयं.....?????

गुरूजी ने दुबारा मेरी तरफ देखा और बोले---

''बेटा, मैं....गुरू हूँ।
मैं समय का पाबन्द नहीं, अपितु
समय मेरा पाबन्द है।''

जहाँ तक मुझे याद है, गुरुजी कभी भी अपने ऑफिस के लिये लेट नहीं होते थे। मैं मंत्रमुग्ध हुआ सा रह गया। मैं तो सिर्फ उतना ही सोच सकता हूँ, जितना मेरे बस में हैं।

मेरे विचार से, असंख्य लोगों में एक व्यक्ति हूँ मैं, जिसे मेरे आराध्य देव ने स्वयं चुना है और अपने साथ रखा है, हमेशा के लिए.....।।

और यह हैं...

गुरुजी---

भगवान, एक मनुष्य के रूप में।

- *इतने साहसी,*
- *इतने मन मोहक,*
- *इतने दयालु,*
- *इतना प्यार करने वाले,*
- *इतना ध्यान रखने वाले,*
- *इतने क्षमावान,*
- *इतने सहनशील,*
- *इतने सन्तुष्ट,*
- *जिन्हें न तो भूख़ लगती है*
  और न ही प्यास,
- *हमेशा एक जैसे,*
- *हमेशा भयमुक्त,*
- *चेहरे पर अनगिनत तरह की मुस्कानें लिये हुए,*
- *आंखों से बातें करने वाले,*
- *एक सम्पूर्ण चरित्र निर्माता.......*

ये हैं.... मेरे गुरुजी,

हमेशा-हमेशा मेरे

और तुम्हारे भी ।।

102. गुरूजी के पास लोग विभिन्न कारणों से.... और विभिन्न इच्छाऐं लेकर आते थे

ब्रह्मज्ञान के लिये, वैसे तो गुरूजी के द्वार, हर किसी के लिये खुले थे। लेकिन लोग इनके पास विभिन्न प्रकार की इच्छाऐं और विभिन्न कारणोंवश आते थे जिनमें से-----

- कुछ लोग, संसारिक जरुरतों को, पूरा करने की प्रार्थना करते थे तो
- कुछ, उनसे अपनी बीमारियाँ दूर कर, एक स्वस्थ शरीर के लिये प्रार्थना करते।
- कुछ लोग उनके पास, अपनी मानसिक बीमारी का इलाज़ करवाने के लिये आते थे। तो
- कुछ जिज्ञासु, जिन्हें भगवान के प्रति आस्था होती, वे उनसे आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति के लिये आते थे।
- कुछ लोग उनके पास आते और उनके द्वारा किये जा रहे मुश्किल तथा असम्भव कार्यो को इतनी सहजता से करते देख, उनसे दूर नहीं होना चाहते थे।
- कुछ ऐसे भी आते, जो उनसे बहुत प्यार करने वाले होते, सिर्फ उनको देखने के लिये आते और उनको देख कर ही आनन्दित होते रहते थे और.....
- कुछ ऐसे भी होते, जिन्हें गुरूजी स्वयं प्यार करते थे।

लेकिन मज़े की बात तो ये है, कि गुरूजी से, जो कोई भी मिलता, वह यही कहता हुआ आता था कि ----------

गुरूजी, सिर्फ उसे ही, सबसे ज़्यादा प्यार करते हैं।

कितने ही लोग, बड़े वीरवार के दिन गुरूजी से मिलने आते, जिनकी गिनती करना भी सम्भव नहीं था। करीब दो किलोमीटर लम्बी लाईनें, सुबह से रात के बारह-एक बजे तक लगी रहती थी। करीब़ पचास से साठ हज़ार लोग उनके दर्शन कर, उनसे आशीर्वाद प्राप्त कर पूर्णतयाः सन्तुष्ट होकर अपने घर वापिस जाते थे। हर किसी को ऐसा लगता था जैसे उसका, उनके पास आने का उद्देश्य पूरा हो गया है अर्थातः उसका पूरे महीने का कोटा उसे मिल गया है। वे आराम से खुःशी-खुःशी वापिस, अपने घर लौट जाते थे।

एक प्रबल, अकथनीय, संतोष की झलक उनके चेहरे पर स्पष्ट रुप से देखी जा सकती थी। बड़े वीरवार के बाद, वे बहुत प्रसन्नचित होते तथा उनका व्यवहार भी बहुत खुःशनुमा हो जाता था।

वे दुबारा स्थान पर आने के लिये, अगले बड़े वीरवार की प्रतीक्षा करत, ताकि वे अपने अन्दर, अपनी इस ऊर्जा का दुबारा से संचार कर सकें......।।

गुरुजी का जन्म स्थान

शीतला मंदिर,
दिल्ली गेट,
ग्राम व पोस्ट हरियाना,
ज़िला होशियारपुर (पंजाब)

गुरुजी का मुख्य स्थान

हिमगिरि,
मकान नं0 702, सैक्टर 7,
जय सिनेमा के पीछे,
न्यू रेलवे रोड,
गुड़गाँव। हरियाणा

वर्ष में कुछ महत्वपूर्ण दिनों पर गुरुस्थान जाने के लिए की जानकारी---

प्रत्येक बड़े वीरवार पर सेवा के अलावा गणेश चतुर्थी, महाशिवरात्रि, गुरुपूर्णिमा एवं धनतेरस के लिए :

हिमगिरि पब्लिक स्कूल,
सैक्टर 10-A, पटौदी रोड,
कादीपुर गाँव के पास,
गुड़गाँव। हरियाणा

बंसत-पंचमी व निर्वाण दिवस पर भंडारा

नीलकण्ठ धाम,
नजफ़गढ़-तिलकनगर रोड़
निकट सांई बाबा मंदिर,
नजफ़गढ़,
नई दिल्ली.110043

नोटः -
सभी कार्यक्रमों की तिथियाँ, स्थान के नोटिस बोर्ड तथा गुरुजी की साईट www.gurujiofgurgaon.com पर उपलब्द्ध हैं।

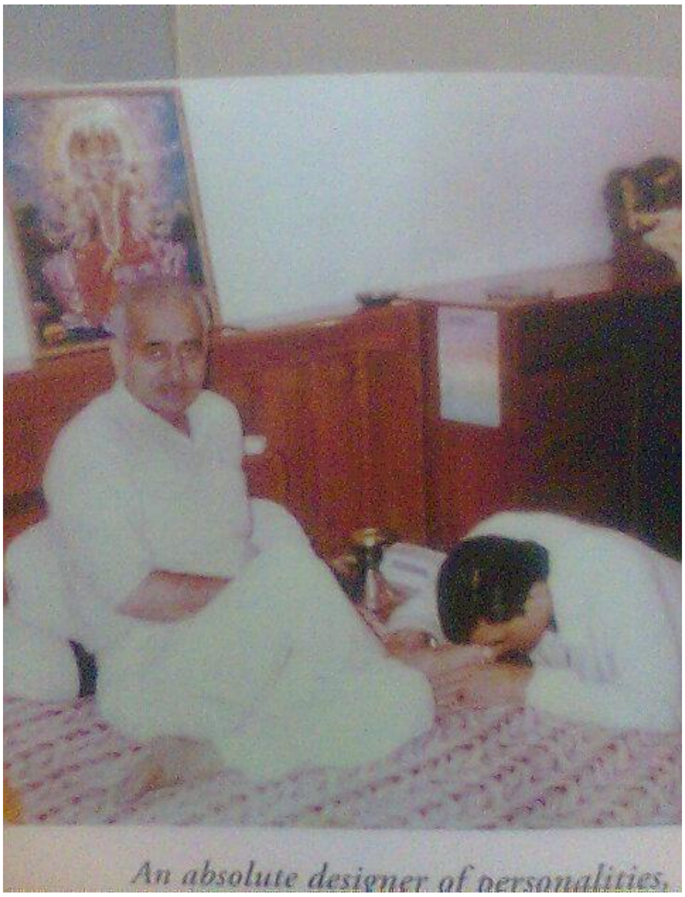

एक सम्पूर्ण चरित्र निर्माता.......

ये हैं.... मेरे गुरूजी,
हमेशा मेरे और तुम्हारे ।।

गुरूजी

गुड़गाँव वाले

अविश्वस्नीय झलकियाँ

भाग-2